प्रकाशक की ओर से—

बड़ी प्रसन्नता है कि आज हम अपने पाठकों को वह पाठ्य सामग्री प्रस्तुत कर रहे हैं, जिसकी आज के युग में नितान्त आवश्यकता थी। आज हम स्वतन्त्र देश के स्वतन्त्र नागरिक हैं और उसी नागरिकता के नाते यह अनिवार्य हो जाता है कि हमारा वाह्य ज्ञान क्षेत्र विस्तृत, और विस्तृत हो; अतः इसकी पूर्ति के लिए हमें ऐसे ग्रन्थों की परमावश्यकता होती है। इसी आवश्यकता का अनुभव करते हुए हम आज यह बहुमूल्य विचार वाटिका—जिसमें लेखक ने अपने हृदय रस की धारा को पूर्ण प्रवाहित किया है—और उसी धारा की आद्रता से अनेक सुगन्धि सम्पन्न पौधे इस में सुपल्लवित हुए हैं जो न केवल सुगन्धि ही प्रदान करते हैं अपितु मानसिक सबलता एवं शारीरिक प्रबलता के भी पोषक हैं—अपने पाठकों के कर कमलों में पहुँचाते हुए पूर्ण उत्फुल्लता का अनुभव कर रहे हैं।

'मनुष्य की भावनायें' किस क्षेत्र में प्रवाहित नहीं होतीं? फिर भावनायें तो स्वतः ही चंचला होती हैं उनकी सभी गति-विधियों—का परिचय आपको प्रस्तुत ग्रन्थ में मिलेगा और ऐसा आपको अनुभव होगा जैसे वास्तव में आप भावनातरणी मे बैठ कर भवाम्बुधि की यात्रा कर रहे हों।

प्रस्तुत पुस्तक बहुत पहिले ही आपके समक्ष प्रस्तुत की जाती किन्तु अभाव एवं महँगाई जो दिन प्रति दिन अपना मुख सुरसा की तरह बढ़ा रहे थे उसी के वात चक्र में पड़ने के कारण इतनी अवधि लगी। फिर भी हमने उसका सामना किया है वह केवल

यही धारणा को बिन्दु रख कर कि पाठकों को मानसिक क्षुधा की परितृप्ति मिले। यद्यपि इसे हम उस सजधज के साथ नहीं प्रकाशित करा सके हैं जैसी चाहिए थी किन्तु इतने पर भी. इसको परिस्थितियों एवं समय को देखते हुए काफी सुसज्जित करने का प्रयास किया गया है। कागज का अभाव व प्रेस की कठिनाइयां एक प्रकाशक की आशाओं में आज कितनी बाधक हैं, यह एक प्रकाशक ही अनुभव कर सकता है। फिर भी आपका 'राजस्थान पुस्तक भण्डार' प्रकाशन मन्दिर—आपको अपनी गांधी ज्ञान माला का प्रथम सुमन गुच्छ देते हुए उन सभी असुविधाओं को विस्मृत कर विशेष हर्षित है और निकट भविष्य में और भी अनेक—मानसिक क्षुधा की परितृप्ति कराने वाले ग्रन्थ देने का प्रयास करता रहेगा। अब की बार तो यही, बस।

प्रकाशकः—

———

दूसरा भावना-तत्व जो मैंने अपने अनुभूति-समृद्ध जीवन में अनुभव किया वह है बाइबिल में वर्णित वह सूत्र-वाक्य कि आदमी केवल रोटी पर ही नहीं जीता। वास्तव में आदमी न जाने काहे-काहे पर जीता है ? और यह भी सत्य है कि जिसने मानव को रचा उसने उसके जीवन को रोचक बनाने के लिये बहुत कुछ रचा है। इसी पुस्तक में आगे एक स्थान पर उद्धृत गैटे का वह उद्धरण आप चाहें तो सदा ही याद कर सकते हैं कि "प्रिय मित्र ! तुम और मैं समान अवस्था में पड़े हुए हैं; पूर्ण सृष्टि का जो अंश तुम समझ सके हो, उतना ही अंश मैं समझ सका हूँ। सम्पूर्ण सृष्टि प्रत्येक मनुष्य की आत्मा के मनो-विनोद के लिये स्थान है।

"निर्मल महा सागर पर चन्द्र किरणों के सौन्दर्य का अनुभव करो, सूर्योदय की निराली छटा का अनुभव करो, गुलाब के पुष्प के सौन्दर्य का संगीत की उत्तेजना का अनुभव करो—काव्य के गौरव का और गृह-सुख के मूल को आंको।

आज जब कि हिन्दी साहित्य भारतीय महादेश का राष्ट्र साहित्य बनने जा रहा है, चिंतन एवं अधिक चिंतन की साहित्य में अधिक अपेक्षा है। भावुकता में हम काफी रम लिये। इस दृष्टि से 'मनुष्य की भावनाएं' काफी चिंतन-उत्तेजक पुस्तक है। दसवें अध्याय के आरम्भ पर जरा दृष्टि डालिये—"किसी एक प्राचीन पुस्तक में एक कहानी है, कि दुनियां के पश्चिम में बहुत दूर एक ग्रेनाइट की चट्टान है जो एक मील ऊंची है, एक

मील चौड़ी और एक मील गहरी है। प्रत्येक सौ वर्ष पश्चात एक छोटी सी चिड़िया उस चट्टान पर आती है और पत्थर पर अपनी चोंच तेज करके चली जाती है। जब इस प्रकार चिड़िया उस चट्टान को घिस देगी तो वह अनन्त काल देश में एक दिन माना जायेगा।" समय जब इतना निरवधि है तो क्या हमसे हर एक भवभूति के इन शब्दों को नहीं दुहरा सकते कि कभी तो हमारे समझने वाला कोई अवश्य पैदा होगा।

बिना घड़ियों का विचार किये हुए हम समय के विषय में नहीं सोच सकते। फिर भी घड़ियों के आविष्कार से पूर्व समय जीवित था। पर उस समय का मानव सभी बातों में अनियमित था? अथवा उसने प्रकृति के क्रोनोमीटर को स्वीकार करके पूर्ण नियमितता प्राप्त करली थी जिसे भुला कर हम हजारों घड़ियों की सहायता से भी अपने जीवन में पूर्ण नियमितता ला सकने में असमर्थ हैं। अन्य मनोरंजक प्रश्नों का प्रस्तुत पुस्तक में रोचक समाधान है।

अन्त में केवल एक और प्रसंग का उद्धरण करके इस प्रस्तावना को सान्त करदूं—जब ईसा ने एक अन्धे भिखारी को छू दिया तो उसने आकाश और पृथ्वी के सौन्दर्य को पहले पहल देखा। जीसस ने जब पुकार कर कहा कि जिसके पास कान हों वह सुने, तो उसका क्या अभिप्राय था? यही कि हमारे कान हों तो हम महान् उपदेशक के शब्दों के गूढ़ अर्थ को सुन सकते हैं। अगर नेत्र हों तो सूर्यास्त एवं पुष्प के सौन्दर्य को निहार सकते

हैं। अगर हाथ हों तो आकाश तक हमारी पहुँच हो सकती है।

इस पुस्तक में इसी प्रकार के असंख्य ज्ञान-कण, यन्त्र, तत्र बिखरे पड़े हैं। जिन्हें चाहे तो पाकर हम अपने नश्वर जीवन को भी कृतकार्य कर सकते हैं। पुस्तक में मनोदेश के रहस्यों को लेकर जीवन का एक सम्पूर्ण दर्शन समझाया है। पढने से ज्ञान की वृद्धि ही न होगी आत्मा को सुख का भी अनुभव होगा। क्या इतनी प्रस्तावना प्रिय पाठक! पर्याप्त नहीं है कि आप मूल पुस्तक आरंभ करने की उत्सुकता को अब और देर तक रोके रखें?

देव नागरी कालेज मेरठ
कार्तिकी पूर्णिमा : सवत २००५ } लक्ष्मण त्रिपाठी

मनुष्य की भावनाएं

प्रथम अध्याय

गति

सोकर उठते समय, यह कहा जाता है कि उठकर मनुष्य में कुछ गति का सञ्चार होता है। प्रथम हम हिलते हैं फिर हमें प्रतीत होता है कि हम निद्रावस्था को छोड़ रहे हैं। शारीरिक गति प्रथम और मानसिक गति उसके पश्चात् होती है।

प्रत्येक कार्य के पूर्व गति का सञ्चार होता है। विना गति के हमें आज न यह पृथ्वी दिखलाई पड़ती और न यह सृष्टि और न यह जीव। यदि महासागर मे गति न हो तो इस धरातल पर मनुष्य स्वस्थ नहीं रह सकते। यदि बीज में गति न होती, तो घास कदापि न उग सकती। यदि मनुष्य के मस्तिष्क मे गति न होती, तो आज इतिहास का कहीं नाम भी न होता।

मूसा (Moses) द्वारा कही गई सृष्टि की अनेक प्रसिद्ध कहानियों में से एक उस अमर ग्रन्थ के आरम्भ में कही गई है। "आरम्भ मे परमात्मा ने—" और फिर जब सृष्टि का ध्यान आता है, तो वह लिखते हैं "ईश्वर की आत्मा जल की सतह पर हिली।"

ओर एक बड़ी लम्बी यात्रा कर रही है। कोई भी वस्तु स्थिर नहीं है। हम प्रति दिन जागते हैं और अपनी खिड़की में से हे कर देखते हैं और हम क्या देखते हैं? यही कि प्रत्येक वस्तु वैसी ही है जैसी कि सोते समय रात्रि को पहिले दिन थी। एक पता गिर पड़ा हो या सामने वाले मकान की खिड़की बन्द हो अन्यथा प्रत्येक वस्तु बिल्कुल वही है जहां पिछली राति को थी। परन्तु वास्तव में प्रत्येक वस्तु ने इतनी यात्रा करली है जितनी कि कोई वायुयान या तेज गाड़ी भी उतने समय में न कर सकती। हां, यही नहीं कि केवल वृक्षों, पर्वतों या मकानों ने ही यात्रा की हो परन्तु वह हवा भी जिसे तुम सांस द्वारा अन्दर ले जाते हो, अपनी जगह से हट गई है। जैसे कोई चिड़िया खेतों में होकर चली जाती है उसी प्रकार तुम्हारे प्रान्त की जलवायु भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर आ गई है।

इस गति का भेद समझने की कोशिश करें

यह क्या वस्तु है जिसे हम 'गति' कहते हैं। क्या हम अपनी आंखें बन्द करके और हाथ जोड़ कर इस प्रश्न पर विचार करें। एक वस्तु यहां है; और फिर वहां। एक वस्तु पतझड़ की ऋतु में लाल थी परन्तु अब मृत्यु की तरह डरावना काला रङ्ग धारण कर लिया है। एक वस्तु इतनी छोटी थी कि वह एक छोटे से बच्चे की हथेली पर अत्यन्त सुगमता से आ सकती थी और अब उसका एक वट-वृक्ष बन गया है, जिसकी विशाल

शाखाओं में पक्षी भूल रहे हैं। एक वस्तु अत्यन्त मनोहर तथा स्वादिष्ट थी–अब वही वस्तु मुरझा गई है, उसी वस्तु मे दुर्गन्ध आती है और उसको देखने को हृदय नहीं चाहता। इस घोंसले को ही देखो—एक छोटा सा सफेद अङ्गुली के नाखून के बराबर अण्डा एक सड़क पर पड़े हुए पत्थर की तरह शान्त था; अब उसकी एक ऐसी वस्तु बन गई जो हवा में उड़ती है, जो गान करती है, जो घोंसला बनाती है, जो दुःख और सुख भली प्रकार समझने की योग्यता रखती है।

एक ऐसी गुप्त वस्तु का अर्थ समझना हमारे लिये कहां तक सम्भव है ?

हम अत्यन्त साधारणतया यह विषय आरम्भ करते हैं। आप एक पुस्तक का अध्ययन करना या क्रिकेट खेलना चाहते हैं। आप क्या करते हैं—एक पुस्तक अलमारी में से ले लेते हैं या खेलने के लिए बल्ला उठा लेते हैं। आपने इन वस्तुओं को अपने नियमित स्थानों से हटा दिया है। आपने इन्हें क्यों वहां से अलग किया है ? क्यों कि आप पढ़ना चाहते थे या खेलना। प्रथम इच्छा उत्पन्न हुई और इसके पश्चात् आपके हाथों ने आपकी इच्छा का आज्ञा पालन किया। तो हम कह सकते हैं कि गति इच्छा का अमल है। हमारे हाथों में गति का सञ्चार होता है इसलिये कि हमारी इच्छा है कि वे हिलें।

परन्तु बहुत सी ऐसी गति भी हैं, कुछ हमारे शरीर में भी हैं, जिनको हम जानकर नहीं चाहते। हम सांस लेना नहीं

चाहते, हम अपना खाना पचाना नहीं चाहते, हम लम्बे और स्वस्थ होना नहीं चाहते। यह स्पष्ट है कि ऐसी बहुत सी गति हैं, जो इच्छा के ऊपर निर्भर नहीं हैं। ज्वार भाटा की गति को देखो, वायु की गति को देखो, तारों की गति को देखो और एटम में (Atom) में इलेक्ट्रौन (Electron) की गति पर विचार करो। इन वस्तुओं की गति पर हम क्या कह सकते है।

प्राचीन विचार

ऐसी गति पर विचार करने के पूर्व हमको प्राचीन विचारों पर ध्यान देना चाहिये। एक दफ़ा ईथर (Ether) के अतिरिक्त कुछ भी नहीं थी—था कोई ऐसी वस्तु थी जिससे सब वस्तुएँ बनी हैं—न सूर्य्य थे न चन्द्र, न तारे थे न प्राणी और न गति। प्रत्येक स्थान पर शान्ति और अन्धकार था। इसके पश्चात गति का आगमन हुआ। ईथर (Ether) ऊपर को उड़ा दिया गया। और यह सृष्टि बनी। सूर्य्य, चन्द्रमा और तारे दिखाई देने लगे। अन्धकार मे प्रकाश हुआ और इस खलबली के पश्चात् शान्ति स्थापित हुई।

अब हमको हर एक मनुष्य के सन्देह को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये। क्या यह सर्व प्रथम गति का सञ्चार इच्छा के अनुसार हुआ या अपने ही आप ऐसा हुआ ? यह किसी को ज्ञात नहीं। क्या इस गति से इच्छा का उद्धार हुआ

या इच्छा से गति का सञ्चार हुआ ? क्या पहिले दिमाग की उत्पत्ति हुई या वस्तु की।

यह ध्यान करने की बात है कि एक पेच की गति में और हैमलेट (Hamlet) लिखते समय शेक्सपियर (Shakespeare) के हाथ की गति मे कुछ अन्तर है। एक गति का फल न्यून है: दूसरी गति से मस्तिष्क का कार्य स्पष्ट होता है। क्या सृष्टि कुछ नहीं है ? क्या यह वायु से हिलाए हुए Scarecrow की गति से कुछ भी अधिक नहीं है या यह (Hamlet) हैमलेट ड्रोम से भी अधिक आश्चर्यजनक, और अधिक नियमित और पूर्ण रूप में है ?

एक दृढ़ इच्छा से विशाल कार्य्य-सिद्धि

अधिकतर मनुष्यों ने विचारने के पश्चात् यह निश्चित किया है कि सर्व प्रथम गति इच्छा के अनुसार ही हुई थी। साथ ही साथ उनका यह भी विचार है कि यदि पहिले इच्छा न होती तो हम भी इच्छा न रख सकते।

इस मत के अनुगामियों का कहना है कि मनुष्य ने जो यह उन्नति की है वह एक विशाल कार्य-सिद्धि के हेतु अपनी इच्छानुसार की है इस कार्य को हम केवल स्वप्नवत् ही समझते हैं। उनका कहना है कि किसी कार्य के होने से पूर्व यह अत्यन्त आवश्यक है कि उसके कराने के लिए इच्छा व साहस की आवश्यकता है। इसका तात्पर्य यह है कि एक बीज का वृक्ष होने के पूर्व, यह आवश्यकीय है कि एक ऐसी शक्ति हो जो बीज को

एक वृक्ष में परिवर्त्तन कर सके। सर्व प्रथम परमात्मा था और परमात्मा से ही गति की उत्पत्ति हुई।

इस शब्द की विशेषता की ओर तनिक दृष्टि डालिये प्रत्येक वस्तु की जो हम जानते हैं, उत्पत्ति प्रथम गति से ही हुई है। क्योंकि इस प्रथम गति ने वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर नहीं बदला किन्तु इस गति के द्वारा वस्तुओं की उत्पत्ति हुई। इस गति में आगे बढाने की अथवा मानुषिक उन्नति की योग्यता थी न कि रुक जाने की। इस गति के सञ्चार से न केवल सूर्य और अन्य तारों की उत्पत्ति ही हुई वरना परमात्मा को इच्छा के अनुसार सूर्य को चमकने और अन्य तारों को प्राण डालने की योग्यता भी आगई। सृष्टि कई लगातार गति का फल नहीं है परन्तु केवल एक गति का, जिसमें उत्पत्ति करने की योग्यता है और जो लगातार चला जाता है। हम कह सकते हैं कि इलैक्ट्रौन, (Electrons) जो प्रत्येक एटम (Atom) में जुगनू को तरह चमकते रहते हैं, परमात्मा की इच्छा की प्रथम गति के स्मारक रूप है। सम्पूर्ण सृष्टि अब भी सृष्टिकर्ता के गुणों को प्रकाशित कर रही है। एक समय मनुष्य विकास के विषय में बात करते थे अब उत्पत्तिकारक विकास के विषय में बात करते है। यह गति नहीं है जिससे उनको आश्चर्य होता है परन्तु गति का स्वभाव। यह सृष्टि कोई एक पहाडी पर से लुड़कता हुआ पत्थर का टुकडा नहीं है परन्तु एक तीर जो कि एक बहुत दूर निशाने पर मारा गया है।

गति पर विचारने से, प्रत्येक धातु और तख्ता, प्रत्येक पत्थर के टुकड़े और पत्ते मिट्टी के प्रत्येक कण और जल के प्रत्येक बिन्दु को यह ख्याल करने से कि वे सदैव हिलते रहते हैं, हमको "शान्त" शब्द पर आश्चर्य होती है।

इस सृष्टि में केवल एक शान्ति का स्थान है, जहां कभी शान्ति नहीं होती। वह है मनुष्य की आत्मा।

द्वितीय अध्याय

न्याय

प्राचीन काल में राजा अपने महल से शहर के फाटक को अथवा अपने मुख्य मन्दिर को जाया करते थे और वहां पर अपनी प्रजा का न्याय करते थे। बडे २ गिरजों के दरवाजों पर शेर की तस्वीरें खुदी रहती थी जिससे मालूम होता था कि बादशाह का क़ानून अटल और न्यायकारी था।

परन्तु मन्दिरों के बनने और बादशाहों के राज करने के पूर्व भी जङ्गली मनुष्यों के हृदय में न्याय का विचार शेर की तरह था। वे भयानक थे, अज्ञान थे और क्रूर थे। उन्हें भी अपना पेट भरने के लिये काम करना पडता था और इसके लिये वे कुदरत की सम्पूर्ण शक्तियों से लड़ने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। फिर भी वे कुछ कानूनों का ध्यान रखते थे। वे किसी कार्य्य को ठीक प्रकार से करने और गलत प्रकार से

करने में अन्तर भली भांति जानते थे। वे उस शक्ति को मानते थे, जो कि उनके दृष्टिकोण से परे थी। जब कभी वे कोई अनुचित कार्य करते थे। तो उन्हें प्रतीत होता था कि वह शक्ति एक गरजता हुआ शेर है।

ये पुरुष न्याय को बहुत भयानक रूप में देखते थे। वे वहमी थे। यदि वे ठीक काम करते थे, तो उन्हें उन्नति की आशा थी यदि उन्होंने कोई ग़लती की, तो वे समझते थे कि कोई उन्हें काट खाएगा। वे प्रत्येक कार्य उचित रूप से इसीलिये करते थे कि उन्हे अनुचित कार्य के फल से डर लगता था। लेकिन जब यह भय कुछ कुछ दूर होने लगा, जब उन्हे यह मालूम होने लगा कि कभी कभी अनुचित कार्य भी बिना किसी दुख के उठाए हुए किया जा सकता है, तब भी वे अपने दिल में ठीक और ग़लत काम का अनुभव करते थे और यह विश्वास रखते थे कि तमाम मनुष्य के कानूनों के ऊपर एक अटल न्याय भी है।

प्लेटो (Plato) का मत है कि यद्यपि एक मनुष्य को न्याय के हेतु कुछ कष्ट व बुराई सहनी पड़े परन्तु अन्याय करने से वह और बड़े दुख का भागी होगा चाहे उसे अन्याय के द्वारा उन्नति ही हो।

यह विश्वास अब मनुष्य के सामाजिक जीवन का ध्येय होगया है। इसको यदि "सभ्यता की आत्मा" कहें तो अत्युक्ति न होगी। डेनियलवैब्सटर (Daniel Webster) ने कहा था "इस पृथ्वी पर न्याय ही मनुष्य का मुख्य ध्येय है"

न्याय से हमारा क्या तात्पर्य है ? इसका अर्थ कानून नहीं है। कानून एक ऐसी वस्तु है जिसमे परिवर्त्तन होते रहते हैं। कानून के एक Dandy के बराबर कोट हैं और कानून फैशनानुसार बदलता रहता है। क्रौमवैल (Cromwell) समय के और कुछ समय और उसके पश्चात् भी एक मनुष्य को एक शिलिंग चुराने के अपराध मे फांसी दी जा सकती थी। डौर्सेटशाइर (Dorsetshire) मे एक पुल है, जो आजकल मोटर लारी से पार किया जाता है—वहां पर यह लिखा हुआ है कि यदि कोई मनुष्य इमारत को खराब करेगा तो उसे आजीवन कारावास दिया जावेगा। एक समय मे "जैदवर्ग जस्टिस" (Jedburgh justice) था जिसका अर्थ यह था कि "पहिले फांसी दे दो और पीछे उसका अपराध साबित करो।" अभी तो एक सौ वर्ष भी नहीं हुए जबकि लन्दन के चिमनी घरों मे बच्चों का दम घुट जाता था, वे बेहोश गिर पडते थे और कपड़े की मिलों के फर्श पर गिरते हुए मर जाते थे।

उस समय के कानून में इनको कोई अपराध नही समझा जाता था। एक छोटी कांपती हुई लड़की को टेढी चिमनी के ऊपर भेजने के अपराध में किसी भी मनुष्य पर जुल्म नहीं लगाया जा सकता था। यदि कोई काम करने वाला लड़का चरखे घर के नीचे गिरकर मर जाता तो किसी भी बुनने वाले को हत्या के अपराध में नहीं पकडा जा सकता था। आजकल ऐसी भयानक घटनाओं का होना असम्भव है। क्यों ? चूंकि

कानून बदल गया है। परन्तु कानून क्यों बदला गया है ? मनुष्य के प्राचीन कर्तव्यों पर प्रकाश डाल कर इस प्रश्न का उत्तर दिया जा सकता है। इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर यही है कि न्याय ने यह आवश्यक समझा कि कानून बदल दिये जावें।

न्याय का विचार कैसे उत्पन्न हुआ ?

अब, हम भली प्रकार जानते हैं कि ऐसी कोई न्याय की मूर्ति नहीं थी, जिसने अपना मुंह खोल कर मनुष्यों से कहा कि ये कानून बदले जाने चाहियें न कभी पार्लियामेण्ट की दीवालों पर कुछ ऐसा लिखा हुआ पाया गया और न कभी ऐसी कोई आकाशवाणी हुई जिसमे ये दुष्ट कानून बदलने की आज्ञा दी गई हो। तो फिर न्याय ने किस प्रकार अपनी इच्छा प्रकट की ?

न्याय का विचार मानुषिक मस्तिष्क की सृष्टि है। यह प्रकृति में निवास नहीं करता। भेड़िया और मेमने में, लोमड़ी और चिड़िया में, बाज और स्पैरो में कोई न्याय नहीं है। पैरीकिल्स (Pericles) जैसे बड़े आदमी और बहुत से छोटे मनुष्यों ने यहां तक कहा है कि बड़े राष्ट्र और छोटे राष्ट्र में भी न्याय नहीं हो सकता। किसी ने कहा है "शक्तिवान जो कर सकते हैं, करते हैं और निर्बल सहते हैं, जो उन्हें सहना चाहिये और सहना पड़ता है।" फिर भी दुनियां में न्याय का विचार है। यह विचार न तो मनुष्य के मस्तिष्क में जल कर खाक हो गया और न उसकी आत्मा में से तलवार से काट लिया गया।

न्याय ही ने दुष्टों को पराजित किया है और इसी ने बुरे कार्यों को आगे बढने से रोका है। न्याय ही मनुष्य का इस जगत में उद्देश्य होना चाहिये यह किस तरह हुआ ?

मनुष्य की आत्मा अप्राकृतिक वस्तु भी प्राप्त कर सकती है।

यह न्याय ही के कारण है, जिसका कि मनुष्य के दिमाग़ में सदैव विचार होता ही रहता है, कि हमारा दिल अन्याय करने से रोकता है। हमें बहुधा यह शब्द सुन पड़ते हैं "यह चाहे कानून ही क्यों न हो परन्तु न्याय नहीं है।" मनुष्य बुरे कानूनों के स्थान में अच्छे कानून बनाते हैं और न्याय यह नहीं कहता कि "अच्छा किया" परन्तु यह कि "और अच्छा करो"

न्याय हमारे कानूनों से कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकता। यह मनुष्य की मानसिक शक्ति ही है, जो आगे आने वाली घटनाओं को सन्मुख रखते हुए क्षेत्र में पदार्पण करती है। न्याय ही हमें बतलाता है कि हमारा ध्येय बहुत ऊंचा है। न्याय के इस विचार के लिए ही मनुष्य का निर्माण हुआ है। मनुष्य की आत्मा एक निर्जीव देह पर प्रभाव डालकर एक अप्राकृतिक वस्तु तैयार कर देती है।

न्याय न्यायाधीश की तस्वीर से भी नहीं प्रकट होता है। न्यायाधीश के रंगीले वस्त्रों से केवल कानून ही प्रकट होता है। न्यायाधीश का कर्तव्य केवल इतना ही है कि वह अपराधी को

कानून के अनुसार दण्ड दे अथवा छोड़ दे न कि वह दोनों ओर के वकीलों के बहकाने में आजावे। परन्तु हम सब यह जानते हैं कि कानून चाहे कितना ही न्यायकारी क्यों न हो वास्तव मे न्याय नहीं है।

शेक्सपीयर (Shakespeare) ने स्वयं कहा है "अपने कान खोलो और देखो कि अपराधी कहां तक न्याय के आधीन है। कौन सा तो अपराधी है और क्या न्याय है ?"

एक अंग्रेज उपदेशक जॉन ब्रेडफोर्ड (John Bradford) ने एक मनुष्य को फांसी पर लटकाते हुए देख कर कहा "यह केवल परमात्मा की ही कृपा है कि आज ब्रैडफोर्ड जाता है।" न्याय का चिन्ह एक तराजू है। ऐसा कौनसा मनुष्य है, जो उस तराजू की डण्डी को बिल्कुल सीधा रख सके।

मनुष्य के इतिहास में एक बहुत आकर्षक घटना

पृथ्वी पर कभी भी वास्तविक न्याय का उदाहरण नहीं दिखलाई पड़ सकता। परमात्मा का जिससे कोई भी बात गुप्त नहीं रह सकती, न्याय मानुषिक न्याय से बहुत ऊंचे दर्जे का है। मनुष्य के इतिहास के आरम्भ में कहा गया है कि परमात्मा की दृष्टि में किसी भी मनुष्य पर न्याय नहीं हो सकता। बहुत से कवि इसी विचार के आधार पर दया को न्याय के साथ मिला देते हैं।

इस जगत का न्याय चाहे अधूरा ही हो, फिर भी यह मनुष्य की एक विशाल तथा अपूर्व विजय है। यह कहना भी अत्युक्ति न होगी कि न्याय के लिए हार्दिक इच्छा होने के कारण ही मनुष्य इतनी सामाजिक तथा धार्मिक उन्नति कर सका है। दुःख मे भी मनुष्य जाति ने न्याय को सर्वोच्च माना और दासता की बेड़ियों मे फंसे हुए राष्ट्र ने भी न्याय की ही तपस्या की। यह केवल दास की न्याय के लिए प्रार्थना ही है जिसके द्वारा दुष्ट एवं दुराचारी राज करने वालों को आपत्ति का सामना करना पड़ता है। मनुष्य के इतिहास में न्याय की स्वतंत्रता के लिए जो पुकार हुई, वह अद्वितीय है।

राजाओं ने अनेक प्रचारकों को, जिन्होंने न्याय का उपदेश दिया, नष्ट कर दिया। और उन उपदेशकों के पुजारियों ने अनेक बादशाहों को ही सदैव के लिए इस जगत से उसी समय उठा दिया। हमारे इतिहास मे सब से आश्चर्यजनक तथा शानदार युद्ध वे हैं जिनमे साधारण मनुष्यों ने न्यायके वास्ते शासनकर्ताओं से की। प्रत्येक दुराचारी शासनकर्ता ने सदैव यही कहा कि "मै ही कानून हूँ, मै ही न्याय हूँ और मैं ही शासक हूँ, परन्तु प्रजा ने उनको सदा यही उत्तर दिया। "नहीं; तुम भी केवल एक मनुष्य हो। मानुषिक न्याय के ऊपर उस सर्वशक्तिमान का भी न्याय है जिसका हम सबको आदर करना चाहिए।" क्या मनुष्य जाति अबतक यही प्रार्थना नहीं करती रही कि "जो इच्छा परमात्मा की स्वर्ग मे है, वही इस धरातल पर करेंगे। "

इन झगड़ों में मनुष्य जाति को उत्तेजना देने वाला विचार अत्यन्त उत्तम और उच्च था परन्तु उनके हृदयों में न्याय का विचार कुछ ठीक न था। अपनी इच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत करना और अपने कानून बनाना और शारीरिक तथा मानसिक स्वतन्त्रता प्राप्त करना वे अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझते थे। ये सब बातें हम आधुनिक काल में कल्पना ही कर लेते हैं। एक अंग्रेज व्यक्ति अपने को दासता की अवस्था में नहीं समझ सकता। यह आवश्यकीय नहीं कि जो कुछ कहा जावे वह करें या जैसे बादशाह आज्ञा दे उसी के अनुसार सोचे तथा विचार करे। जो कुछ हमारे पूर्वज लड़कर तथा जीवन बलिदान करके हमारे लिए छोड़ गये हैं, उसका हम भोग कर रहे हैं।

न्याय की यात्रा

तो फिर क्या न्याय अपनी अन्तिम सीढ़ी तक पहुंच गया? नहीं, कदापि नहीं। कदापि नहीं। अभी तो उसने वह अपने ध्येय की आरम्भिक सीढियों को ही समाप्त नहीं कर पाया।

कानून पढने से ज्ञात होता है कि मनुष्य को अपने किये का फल मिलता है "जैसा करोगे, वैसा भरोगे" वाली कहावत चरितार्थ होती है। यदि एक चोर हमारे घर में प्रवेश करता है तो वह कानून पर आक्षेप करने का अपराधी है क्योंकि वह उन वस्तुओं को जिनका उपयोग करना हमारा अधिकार है, अपने लिये लेजाता है। परन्तु यदि एक भूखा मनुष्य हमारी

खिडकी में झांके या एक दुःख से मरा हुआ बच्चा हमारे दरवाजे खडा हो, तो हमारा हृदय क्या कहता है? क्या यह न्याय है, क्या यह उचित है कि हम खाते रहे तथा आनन्द से जीवन व्यतीत करे, जब कि एक भूखा प्राणी द्वार पर खडा हो? नहीं, क्या यह सम्भव है कि हम अपने हृदय में बिना अपराध स्वीकार किये हुये ऐसा कर सके?

फिर भी यह अपराध हमारे अन्तःकरण पर क्यों निर्भर है? हम भोजन करते समय किसी कानून पर आक्षेप नहीं कर रहे। भोजन पर हमारा अधिकार है क्योंकि भोजन हमारा है। हमने इस भोजन को प्राप्त करने के लिये परिश्रम किया है और उसके लिए धन व्यय किया है और साथ ही साथ भोजन हमारी आरोग्यता के लिये अत्यन्त आवश्यकीय है। सम्भव है कि भूखा आदमी बदमाश हो या दुष्ट हो और भूखा बालक किसी दुराचारी स्त्री की पुत्री हो। ऐसे बालक के दुख को यदि हम दूर करते है तो उसकी माता की और भी अधिक दुराचारिणी हो जाने की सम्भावना है। अर्थात्, फिर भी अपराध रहता ही है। अन्त करण की पुकार शास्त्रार्थ से नहीं मिट सकती। 'अनेक प्राणिय की, जो बाहर धूप और वर्षा मे घूमते रहते हैं आवाज हम तक नहीं पहुंच सकती परन्तु अन्दर से आत्मा यही कहती है, "न्याय करो, न्याय करो॥"

यह जीवन एक विशाल घटना क्यों कर है?

मनुष्य के साथ २ उसके गुणों में भी उन्नति होती जाती

है, इसी प्रकार मनुष्य जाति कभी अपने उद्देश्य पूर्ण नहीं कर पाती। हम केवल अपने ध्येय की सीढ़ियों को ही पार कर सकते है, अन्तिम सीढ़ी तक तो पहुँच ही नहीं पाते। इसके फल स्वरूप हमारा ध्येय हम से बहुत दूर होता जाता है। इन्हीं विचारों से भरे होने के कारण मनुष्य का जीवन एक विशाल तथा विचित्र घटना है। एक ग़लती पर विजय प्राप्त करना तथा एक सही कार्य्य पर अधिकार होना कोई एक शासन कर्ता का पद तो पाना है नहीं परन्तु वह मनुष्य केवल एक यात्री है जिसे अभ एक यथेष्ट लम्बी यात्रा करनी शेष है।

किसी अधिकार का प्राप्त करना सहज कार्य नहीं है किन्तु अनेक आपत्तियों का सामना करना पडता है। यह उचित है कि मनुष्य को स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये परन्तु वही स्वतन्त्रता अन्याय का रूप धारण कर लेती है यदि मनुष्य उसका दुरुपयोग करता है अथवा केवल अपनी ही इच्छाओं की पूर्ति करने के काम में लाता है। यह सही है कि पुरुषों और स्त्रियों को यह निश्चय करने का अधिकार होना चाहिये कि उनके लिए कौन कानून बनाएगा परन्तु यह अधिकार केवल उनकी अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये ही नही है। न्याय कहता है कि मनुष्य की सम्पूर्ण शक्ति जिम्मेदारी पर निर्भर है। एक बलवान् पुरुष दूसरों मे भी शक्ति डाल सकता है—एक स्वतन्त्र मनुष्य और मनुष्यों को भी परतन्त्रता की बेड़ियों से छुटा सकता है और एक बुद्धिमान मनुष्य दूसरे मनुष्यों को भी बुद्धिमान बना

सकता है। कानून कहता है कि प्रत्येक मनुष्य को धन और विद्या प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार है। न्याय कहता है कि प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि वह समझे कि उस धन और विद्या में अन्य मनुष्यों का भी भाग है। गुण सेवा का द्वार है और मनुष्य के परिश्रम का फल उस पुस्तक का प्रथम पृष्ठ है, जो कभी भी समाप्त नहीं होती।

हम अपने कार्यों की तरह अपने विचारों में भी अन्यायी हो सकते हैं।

वास्तविक न्याय तो अभी आने को है। यदि हम यह सोचे कि जैसे मनुष्य अपने व्यवहार मे न्याय का ध्यान नहीं रखता उसी प्रकार वह अपने विचारों मे भी अन्यायी हो सकता है, तो हम अपनी यात्रा की एक सीढी और पार कर लेगे। केवल अपने इष्ट मित्रों तथा सम्बन्धियों और अपने भवदीय मनुष्यों के साथ ही न्याय करना यथेष्ट नहीं है-

पूर्ण न्याय इस जगत मे न केवल शान्ति ही स्थापित कर सकेगा किन्तु राष्ट्रो मे भी भ्रातृ भाव का सञ्चार होने लगेगा न्याय के द्वारा मनुष्यों के हृदय मे से ईर्षा, द्वेष तथा घृणा के भाव सदा के लिये जाते रहेगे और एक मनुष्य दूसरे की सहायता करने को सदैव तत्पर रहेगा। अधिक क्या कहें, यह पृथ्वी नहीं रहेगी परन्तु स्वर्ग के सुख का अनुभव होने लगेगा। और फिर भी प्रत्येक मनुष्य अपने हृदय में सोचेगा कि पवित्र न्याय

अभी बहुत दूर है और वह केवल परमात्मा के अन्तःकरण में ही प्राप्त हो सकेगा।

तृतीय अध्याय

साहस

मनुष्य जाति के विषय में उपयोग होने वाले शब्दों के बहुधा अनेक अर्थ होते हैं। साहस भी उन्हीं शब्दों मे से एक है, जिनके अर्थ बहुत ही अधिक संख्या में पाये जाते हैं।

इस शब्द का उचित उपयोग करना कोई सहज कार्य नहीं है। बहुत से मनुष्य युद्ध में भयभीत होने के कारण मृत्यु की भेंट होगये यद्यपि वह अपने जीवन काल में अत्यन्त साहसी माने जाते थे। बहुत से मनुष्य जो लोभ आदि दुष्ट वासनाओं का सामना करने पर भी कभी पीछे न हटे, जिन्होंने अपना दिल पवित्र और अपनी आत्मा को सदैव शुद्ध रक्खा, जो सज्जन पुरुष थे और प्रत्येक प्राणी से भ्रातृभाव रखते थे, जिन्होंने परोपकार के हेतु अपना सबकुछ बलिदान कर दिया, उनके लिए भी युद्ध में अधिक देर तक ठहरना असम्भव होगया और अन्त में मृत्यु के ग्रास हुए।

परन्तु एक ऐसे पुरुष को डरपोक कहना कुछ अत्युक्ति ही होगी। यह शब्द हमारी जिह्वा पर बड़ी सुगमता से आजाता है। उस परब्रह्म परमात्मा की दृष्टि में कम से कम वह डरपोक नहीं

था। उसका केवल एक अपराध था कि एक असाधारण अवस्था में वह अपने शरीर पर अधिकार अच्छी तरह न कर सका।

इससे हमें ज्ञात होता है कि यह शब्द विचारणीय है। य शब्द अवश्य एक साधारण मक्खी से बडा है तथा बिगुल के शब्द से अति मधुर है। हमारी कहानी की पुस्तकों में यह एक वीरत्व से भरा हुआ तथा शानदार शब्द है। इस शब्द के कान। में पड़ते ही हमारे विचार इधर उधर दौडने लगते हैं, हमारे हृदय में उत्साह उत्पन्न होता है और हममें विजयी और वार होने की अभिलाषा बढ़ जाती है। हम रात्रि को निद्रावस्था में भी यही स्वप्न देखते है कि हमने एक राक्षस से लड़ने के लिए तलवार खींच रक्खी है और उस राक्षस के पीछे सात डरावने सिंह हैं जो एक दूसरे से अधिक भयानक हैं अतएव राजकुमारी के प्राण बचाने के लिये यह आवश्यक है कि राक्षस और उसके साथ सातों सिंह को यमराज के दफ्तर में पहुँचाना पड़ेगा। वास्तव में साहस भी कोई वस्तु है।

परन्तु बाद मे हममें साहस कुछ कम होता जाता है, और जब हमें उन शब्दों का, जिनका हम प्रयोग करते हैं, यथेष्ट ज्ञान होजाता है, तब हमे ज्ञात होता हैकि यह शब्द साहस एक मकान की तरह है जिसमें अनेक कमरे हैं, जो एक दूसरे से भिन्न हैं परन्तु सब कमरे अन्त में छत पर जाकर मिल जाते हैं, जहां पर तारों के अतिरिक्त कुछ भी दिखलाई नहीं पडता।

आओ, चलो पहिले कमरे की ओर चलें। इस कमरे में उस मनुष्य का दैनिक साहस है। जो पृथ्वी के अन्दर अन्धकार में कई मील टनल के अन्दर होकर जाता है। इसी कमरे में उस मनुष्य का साहस है जो समुद्र की तह तक गोता लगाता है और जिसके प्राणों की रक्षा केवल मशीन से भेजी हुई वायु के ऊपर निर्भर है। वहीं पर उस आग बुझाने वाले का साहस है, जो एक बच्चे के प्राण बचाने के लिए आग की लपटों का सामना करता है। यहीं पर नये वायुयान में जाने वाले उड़ाका का साहस है और यहीं उन मनुष्यों का जो समुद्र के अन्दर चलने वाले जहाजों (Submarines) में बैठे हुए जा रहे हैं। यहीं पर उस सिपाही का साधारण साहस है जो कि भीड वाली सड़कों पर मोटर और तांगों को मार्ग दिखाने के लिए खडा रहता है

जांच करने का साहस

आओ दूसरे कमरे में भी देखें क्या होरहा है। एक मनुष्य अपनी नसों में एक द्रव्य पदार्थ, जो कभी किसी मनुष्य के शरीर के अन्दर नहीं गया था, भर रहा है। उसका विश्वास है कि उसने एक घातक रोग की दवा का अविष्कार किया है परन्तु उसे यह नहीं मालूम कि वह औषधि सफल भी होगी या नहीं। यह ज्ञात करने का केवल एक ही मार्ग है और वह है अपने जीवन की बाजी।

अब आगे कमरे में चलो। तीन मनुष्य, जिनका केवल ढांचा दिखाई पडता है कम्बल ओढ़े हुए भूख के कारण मरे जारहे

हैं उनमें से एक अपने मित्र को लिख रहा है "हमारे पैर ब
में जमे हुए हैं, जलाने के लिए कोई वस्तु नहीं है, खाने का कोई
प्रवन्ध नहीं । कृपा कर कुछ नहीं तो हमारे डेरे में आकर ही
हमारा गाना सुनलें ।"

और आगे चलो। एक मनुष्य अति कठिन परिश्रम कर रहा
है। उस काम से उसे अत्यन्त घृणा है, उससे उसे न तो प्रसन्नता
ही होती है और न सन्तोष ही।

दुःख को छिपाने लिए साहस

ऐसे मनुष्य का सम्पूर्ण दृष्टिकोण ही निराशाजनक है। ऐसे
कार्य के करने से उसे कभी उन्नति करने का अवसर ही न
मिलेगा। अपने जीवन के अन्तिम दिवस तक वह यही असन्तोषजनक कार्य करता रहेगा। उसे अपने जीवन काल में एक
दिन भी ऐसा न मिलेगा जिस दिन वह अपनी इच्छा के अनुसार कार्य कर सके। वह ऐसा कार्य प्रसन्नतापूर्वक क्यों करता
है जिसमें उसे तनिक भी रुचि नहीं है ? क्योंकि इससे उसे
आमदनी होती है और इस धन से वह अपना तथा अपने गृहस्थ
का भली भांति पालन पोषण कर सकता है।

और दूसरे कमरे में आओ। एक बचा बहुत पीला तथा
पतला बिस्तरे पर पड़ा हुआ है। उसकी मां उसके पास बैठी हुई
एक दिल बहलाने वाली कहानी सुना रही है। कभी कभी वह
उसे तस्वीर दिखला देती है और बड़े प्रेम के साथ पूछती है—

"देखो, कैसी अच्छी तस्वीर है।" और उसकी आवाज और उसके चेहरे से कोई भी नहीं कह सकता कि उसका हृदय कितना व्यथित है वैद्य ने रोगी की हालत बहुत खराब बता दी है परन्तु फिर भी वह बच्चे को प्रसन्न रखना चाहती है और यद्यपि उसकी मानसिक तथा आत्मिक व्यथा अवर्णनीय है वह साहस धारण किये हुए है और बच्चे को बहलाने के अनेक प्रयत्न कर रही है।

और आगे के कमरे मे आओ। यह उन मनुष्यों से भरा हुआ है जो अत्यन्त प्रसन्न है और जिनका जीवन आनन्द में ही व्यतीत होता है। इनमें एक दूसरे के प्रति अति कृपा भाव है परन्तु फिर भी यदि कोई किसी की शिकायत कर देता है तो उसके प्रति द्वेषभाव उत्पन्न हो जाते हैं। इस कमरे मे एक बड़ी बात यह है कि कोई मनुष्य चिन्तित नहीं है। यहां के निवासी पुस्तकों का अध्ययन करते हैं और खाने, पीने और कपड़ों का विशेष ध्यान रखते है।

अब हम एक ऐसे कमरे में आते हैं जहां विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। हम इसके विषय में कुछ भी न कहेंगे जब तक इस कमरे को भली प्रकार देख न लें और हमें विश्वास न हो जावे कि हमें जो कुछ करना है उससे हम भली प्रकार परिचित न हो जावें। एक मनुष्य बन्दूक लिए हुए खड़ा है और खिड़की में से सड़क पर चलने वाले मनुष्यों की ओर देख रहा है। वह अपने राष्ट्र की इच्छा के विरुद्ध जा रहा है क्योंकि

उसका मत है कि राष्ट्र ग़लत मार्ग पर है। वह समर्पित होने की अपेक्षा मरना अच्छा समझता है।

एक विचार पर दृढ़ रहने वाले मनुष्य अपने को साहसी समझते हैं

आप कहेंगे कैसा साहस है। क्या आपको पूरा विश्वास है? उस मनुष्य पर, फिर विचार करो। क्या तुम समझते हो वह ठीक मार्ग पर जा रहा है? क्या वह एक वीर की अपेक्षा एक पागल आदमी नहीं प्रतीत होता?

यह शब्द अत्यन्त ही ख़ौफ़नाक है। एक मनुष्य किसी बुरे कार्य को करने में साहसी हो सकता है और कोई मनुष्य अपनी अज्ञानता प्रकट करने में शूरता दिखलाने का प्रयत्न करता है।

मान लो कि हमारी भेट एक ऐसे मनुष्य से होती है, जो कि मरते समय तक शराबी था, जिसने अपने ख़ान्दान का सब धन नष्ट कर दिया और अपने नाम पर धब्बा लगा रहा है। और थोड़ी देर के लिये मान लीजिये कि हम उसके पास डाक्टर बुला कर लावें जो उसको ठीक तरह निश्चय रूप से समझा दे कि वह शराब पी पी कर पागल बन रहा है और शीघ्र ही मर जायगा तो वह शराबी यदि डाक्टर साहब का मज़ाक बनावे और कहे—"मुझे कोई चिन्ता नहीं, न मुझे पागलपन का भय है और न मृत्यु का।" तो क्या हम कह सकते हैं कि वह एक वीर पुरुष है।

ठीक इसी प्रकार जगत् में ऐसे बहुतेरे मनुष्य हैं जो कि अपने को साहसी समझते हैं क्योंकि वह एक विचार पर, चाहे वह राजनैतिक हो चाहे धार्मिक, दृढ़ रहते हैं क्योंकि वह उसको सही समझते हैं यद्यपि सम्पूर्ण जगत् उनके विरुद्ध ही क्यों न हो। ये मनुष्य दूसरों के दुखों की कल्पना तक नहीं करते। वे अपनी आंखों से देखते हैं कि हमारे चारों ओर निर्धन मनुष्य रहते हैं। उनके विचारों पर लगातार आघात होते ही रहते हैं और उनके विचारों से कोई भी मनुष्य सहमत नहीं होते। परन्तु फिर भी वे अपने विचार को सही मानते हुए उसी पर दृढ़ चले जाते हैं।

नीच साहस

अब हमें निश्चय हो गया कि साहस भी तुच्छ हो सकता है। साहस भी काव्य, सङ्गीत अथवा धर्म की तरह है और इसलिये उसका प्रयोग तुच्छ कार्यों के लिये भी हो सकता है। एक ओर हैण्डिल का सङ्गीत सुनिये, दूसरी ओर एक वहशी का। एक को सुन कर इन्द्रपुरी का सा अनुभव होने लगता है और दूसरे को सुन कर हृदय पर बुरा प्रभाव पड़ता है। एक लेखक की पुस्तक का अध्ययन करने से सद्गुण तथा अच्छे भाव उत्पन्न करने की अभिलाषा होती है और एक दूसरे लेखक की पुस्तक पढने से ज्ञात होता है कि मनुष्य चाहे सज्जन हो चाहे दुर्जन इससे और मनुष्यों पर तथा उसके राष्ट्र पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता।

यह एक बहुत चित्ताकर्षक विषय हो जाता है कि एक अच्छी वस्तु को किसी बुरे कार्य के लिये प्रयोग करना। प्रत्येक मनुष्य भली भांति परिचित है कि यदि राष्ट्र के जीवन को सफल बनाना है तो यह आवश्यक है वहां का सिक्का वास्तव में सच्चा होना चाहिये। परन्तु हम देखते हैं कि ऐसे भी मनुष्य हैं जो धनवान होने की इच्छा से जाली सिक्के बना डालते हैं और यह विचार नहीं करते कि इसके फलस्वरूप कितने मनुष्य धनहीन हो जावेंगे। विश्व भर में यही दिखलाई पड़ता है। अपनी संरक्षता के हेतु यह अत्यन्त आवश्यकीय है कि हम सदैव अच्छे विचार ही हृदय मे लावें और धार्मिक क़ानून के अनुसार हो चलें और अपनी अपेक्षा, दूसरों का अधिक ध्यान रक्खे। परन्तु ऐसे भी मनुष्य हैं जो कहते हैं कि "मुझे और दुनिया भर से क्या तात्पर्य ? मैं तो अपनी इच्छानुसार ही कार्य करूँगा।" और ऐसे मनुष्यों की इच्छा संसार के अन्य प्राणियों के सुख जीवन मे बाधा डालने वाली होती हैं।

सच्चा साहस निःस्वार्थ होता है

अपनी इन्द्रियों पर दमन करना ही वास्तव में साहस है। और इसी से साहस का गूढ़ अर्थ निकलता है। जहां स्वार्थ का प्रश्न उठता है, तो उस समय साहस मे भी सन्देह होने लग जाता है। जब और जहां मनुष्य का हृदय स्वार्थता से मीलों दूर है, तो वहां हम निश्चय रूप से कह सकते हैं कि वह मनुष्य वास्तव

में साहसी है। हम अपने आपको कभो कभी धोखा दे सकते हैं परन्तु स्वार्थी होने के समय प्रत्येक मनुष्य को सन्देह उत्पन्न होने लग जाता है।

एक और प्रकार का साहस है जिस पर विचार करना अनुचित नहीं है। यूनान देश में जब कोई वीर युद्ध के लिए जाता था तो उसकी माता का अन्तिम उपदेश यह होता था कि—"हे पुत्र! या तो विजयी होकर घर लौट कर आना नहीं तो देश के वास्ते वहीं बलिदान हो जाना। यह न हो कि पराजित की दशा में तुम हम से आकर मिलो।"

कुछ वर्ष व्यतीत हुए मनुष्य कहते थे कि स्पार्टा (Sparta) के निवासी बहुत साहसी होते हैं। परन्तु हमें अब इस विषय में भी सन्देह होता है। ध्यान देने के पश्चात हमें ज्ञात होता है कि केवल नसों के मजबूत होने से ही मनुष्य साहसी नहीं हो सकता। परन्तु सहनशीलता वास्तव मे कोई वस्तु है और यह भी मानने योग्य बात है कि सहनशीलता कुछ सीमा तक मनुष्य के स्वास्थ्य पर निर्भर है।

कुछ मनुष्यों पर दु ख का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। कुछ मनुष्यों को बाजे के स्वर में कुछ आनन्द ही प्राप्त नहीं होता। लगभग प्रत्येक बच्चे को एक चांटा लगा देने से कोई दुःख नहीं होता। परन्तु बहुत से ऐसे भी बच्चे है जिन्होंने अभी तक अत्यन्त आनन्ददायक तथा विचित्र वस्तुओं के नाम तक नहीं सुने। इस प्रकार का साहस प्रशंसनीय नहीं है। हम उस

सिपाही को वीर कहते हैं जो युद्ध क्षेत्र छोड कर भागना चाहता है परन्तु वह वास्तव मे भाग कर नहीं जाता। यदि कोई मनुष्य अपने को भय से अपरिचित बतलावे, तो हम नहीं समझते कि वह वीरत्व से भरा हुआ है। किन्तु हम उसके विषय में केवल यही कह सकते हैं कि उसकी विचारने की शक्ति बहुत हीन है।

जगत-प्रसिद्ध साहस

ऐसे साहस की तुलना एक ऐसे साहस से करो, जो जगत इतिहास मे सबसे अधिक सुन्दर पवित्र तथा शुद्ध हो। इसी धरातल पर किसी समय एक ऐसा प्राणी रहता था, जिसके हृदय में प्रेम के अतिरिक्त कुछ भी न था। उसे शिशु गण से अतीव प्रेम था, वह पुष्पों से प्रेम करता था, उसे पक्षियों से प्रेम था। उसका प्रेम इतना गहरा था कि एक पापी के हृदय मे छल और कपट देखते हुए भी वह उससे प्रेम करता था। वह कृपालु, सुहृदय तथा दयावान था विश्व भर की सौन्दर्य्यता तथा सौजन्यता उसकी आत्मा मे भरी हुई थी। तो भी, अपने विचार के हेतु, अपने प्रेम के कारण उसने अपना जीवन समर्पित कर दिया। अत्यन्त शान्ति पूर्वक उसने अपने जीवन को बलि-दान दे दिया। मरते समय भी उसने अपनी हँसी उडाने वालों के लिये प्रार्थना की, जिन्होंने उसके विचारों को ठोकर मारदी, उनको उसने आशीर्वाद दिया। मरते समय तक वह अपने विचार पर दृढ़ रहा कि प्रेम ही मनुष्य का इस जगत में साथी

है। उसने अपने विचार की पुष्टि के लिये अनेक प्रकार के दुख सहे और अन्त में एक साधारण मनुष्य के हाथों द्वारा सूली पर लटका दिया गया। यह कौन पुरुष था? जीसज क्राइस्ट (Jesus Christ) जिसको ईसा मसीह भी कहते हैं।

यह वह साहस है जिससे हमें अपने सृष्टिकर्ता के गुण दिखलाई पड़ते हैं।

चतुर्थ अध्याय

सत्य

प्राचीन-समय से यह रीति अब तक चली जाती है कि मनुष्य अपना घरबार छोड़ कर दूसरे देशों में धनोपार्जन करने के लिये चले जाते हैं। कभी कभी वे ऐसी वस्तु ढूँढ़ने को चले जाते हैं जिसे उस समय तक किसी भी मनुष्य ने खोज न कर पाया था।

हमसे बहुत दिनों तक साधारण तथा नैयमिक जीवन व्यतीत करने की आशा नहीं रक्खी जा सकती। हमारे घर में हमारी माताएँ तक यह कहती सुनाई पड़ती हैं—"इस बर्तन का प्रयोग करते २ हम तो थक गये, अगले इतवार को नया बर्तन अवश्य लावेंगे।"

एक जगत प्रसिद्ध बुद्धिमान पुरुष ने सोच विचार कर यह निश्चित किया कि मनुष्य की यह नई वस्तु के लिए, नए कार्य

के लिए अभिलाषा केवल अन्वेषण के लिए त्राग ही नहीं है परन्तु उससे कुछ अधिक है। यह उस अभिलाषा के ही कारण है कि आज हम असभ्य नहीं परन्तु सभ्य हैं, आर्ज हम मूर्ख नहीं परन्तु ज्ञानी हैं, आज हम अन्धकार मे नहीं परन्तु प्रकाश मे हैं। दूसरे शब्दों में, इस महान व्यक्ति मोन्टेन (Montaigne) का वक्तव्य है कि अन्वेषण में ही विकास तथा उन्नति की महान शक्ति गुप्त है। उसका कहना है कि मनुष्य ने सत्य की खोज के लिये ही जन्म लिया है।

यह एक उच्च उपदेश है। और इसी का हमको भरपूर अनुसरण करना चहिये। इसी ध्येय को सामने रखते हुए हमें अपना जीवन व्यतीत करना चाहिये।

परन्तु उसी व्यक्ति ने हमको एक और शिक्षा दी है। हमारा कर्तव्य, वास्तव मे सत्य की खोज करना है परन्तु वह एक महान शक्ति है जिसका सत्य पर पूर्ण अधिकार है। वह शेक्सपीयर (Shakespeare) के मरने से २४ वर्ष पूर्व इस संसार को छोड़ कर चला गया था। उसने यह कभी नहीं कहा कि सत्य किसी कुए मे छुपा हुआ पड़ा है। उसने बार बार यही कहा कि सत्य ऐश्वर्य है परमात्मा स्वयं सत्य है और सत्य की खोज करते समय हमें पूर्ण विश्वास रखना चाहिये कि हम अपने सृष्टिकर्त्ता की खोज कर रहे हैं

अब थोड़े से समय के लिये यह विचार करो कि मनुष्य का जीवन कितना आश्चर्य जनक है। हमने एक ऐसी वस्तु की खोज

करने के लिए जन्म लिया है जिसे हमें प्राप्त होने की कोई आशा नहीं।

यह भूल भुलैया का सबसे बड़ा खेल है। उस परब्रह्म परमात्मा ने सत्य को कहीं छिपा दिया है और हमें वह सत्य कभी भी इस धरातल पर प्राप्त न होगा। परन्तु उस सर्वशक्तिमान् ने उस खोज को इतना शानदार तथा दिलचस्प बना दिया है कि यद्यपि यह जानते हुए कि वे उसे कभी भी प्राप्त न कर सकेंगे, बहुत से महान व्यक्तियों ने इस खोज को ही अपने जीवन का असीम आनन्द समझा। प्रत्येक काल तथा युग इस बात का साक्षी है।

अठारहवीं शताब्दी के एक जर्मन लेखक ने कहा था "यदि परमेश्वर के दांए हाथ में सम्पूर्ण सत्य हो और बांए हाथ में सत्य के लिए अमर अभिलाषा और मुझे दोनों में से एक हाथ लेने को कहा जाता, तो मैं अवश्य बांए हाथ के सन्मुख शिरनवा देता क्यों कि पवित्र तथा शुद्ध सत्य केवल परमात्मा के लिये ही है।" उसका कहना था कि मनुष्य की योग्यता उसके ज्ञान के ऊपर निर्भर नहीं है परन्तु उन प्रयत्नों पर, जो उसने ज्ञान प्राप्ति के लिए किये हैं क्योंकि सत्य की खोज के द्वारा ही, न कि सत्य पर अधिकार करके, मनुष्य उन्नति के मार्ग पर चल सकता है।

यह याद रखने की बात है कि पवित्र तथा शुद्ध सत्य की खोज करते समय, यद्यपि हमें वह सत्य प्राप्त नहीं हो सकता,

हमें कुछ सत्य के कण मिल ही जाते हैं। इन्हीं कणों के समूह से हमें प्रकृति के ऊपर शक्ति का प्रभाव डालने का अवसर मिल जाता है। उदाहरणार्थ, एक समय ऐसा था जब मनुष्य यह विश्वास करते थे कि पृथ्वी चपटी और स्थिर है और इस ग़लत विचार के ही कारण वे तारों की गति को भली प्रकार न समझ सके। परन्तु जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि पृथ्वी गोल है, कि पृथ्वी एक क़ीली पर सूर्य्य के चारों ओर घूमती है, तो उन्होंने आकाश की भी विद्या सीख ली और वे सब नक्षत्रों की गति का पूरा २ वृतान्त मालूम करने में सफल हुए और इसी के द्वारा हमें आज सूर्य्य और नक्षत्रों का पूरा २ हाल ज्ञात है।

सहस्रों वर्ष तक छिपा रहने वाला सत्य

सम्भव है कि सत्य की खोज में यह सबसे आश्चर्य जनक घटना हो। यद्यपि हमें सत्य का छोर कभी न मिलेगा, तथापि जैसे २ हम सीढ़ियां पार करते जाते हैं, हमें इस सृष्टि का कुछ २ शारीरिक तथा धार्मिक अनुभव होता जाता है।

हमें अभी तक बुराई का सत्य नहीं ज्ञात हुआ। यह एक ऐसी समस्या है, जो हमसे कई सहस्र वर्ष तक गुप्त ही रहेगी और सम्भव है कि पृथ्वी पर कभी हल न हो सके। परन्तु इतना तो हम अवश्य जानते हैं कि अच्छाई बुराई से बहुत माननीय है। यह भी हम विश्वसनीय तौर पर कह सकते हैं कि एक कृपालु-मनुष्य एक दयाहीन मनुष्य से मनुषत्व में ऊँचे

दर्जे पर है। यह भी हमें निस्सन्देह पूर्वक कहने का अधिकार है कि एक शराबी एक निःस्वार्थ तथा सभ्य पुरुष से बहुत नीच है। इन्हीं बातों को हम 'सत्य' कहते हैं और हम अपना जीवन इन सत्य बातों को सन्मुख रखते हुए व्यतीत करते हैं।

परन्तु बहुत से विचार करने वाले पुरुष इस बुराई की समस्या में ही जीवन व्यतीत करने में असीम आनन्द का अनुभव करते हैं। वे यह विचार नहीं करते कि वे उसे कभी भी समझ सकेंगे परन्तु चूँकि यह एक कठिन समस्या है इसलिये वे उसके कुछ अंश को समझने का प्रयत्न करते हैं। एक मनुष्य का कहना है कि बुराई कोई चीज नहीं है। यह केवल अच्छाई की गैरहाजिरी है? जैसे अन्धकार प्रकाश के न होने से होता है। ऐसे विवाद में मनुष्य को सत्य का कुछ ज्ञान होता है और इसी के आधार पर मनुष्य को सही और गलत का अनुभव होने लगता है जिसके फल स्वरूप कुछ अधिक न्यायी नियम तथा कानून बनने लगते हैं।

न्यूटन की सेव और ईन्सटीन की रेखा

यूनानी गणित विशेषज्ञ यूक्लिड (Euclid) ने गणित में कुछ ऐसे नियम बनाये, जिनके सिद्ध करने की आवश्यकता न थी अर्थात् वे सत्य समझे जाते थे। दो सहस्र वर्ष से वे अब भी ठीक ही माने जाते हैं और उनके आधार पर बहुत से आश्चर्य जनक कार्य इन्जीनियरों ने किए हैं। परन्तु अब हमें

उनमें से कुछ के विषय में सन्देह होने लगा है और यद्यपि प्रयोग करते समय उन गल्तियों के ठीक समझ कर काम निकाल लिया जाता है फिरभी हमको सत्य की खोज फिर आरम्भ कर देनी चाहिये।

सर आइजक न्यूटन (Sir Isaac Newton) ने एक सेव वृक्ष से टूटकर पृथ्वी पर गिरते हुए देखा। यह नीचे क्यों गिरा ? यह ऊपर क्यों नहीं चला गया ? ऐसे प्रश्न उसके मस्तिष्क में उठने लगे और अन्त मे उसने यह परिणाम निकाला कि पृथ्वी ने सेव को अपनी ओर खींच लिया और इस खींचने को आकर्षण बतलाया। कल तक कोई भी इस बात का अविश्वास नहीं करता था। यूक्लिड (Euclid) की परिभाषाओं की तरह यह स्वयं-सिद्ध मानी जाती थी। लेकिन अब ईन्सटीन (Einstein) ने हमें वतलाया है कि यह सीधी पृथ्वी पर नहीं आती परन्तु एक टेडे मार्ग से आती है और इसकी गति इसी प्रकार है जैसे एक पत्थर का टुकडा यदि ऊँची नीची जमीन पर रख दिया जावेगा तो बीच में आकर ठहर जायगा। कौन ठीक है—न्यूटन या इन्सटीन ? इसके लिये हमे फिर से विचार करना पड़ेगा। सत्य अभी गुप्त है।

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि सत्य की मात्रा काल तथा अवसर के साथ २ बदलती रहती है।

विचार करने के लिये अत्यन्त लाभदायक नींव

यदि हम एक मनुष्य को सड़क पर दौड़ते हुए देखें तो हम कहते हैं कि देखो वह कितनी तेजी से जारहा है यह बिल्कुल सत्य है परन्तु यदि उसके पास एक घोड़ा दौड़ रहा हो तो वह मनुष्य केवल चलता हुआ मालूम होगा और यदि एक मोटर उसके पास होकर चली जावे, तो वह मनुष्य रेंगता हुआ मालूम होगा और यदि एक हंस उसके पास से उड़जावे तो वह केवल खड़ा हुआ ही मालूम होगा।

इसी प्रकार सत्य का विषय विचारने योग्य है। मानलो कि कोई मनुष्य तुम्हारे पास एक बहुत बुरी और भद्दी तस्वीर लावे और तुमसे कहे कि यह बहुत सुन्दर तस्वीर है और तुमको इसकी प्रशंसा करनी चाहिये। तो तुम क्या कहोगे? यह तो केवल अज्ञानता की निशानी होगी यदि तुम यह कहदो कि "मेरी राय में यह तस्वीर खराब है।" सम्भव है कि वह मनुष्य तुम से अधिक बलवान हो और वह कहे "मैं यह सिद्ध करने के लिए तुम पर वार करूगा कि मैं ठीक हूँ।" इसी प्रकार आज तक इस पृथ्वी पर युद्ध होते रहे हैं, मानो शक्ति ही सत्य सिद्ध कर सकती है। नहीं, तुम्हारा सही उत्तर यह होना चाहिये कि उस चित्र को एक ऐसे चित्र के साथ, जिसको जगत के विद्वान सुन्दर बतलाते है, टांक देना चाहिये और फिर उस चित्रकार से उन दोनों चित्रों की सुन्दरता की तुलना करानी चाहिये।

किसी वस्तु के गुणों की परीक्षा

सत्य तक पहुँचने के लिए हमें कुछ विशेष नियमों द्वारा प्रत्येक वस्तु तथा कार्य का न्याय करना चाहिये। वास्तव में यही सबसे अच्छा मार्ग है, जिसके द्वारा हम अपने आपको गलत विचारों के भय से रक्षा कर सकते हैं।

शिक्षा का एक मुख्य ध्येय किसी नई वस्तु की परीक्षा के लिये हमारे मस्तिष्क में विशेष नियम बनाना है। यदि एक लडका तुम्हारे पास एक ऐसा चाकू लेकर आवे जिसकी शान बिल्कुल वेकार होगई हो और यदि वह तुमसे कहे कि यह पैन्सिल बनाने के लिए वहुत उपयोगी है तो तुम्हारा कर्त्तव्य है कि तुम उसे एक पैने चाकू से पैन्सिल बनाकर सिद्ध करदो कि उसका विचार गलत है। इसी प्रकार यदि एक मनुष्य ने कालिदास अथवा तुलसीदास की कविता का अध्ययन किया हुआ हो, तो वह आधुनिक काल की कविता को, वह चाहे कितनी दिलचस्प क्यों न हो, कभी सर्वोच्च स्थान न देगा। और यदि किसी मनुष्य ने इतिहास पढा हो तो यह कदापि सम्भव नहीं कि वह एक अखबार में निकले हुए घोर संकट को विश्व की समाप्ति ही समझले।

यदि प्रत्येक मनुष्य अपनी इच्छानुसार कार्य करे तो सभ्यता का नाम निशान ही मिट जायगा

बिना किसी वस्तु को Standard माने हुए यह अत्यन्त

कठिन है कि हम किसी विषय पर सत्य का न्याय न कर सकें। इन्हीं के आधार पर हमारे हृदय में नवीन विचारों का उद्गार होता है। यही कारण है कि शिक्षा के द्वारा हमारा मस्तिष्क दृढ़ हो जाता है और इसके फलस्वरूप हम सच्चा न्याय कर सकते हैं। जितना अधिक हम इतिहास, विज्ञान, साहित्य तथा शिल्पकला का अध्ययन करेंगे उतना ही कम सम्भव है कि हम विद्रोही बन सकें।

इसी प्रकार हमारे धार्मिक नियम हैं। कभी कभी बहुत से पुरुष अपने सभ्य राष्ट्र के साधारण व्यवहार से च्युत हो जाते हैं और शोर गुल मचा कर अन्य पुरुषों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न करते हैं। दूसरे मनुष्य कहते हैं—"देखो कैसा नवीन विचार है।" और उनका अनुसरण करने लग जाते हैं। यदि तुम उनके साथ विवाद करो तो वे तुम्हारी हँसी उडावेंगे और सम्भव है कि तुम्हें मूर्ख बतलावें। तुम उन्हें बुराई से कभी बाहर न निकाल सकोगे। वे तुम्हारे कल्पित नियमों से न्याय नहीं कर रहे है। तुम उनका न्याय निःस्वार्थी महान आत्माओं को सन्मुख रखते हुए करते हो। ऐसे महान व्यक्तियों के जीवन के सामने वे मनुष्य अत्यन्त तुच्छ प्रतीत होते हैं। परन्तु इन विद्रोहियों का कथन है कि "हम किसी नियम का पालन नहीं करते हम केवल अपनी इच्छा तथा प्रसन्नता के अनुसार प्रत्येक कार्य करते हैं।" और वे इस प्रकार धार्मिक जीवन के विद्रोही बन जाते हैं।

यदि राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति इस प्रकार का व्यवहार रखता, तो सम्भव था कि यह जगत आज इतना सभ्य न होता। यदि बिना नियमों के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की ओर ध्यान दिया जाय तो सत्य का ऐश्वर्य स्पष्ट हो जायगा। थोड़ी देर के लिए मान लो कि मह् जन इमानदारी को काम में नहीं लाता, एक डाक्टर शराब के नशे में रोगी को देखता है; मानलो रेल के इञ्जन चलाने वाले सिग्नल (Signal) का रत्तीभर भी ख्याल नहीं करते और सिपाही चोर, डाकुओं तथा हत्यारों का पेशा करने लगें। यह स्पष्ट है कि यदि प्रत्येक मनुष्य अपनी इच्छानुसार कार्य करेगा तो सभ्यता का कोई चिह्न भी न दिखलाई पड़ेगा और एक मनुष्य का दूसरे पर विश्वास है इसी आधार पर आधुनिक सभ्यता चली जा रही है।

सत्य के साथ सहानुभूति ही हमारे जीवन का आधार है

सभ्यता की संरक्षता धार्मिक कानून से सहानुभूति रखने पर ही निर्भर है। और धार्मिक कानून मनुष्य की सत्य की खोज का फल है। हमने जन्म लिया है सत्य की खोज के लिए, न केवल शारीरिक सत्य या भौमिक सत्य या नक्षत्रों और वायु का सत्य परन्तु अपनी आत्मा का सत्य मनुष्य के लिए सबसे अच्छा कार्य क्या है? कौनसा आचार हमें उन्नति के शिखर पर पहुँचा सकता है और कौनसा आचार हमें नष्ट कर सकता है?

वास्तविक सत्य तक तो हम कभी पहुँच ही नहीं सकते। परन्तु इसका हमें ज्ञान हो सकता है और है कि विद्या का प्रेम, भलाई का प्रेम और सत्य का प्रेम ये मानुषिक आत्मा के तीनों प्रेम हमें कुमार्ग पर जाने से रोकते हैं और प्रसन्नता तथा उन्नति के मार्ग पर प्रकाश डालते हैं।

इस संसार में मूर्ख भी हैं और विद्वान भी। परन्तु मूर्खता और बुद्धिमानी में, झूठ और सत्य में, अज्ञान और ज्ञान मे पृथ्वी और आकाश का अन्तर है। या तो हम इस पार हैं या उस पार।

पञ्चम अध्याय

दिशा

विज्ञान के एक बहुत बड़े नेता ने हम से एक दिन बातचीत करते समय कहा था कि यह दो शब्द—दिशा और पौरुष—उसको विचार करते समय अत्यन्त सहायक प्रतीत होते थे। आओ, हम भी 'दिशा' के विषय में कुछ सोचें।

मान लो कि तुम एक मोटर के पास खड़े हो और तुमने उसको एक धक्का देकर रवाना कर दिया। वह आरम्भ में तो सड़क पर इसी प्रकार चलती हुई मालूम होगी जैसे मानो कि कोई मनुष्य उसे चला रहा हो। परन्तु थोड़ी देर पश्चात् कभी

बाएं को जावेगी और कभी दाएं को और अन्त में किसी वस्तु से टकरा कर चूर-चूर हो जावेगी।

परन्तु यदि तुम एक मोटर अपनी ओर आती हुई देखो, जो कि अपने ठीक मार्ग पर सावधानी से चली जा रही हो, तो तुम अपने आप कहोगे कि यहां एक मनुष्य मोटर को ठीक दिशा मे ले जा रहा है।

बहुधा यह देखने मे आता है कि लकड़ी के टुकड़े समुद्र में तैरते हुए इधर उधर चले जाते हैं। उनमे कोई निज की शक्ति नहीं है। कोई मनुष्य उन्हे ठीक मार्ग पर नहीं ले जा रहा है। वायु, लहरों और ज्वार भाटे के प्रभाव से वह लकड़ी का गट्ठा न मालूम कहां चला जाता है। इसी जलधारा के मध्य में एक जहाज़ कैसे भिन्न प्रकार से चलता है। यह एक पुल के नीचे होकर मनुष्य द्वारा चलाया जा सकता है। और जब तक किसी मनुष्य का मस्तिष्क उसी पर लगा हुआ है तो वह एक विशेष दिशा में ही चलेगा। वह वायु या लहरों के प्रभाव पर निर्भर न रहेगा। वह ज्वारभाटे पर भी अधिकार कर सकेगा और चट्टानों आदि से बच सकेगा और साथ ही साथ अपने निश्चित स्थान पर पहुँच जावेगा।

विचार करने से ज्ञात होता है कि प्रकृति भी सदैव एक विशेष दिशा मे चलती है। समुद्र का पानी लहरों पर तैरते हुए एक लकड़ी के टुकड़े की तरह नहीं बहता है; वर्ष की ऋतुऐं एक बिना सईस वाली मोटर की तरह नहीं रहती चाहे वे सदैव

एक सी न रहें। समुद्र में किसी समय शान्ति हो सकती है और किसी समय ज्वारभाटा। किसी वर्ष ग्रीष्म ऋतु में भी अधिक गर्मी न पड़े और शरद ऋतु में अधिक सर्दी का अनुभव न हो परन्तु फिर भी ऋतुऐं किसी एक नियम का पालन करती हैं। वे सदा अनैयमिक नहीं है। यह स्पष्ट है कि प्रकृति न तो एक उस मोटर की तरह है, जिसमें कोई हांकने वाला नहीं है और न समुद्र की लहरों पर बहते हुए एक लकड़ी के गट्ठे की तरह है।

कभी २ हमें प्राचीन काल का अनुभव होने लगता है जो मनुष्य की शक्ति से बाहर है और हमें यह प्रतीत होता है कि यह धरातल सूर्य्य के चारों ओर अग्नि की लपटों से घिरा हुआ है। हम अपने मानसिक चक्षुओं से देखते हैं कि यह अग्नि धीमी होती जा रही है और जल उसकी सतह पर आने लगा है और पानी के चारों ओर हरियाली दीख पड़ती है, और इसमें से मानुषिक जीव उत्पन्न होता हुआ प्रतीत होता है।

इससे हम कह सकते हैं कि "प्रकृति में गति है; सब वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं, नक्षत्र एक अंगीठी की तरह नहीं है परन्तु एक वाटिका के मानिन्द है। कोई इस गति का सञ्चार करने वाला अवश्य होगा क्योंकि यह केवल गति ही नहीं हैं परन्तु दिशामय गति है।" यह कुछ उचित भी प्रतीत होता है। परन्तु यदि कोई शास्त्रार्थ का प्रेमी यह आकर कहे कि "यह सत्य है कि वस्तुऐं परिवर्तनशील हैं और यह भी सत्य है कि बिना गति के वस्तुओं में परिवर्तन नहीं हो सकता परन्तु आप यह क्यों

कहते हैं कि कोई इस गति का सञ्चारक भी है? क्या गति ही सबकुछ नहीं कर सकती?"

प्रकृति एक नैयमिक गति है

यह बात कुछ सत्य ही प्रतीत होती है। हम ऐसा कोई प्राणी नहीं देखते जिसे इस गति का सञ्चारक कह सकें। तो फिर थोड़ी देर के लिए यही मानलो कि एक ऐसी गति है जो स्वयं सञ्चारक है। यह अवश्य एक विचित्र गति होगी परन्तु असम्भव नहीं है तो फिर एक और कोई पुरुष आकर कहे "मैंने प्राकृतिक गति का विशेष रूप से अध्ययन किया है और मैंने यह परिणाम निकाला है कि यह गति एक विशेष दिशा में जा रही है। यह ध्येय रहित नहीं है। यह कुछ खोज में है। यह एक उस मनुष्य की तरह है जो अपना मार्ग भूलकर उसकी प्राप्ति के लिए भरपूर प्रयत्न कर रहा हो अथवा एक उस स्त्री की तरह है, जिसका एक रुपया खोगया हो और वह अपने मकान के तमाम कमरों की खोज कर रही हो। प्रकृति किस वस्तु की खोज मे है। सो मैं निश्चय रूप से नहीं कह सकता। परन्तु यह अवश्य है कि वह किसी वस्तु की खोज में है। और मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह सौन्दर्य और शक्ति की प्राप्ति के हेतु सामना कर रही हो। वह घास से सन्तुष्ट नहीं है, उसे गुलाब की अभिलाषा है। वह एक छोटे से जन्तु पर सन्तुष्ट नहीं है, उसे एक हाथी की आवश्यकता है। चाहे कुछ भी हो, यह निश्चय रूप से कहा

जा सकता है कि प्रकृति अनैयमिक नहीं है परन्तु एक विशेष दिशा की ओर जा रही है।

अब हमारे विचारों पर प्रकाश पड़ना आरम्भ हो गया है। यदि हमें रहस्य ज्ञात हो गया तो हमें प्राकृतिक गति के भावों का अध्ययन करना पड़ेगा। तब हम यह कह सकेंगे कि गति किस दिशा में जा रही है। गति है परन्तु किस प्रकार की ?

प्रकृति सहयोगता के पक्ष में और स्वार्थता के विरुद्ध है

प्रकृति की इस गति को जरा ध्यान से देखो और आपको उसी समय उसके विषय में एक विचित्र बात ज्ञात होगी। यह अति सावधानी से अनेक प्राणी उत्पन्न करती है। पृथ्वी के अन्दर खोदने से मालूम होता है कि ऐसे ऐसे जीव हैं जो पृथ्वी की सतह के ऊपर कभी दिखलाई तक नहीं पड़ते। वे सब फेंक दिये गये हैं। यह भी देखने में आता है कि ऐसे भी बहुत से जीव हैं जो कि निरन्तर नष्ट होते जा रहे हैं क्योंकि प्रकृति उनके लिए कोई चिन्ता नहीं करती। हमारी विचित्रशालाएँ ऐसी वस्तुओं को एकत्र करती हैं और उनकी रक्षा करती हैं क्योंकि वे नष्ट होते जा रहे हैं, जिसका अर्थ यह है कि वे अब प्रकृति के लाभ के नहीं रहे।

अब हमें उन वस्तुओं की ओर ध्यान देना चाहिए, जिनसे प्रकृति प्रेम करती प्रतीत होती है या जिनके लिए वह वास्तव में

चिन्ता रखती है। शहद की मक्खियाँ और पुष्प, भेड और हरे खेत, मनुष्य और अन्न इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

इन वस्तुओं के विषय मे हमारे हृदय में क्या खटकता है ? वे एक दूसरे को लाभ देने वाली हैं। शहद की मक्खी पुष्पों की सहायता करती है और पुष्प मक्खियों की। भेड घास की सहायता करती है और घास भेड की। मनुष्य गेहूँ की सहायता करता है और गेहूँ मनुष्य की।

चीते और भेडिये के साथ कुछ अन्तर है। वे केवल अपना ही विचार करते हैं। वे मारते हैं और नष्ट करते हैं। वे किसी को सहायता नहीं करते। इससे यह परिणाम निकलता है कि यह प्राकृतिक गति सहयोगता के पक्ष में और स्वार्थता के विरुद्ध है। प्रकृति ने शीघ्रता के वास्ते चीते को जन्म दिया परन्तु चीते ने उस गुण को केवल अपने स्वार्थ के लिए ही काम में लिया इसी कारण प्रकृति उसका साथ नहीं देती।

ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्राकृतिक गति धार्मिक है। यह एक कुमार्ग पर नहीं जा रहा परन्तु एक अच्छे मार्ग पर। यह प्राणियों से आशा रखती है कि वे एक दूसरे की सहायता करें न कि अपनी सहायता करे।

इस गति पर जरा और ध्यान दो। क्या यह बुद्धिमान के पक्ष में है या अज्ञानता के ? क्या यह खराब वस्तुएँ उत्पन्न करने का प्रयत्न कर रही है या शुद्ध वस्तुएँ ? क्या यह जीवों को उचित कार्य करने की उत्तेजना दे रही है या अनुचित कार्य ?

मस्तिष्क जीवन को सत्य, सौन्दर्यता तथा भलाई के मार्ग पर ले जा रहा है

हमें केवल पशु, पक्षी तथा वृक्षों की इस प्रश्न के उत्तर देने की बुद्धिमता पर विचार करना है। मानसिक शक्ति! कैसा विचित्र शब्द है। इन जीवों में एक ऐसी असाधारण शक्ति कहां से उत्पन्न हुई? यदि प्राकृतिक गति स्वयं बुद्धिमान न थी, तो ऐसी शक्ति कैसे प्रदान कर सकती थी।

पहिले मनुष्य पर ही विचार करें। हम यह कहते हैं कि अमुक व्यक्ति अच्छा है और अमुक व्यक्ति बुरा। इस भेद से हमारा यह तात्पर्य है कि कुछ मनुष्य ठीक मार्ग पर जा रहे हैं और कुछ गलत मार्ग पर। केवल उन्हीं मनुष्यों के कारण, जो अज्ञान तथा मूर्ख बन कर कुमार्ग पर चल रहे हैं, मनुष्य को इस जीवन में अनेक आपत्तियों का सामना करना पड़ता है। और ठीक मार्ग पर चलने वाले मनुष्य ही इस जगत को उन्नति शिखर पर पहुँचा सकते हैं।

कुछ मनुष्यों का कहना है कि "अच्छा और बुरा कहने से क्या तात्पर्य है अच्छा वह विचार है जो तुम्हें अनुचित प्रतीत होता है।" उन मनुष्यों के मतानुसार अच्छापन केवल मनुष्य का एक विचार है बुरापन वास्तव में उतना बुरा नहीं है जितना कि अच्छे आदमी समझते हैं। इसको हम नीच विचार कहते हैं। और यह हम सिद्ध कर सकते हैं कि यह विचार क्योंकर

नीच है। रूस और आयर्लैंड में बहुत से मनुष्यों ने मिल कर यह निश्चय किया है कि हत्या अपराध नहीं है और उनको जो शस्त्रबन्द हों चोरी करने की आज्ञा होनी चाहिये। इसका परिणाम क्या है? ऐसे अभागे देशों मे सभ्यता मुँह बन्द किए बैठी है।

अधार्मिक राष्ट्र अधिक काल तक गौरव सहित नहीं रह सकते। धर्म चाहे उच्च अवस्था में हो या नीच अवस्था में परन्तु बिना किसी प्रकार की धार्मिक नींव रक्खे हुए कोई भी राष्ट्र सङ्गठित नहीं रह सकता। कुछ ऐसे कार्य होने चाहिये जिन्हें मनुष्य को करने का अधिकार हो और कुछ ऐसे, जिन कार्यों को करने की मनुष्य को आज्ञा नहीं मिलनी चाहिये। केवल दुष्ट मनुष्यों से भरी हुई सभ्यता का तो विचार करना भी सम्भव नहीं। उन्नति के लिए भलमनसाहता अत्यन्त आवश्यक है।

अपने हृदय से पूछो "सौजन्यता क्या है?" यह किसी कार्य की पूर्ति के लिए निरन्तर प्रयत्न है। मनुष्य की आत्मा में यह गति न केवल बुद्धिमान है परन्तु धार्मिक भी है।

सौजन्यता की ओर प्राकृतिक गति

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राकृतिक गति मनुष्य को उन्नति के मार्ग पर लेजाने का प्रयत्न करती है और उसे अवनति के मार्ग पर जाने से रोकती है। यह गति गुण और सौन्दर्यता उत्पन्न करने में ऐक ऐसी विचित्र शक्ति धारण करती है कि

हमें विश्वास नहीं होता कि इसके द्वारा मनुष्य में दुष्टता का भी प्रभाव आ सकता है। क्या हम ऐसा विचार कर सकते हैं कि जिस गति के द्वारा चमकते हुए तारों और चहचहाते हुए पक्षिओं का निर्माण हुआ है, उसी ने ऐसी भद्दी तथा भयानक वस्तुओं को उत्पन्न किया। क्या यह इतनी शक्तिवान है और साथ ही साथ इतनी अज्ञानता से भरी हुई हैं ?

नहीं इसकी अपेक्षा तो यह विचार कर लेना सुगम है कि यह गति कुछ भी उत्पन्न नहीं करती और इसका सञ्चार एक महान् आत्मा के मस्तिष्क से हुआ था और इस जगत में जो कुछ भी बुराइयां हैं वे सब उस गति के विरुद्ध होने के फल स्वरूप हैं। यह गति बिना उस वस्तु की सहयोगता के, जिसकी खोज में वह है, कुछ भी नहीं कर सकती। यह सृष्टि सत्य और सौन्दर्य के लिए उपासना कर रही है। इसी ध्येय को प्राप्त करने के लिये इस गति का सञ्चार हुआ है। इस गति का सञ्चार अनेक बाधाएँ पडजाने के कारण अपने आप नहीं हो सकता। और जब इसे सहयोगता की सहायता मिल जाती है और जब इसे सहयोगता की सहायता मिल जाती है तो प्राकृतिक सौन्दर्य उत्पन्न होता है और उसके साथ ही साथ मनुष्य की आत्मा में विकास होता है।

गेहूँ के उचित उपयोग करने पर और अधिक गेहूँ की पैदावार हुई; गुलाब का पौदा लगने से सौन्दर्य्य और सुगन्धता का आगमन हुआ और मनुष्य को ठीक मार्ग पर चला कर

उसके हृदय में प्रेम उत्पन्न किया गया। यह गति के कारण नहीं परन्तु Matter का विरोध होने के कारण गेहूं में घुन लग जाता है, पुष्प खिलने से पूर्व ही मुरझा जाता है और मनुष्य पाप चेष्टा करने लगता है। यह गेहूं का स्वभाव नहीं है कि वह न उगे या पुष्पका कि वह न फूले या मनुष्य का कि वह बुरा बने। इनसे केवल यही ज्ञात होता है कि सही मार्ग पर कार्य्य नहीं किया गया।

ध्येय, जो बहुत दूर है तथा अदृश्य है।

यह सत्य है कि बहुधा अपने ध्येय का ठीक मार्ग निश्चित करना अत्यन्त कठिन हो जाता है। सम्भव है वहां तक पहुंचने में सदियां लग जावे और वहां तक पहुंचने का मार्ग अत्यन्त भयानक तथा अन्धकार मय हो परन्तु हमें इतना तो अवश्य विश्वास है कि प्रत्येक कार्य में ऐश्वर्य का प्रभाव पड़ता है।

अब हमें ठीक तौर पर पता लग गया कि यह शब्द "दिशा" हमें सही मार्ग पर ले जाने में कितनी सुगमता कर सकता है। इसी के आधार पर हम कह सकते हैं कि वह सृष्टि जिसमे हमने जन्म लिया है, ज्ञान से भरी हुई और धार्मिक है। हम पूर्ण रूप से अन्धकार मे नहीं है। गति के पीछे गति सञ्चारक है; प्रत्येक वस्तु का सहायक मस्तिष्क है। सम्भव है, हमे अपने प्रश्नों के पूर्ण उत्तर न मिल सके फिर भी चूँकि हम यह जानते हैं कि प्राकृतिक-गति द्वारा विद्रोह शान्त हो सकता है, भद्दापन

सौन्दर्य में परिवर्तन हो सकता है, मनुष्य स्वार्थता को छोड़कर सहयोग दे सकता है, निर्बल से शक्तिवान हो सकता है और अज्ञान भी विद्वान हो सकता है, अतएव हम को विश्वास है कि जीवन एक बहुत बड़ी वस्तु है।

बुद्धिमान यात्री एक दिन ध्येय में सफल होगा।

यात्री बुद्धिमान वह है जो यात्रा आरम्भ करने से पूर्व अपना पहुँचने का स्थान निश्चित कर लेता है। चाहे वह एक गलत मार्ग पर जाने वाले से अधिक गलतियां करे, फिर भी वह ठीक दिशा में जा रहा है और एक न एक दिन वह अवश्य अपने निश्चित स्थान पर पहुंचेगा दिशा ही जीवन की आत्मा है। इसी को मनुष्य भाग्य कह कर पुकारते हैं।

षष्ठ अध्याय

दूरी

एक रात्रि की घटना है कि एक स्त्री ने एक आगन्तुक से कहा "हमारा डाक घर हमारे मकान से लगभग आधा मील होने के कारण हमें बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है।"

उसी समय उसके पति ने कमरे के अन्दर पैर रखते हुए कहा 'मैं अभी शनि नक्षत्र की ओर देख रहा था, वास्तव में एक देखने योग्य दृश्य है।" इस पर उस आगन्तुक ने कहा

यह नक्षत्र तो तुम्हारे डाकघर से भी दूर है।" इस पर Astronomer ने उत्तर दिया कि वह नक्षत्र सूर्य्य से आठसौ तेरासी मील है।

दूरी असुविधाजनक भी है और अत्यन्त आनन्द दायक भी है। थक जाने पर एक मील भी अत्यन्त दुःखदायी होता है और एक तैरने वाले को जब कि वह भँवरों के चक्कर में आगया है, पाव मील भी कष्टदायक होता है। परन्तु साथ ही साथ यह कितनी आनन्द दायक बात है कि सूर्य्य पृथ्वी से बहुत अधिक दूर है अन्यथा ग्रीष्म ऋतु मे रहना दुस्सह हो जाता है।

दूरी के विषय मे एक विचित्र बात यह है कि यह केवल काल तथा अवसर पर निर्भर है। मान लो कि तुम एक शहर से तीस मील की दूरी पर हो और वहां तक पहुंचने के लिए केवल एक बैलगाड़ी ही काम में आसकती है तो यह दूरी पृथ्वी और चन्द्रमा के अन्तर के समान प्रतीत होगी। परन्तु यदि तुम्हारे पास एक बढ़िया घोड़ों की जोड़ी हो तो उस शहर तक पहुँचना केवल एक दिन का काम है। यदि तुम्हारे पास एक अच्छी मोटर हो, तो वहां तक पहुँचना केवल प्रातःकाल की सेर है; और यदि एक वायुयान हो, तो शहर को ऐसे समझिगे जैसे अगला मील का पत्थर हो।

प्रत्येक वस्तु की तरह, दूरी भी एक दूसरे से तुलना कर के ही समझ मे आसकती है। लन्दन न्यूयार्क से काफी दूर है परन्तु क्वेक लिवरपूल से उतना दूर नहीं। परन्तु यदि एक मार्ग पैदल

चल कर समाप्त किया जाय और दूसरा वायुयान द्वारा, तो पहिली दूरी दूसरी से कई गुनी अधिक हो जाती है।

दूरी पर विचार करने का एक और विचित्र मार्ग है। एक विद्यार्थी ने एक लेखक से एक समय कहा "जलयान के द्वारा एक अंग्रेज और एक भारतीय एक दूसरे से बहुत दूर होगये हैं।" उसका क्या तात्पर्य था? प्राचीन समय में अंग्रेज यात्रा करने के पश्चात् भारत से बहुत काल के बाद वापिस जाते थे जिसका यह परिणाम होता था कि वे भारत में भारतीयों के साथ बहुत समय तक रहते थे और एक दूसरे से भली भाँति परिचित होजाते थे और साथ ही साथ दोनों में ज्ञान के लिये प्रेम बढ़ जाता था। परन्तु अब चूंकि यात्रा में बहुत थोड़ा समय लगता है, अंग्रेज प्रतिवर्ष अपनी मातृभूमि को वापिस चले जाते हैं जिसके फल स्वरूप वे भारत को अपना घर नहीं समझते, जिसके कारण अंग्रेज और भारतीयों के हृदय एक दूसरे से बहुत दूर होगये है।

यह हार्दिक दूरी विचारनीय है। तुम एक मनुष्य को वर्षों से जानते हुए भी उससे भलिभांति परिचित न हो। एक कोई ऐसी वस्तु है जिसके द्वारा वह तुमसे पृथक रहता है। परन्तु साथ ही साथ यह भी सम्भव है कि तुम एक मनुष्य से पहिली बार के केवल आधा घंटे के वार्तालाप से ही उसके विषय मे हर एक बात का पता लग जाय। उसमें कोई ऐसी शक्ति है जिसके द्वारा तुममें और उसमें अन्तर नष्ट होजाता है। यह

शक्ति भयानक नहीं है। ऐसी शक्ति जो दो आत्माओं की आपस की दूरी नष्ट करता है, घनिष्ठ प्रेम है। और अपना कार्य सफलता पूर्वक समाप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि वह शक्ति निस्वार्थता से भरी हुई होनी चाहिये।

इस धार्मिक दूरी का एक और गुण है जो अत्यन्त दिलचस्प है। एक अज्ञान पुरुष और मानुषिक जीवन का सर्वोच्च आनन्द अकथनीय है। ब्रिटिश विश्विद्यालय के एक विशाल पुस्तकालय में खड़ा हुआ एक जङ्गली पुरुष उन पुस्तकों के आनंद और सौन्दर्य से उतना दूर होगा जितना कि देहली की एक मक्खी न्यूयार्क से। एक बच्चा जिसने पढ़ना अभी आरम्भ ही किया हो, एक ऐसी वस्तु तैयार कर रहा है जिसके द्वारा उसका दूर २ की वस्तुओं से घनिष्ठ सम्बन्ध होगा। वह चाहे निर्धन हो, फिर भी सोलोमन (Solomon) से धनी है; वह चाहे निर्बल हो फिर भी सेम्सन (Samson) से बलवान है; वह चाहे अनाथ हो, फिर भी राजाओं का मित्र है। जैसे जलयान और वायुयान भौमिक अन्तर को कम करते हैं, उसी प्रकार शिक्षा धार्मिक अन्तर को दूर करती है।

विश्व राजनीति का एक महान शब्द

आधुनिक काल में शब्द 'दूरी' जगत की राजनीति में मुख्य शब्दों में से एक है। इङ्गलैण्ड (England) के अधिकतर निवासी यह चाहते हैं कि यूरोप महाद्वीप के निवासी युद्ध का

नाम भी न लें, घृणा त्याग दें, कठिन परिश्रम में लीन हो जावें और आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करें। परन्तु फ्रान्स (France) में कुछ पुरुषों का मत है "हां यदि तुम्हारे और जर्मनी के बीच में उत्तरी सागर न होते, तो तुम कुछ और ही कहते। यदि शत्रु तुम्हारे द्वार पर बैठा हो तुम्हारा हृदय क्या कहेगा ?"

इस विरोध के उत्तर में हम जो कुछ कहना चाहते हैं उस से स्पष्ट है कि मनुष्य का मस्तिष्क शारीरिक दूरी को छोड़ कर आत्मिक दूरी की ओर आकर्षित होता जा रहा है। अंग्रेज इन फ्रांस (France) के निवासियों से यह कहना चाहते हैं कि "यह सत्य है कि तुम हम से अधिक जर्मनी के समीप हो और तुम्हारी चिन्ताओं के साथ हमारी पूर्ण सहानुभूति है; परन्तु हमारा यह मत है कि आत्मिक विरोध के कारण तुम्हारी समीपता और भी दुःखदायी है। यदि तुम आपस में मित्रता के भाव उत्पन्न कर लो तो यह आत्मिक विरोध नष्ट हो जायगा जिसके फलस्वरूप जर्मनी की निकटता तुम्हें न खटकेगी।"

यह राष्ट्र संघ में विश्वास रखने वालों के विचार हैं। हम तो यह कहते हैं कि युद्ध केवल उन राष्ट्रों में होता है, जिनकी आत्माएँ एक दूसरे से बहुत दूर हैं और यदि किसी प्रकार यह दूरी नष्ट हो जाय तो आशा है कि इस पृथ्वी पर शान्ति का सिंहासन उतर आये और मनुष्यों में एक दूसरे के प्रति सहानुभूति उत्पन्न होने लगे। हमारा तर्क यह है कि यदि रेल, जलयान, वायुयान, तार तथा बे तार के तार भौमिक दूरी को

नष्ट कर सकते हैं, तो यह भी सम्भव है कि मनुष्य की आत्मा यदि उन्नति के मार्ग का अनुसरण करे तो यह आत्मिक दूरी भी नष्ट हो जाय और जगत में शान्ति स्थापित हो जावे।

उन तारों का प्रकाश, जो लाखों वर्ष हुए नष्ट हो गये

यही विचार सत्य धर्म में पाया जाता है। ऐसे भी मनुष्य हैं जिनका कहना है कि "यह मानना कितनी अज्ञानता है कि परमेश्वर हमारे इस छोटे से नक्षत्र की, जो कि ईथर (Ether) के महासागर में एक कण के बराबर है, कोई चिन्ता रखता है। तारों के आपस के अन्तर का ध्यान करने से हमें तो यह विश्वास होता है कि इस विशाल सृष्टि में हमारा कोई स्थान नहीं है।

"तारे, इस छोटी सी पृथ्वी से इतनी दूर हैं कि उनका सम्पूर्ण प्रकाश बारह गज की दूरी पर रक्खी हुई एक मोमबत्ती की तरह है। सब से समीप तारा सूर्यचक्र के व्यास से तीन सहस्र गुना दूरी पर है। तनिक इसकी ओर ध्यान दो; २००,००० वर्ष कितने ही लाखों मील के सामने हैं। बहुत से तारे, जो हम आकाश में देखते हैं, लाखों वर्ष हुए नष्ट हो गये होंगे परन्तु उनका प्रकाश हम तक ईथर के द्वारा अभी तक पहुँच रहा है क्योंकि उन किरणों की यात्रा पृथ्वी के निर्माण होने से पूर्व ही आरम्भ हो गई थी। और फिर भी मनुष्य परमात्मा के विषय में विचार करते हैं और मृत्यु के पश्चात् जीवन की कल्पना करते हैं।

परमात्मा ही इस सृष्टि की आत्मा तथा निर्माता है

धर्म इन मनुष्यों को उत्तर देते हुए यह प्रश्न करता है 'तुम किस प्रकार स्वर्ग में पहुँच कर सूर्य चक्र का व्यास ज्ञात करते हो किस प्रकार सूर्य को नापते हो, किस प्रकार नक्षत्रों की तोल मालूम करते हो किस प्रकार अदृश्य तारों के स्थान निश्चित करते हो ? यह सब यन्त्रों द्वारा किये जाते हैं। तुम ऐसे यन्त्रों का आविष्कार करते हो, जिनमें यह विशाल अन्तर कम हो जाते हैं, इसी प्रकार हम प्रेम और प्रार्थना द्वारा, प्राणी और सृष्टि निर्माता के बीच का अन्तर नष्ट करते हैं। हमारी पृथ्वी चाहे छोटी हो परन्तु यह सृष्टि का एक भाग है। चाहे एक ७० वर्ष पुराना ही मनुष्य क्यों न हो, परन्तु उसके एक मस्तिष्क है और वह भी वास्तविक है। और मस्तिष्क के अतिरिक्त कौनसी वस्तु वास्तविक है ? कुछ नहीं; दूरी भी नहीं।

इससे यह परिणाम निकलता है कि मनुष्यों का अब यह विश्वास नहीं है कि परमात्मा सर्वशक्तिमान होते हुए भी चूँकि हम से बहुत दूर है, वह न तो हमें देखता है और न हमारी चिन्ता रखता है। हम उसे सम्पूर्ण सृष्टि की आत्मा समझते हैं। और यह हम खयाल करते हैं कि चाहे हम अपने हृदय के विचार और हृदय की इच्छाओं को किसी से न कहें, फिर भी वे परमात्मा के कानों तक पहुँच जाते हैं और चाहे हम उसके बताये हुए मार्ग का अनुसरण न करें, फिर भी वह हमारी चिन्ता रखता है।

परमात्मा के ऐश्वर्य का विचार विज्ञान के युग से पूर्व ही मनुष्यों को पता था।

सृष्टि के निर्माता और जीव में केवल पाप के ही कारण कुछ अन्तर है। परन्तु वह अन्तर भी नष्ट हो सकता है यदि हृदय अपने किए हुए पर विचार करे।

दूरी केवल उनके लिये है जो बहुत दूर हैं। हमारे साहित्य की ओर ध्यान देते हुए कालिदास और आधुनिक कवियों मे विशेष अन्तर नहीं, कवियों और गणितज्ञों के लिये पृथ्वी और आकाश मे कोई अन्तर नहीं। जो भलमंमाहत से प्रेम करते हैं, उनके लिये मनुष्य और परमात्मा में कोई अन्तर नहीं। जैसा ईन्सटीन (Einstein) आदि विज्ञानवेत्ताओं ने सिद्ध कर दिया है, अन्तर का अन्दाजा केवल तुलना से हो सकता है। यूरोप के एक साधारण निवासी और अफ्रिका के एक साधारण निवासी मे बहुत अन्तर है परन्तु वह अन्तर उतना अधिक नहीं जितना कि योरोप के उस निवासी और केल्विन (Kelvin) या पेस्टूर (Pasteur) मे है। अन्तर का नाश करने के लिए अज्ञानता को दूर करना चाहिये। हमारे मल्लाहों ने उस अज्ञानता को दूर कर दिया है जिसके कारण जङ्गली तथा असभ्य पुरुष और स्त्री वृक्षों के नीचे निवास करते थे, हमारे अन्वेषकों ने उस अज्ञानता को दूर कर दिया है, जिसके आधार पर मनुष्य तार तथा टेलीफोन पर विश्वास करते थे; हमारे डाक्टरो ने उस अज्ञानता को नष्ट कर दिया है जिससे मनुष्य जादू के फन्दे में फँसे हुए थे और हमारे विचारनाग्र पुरुष उस अज्ञानता को

दूर करने का प्रयत्न कर रहे हैं जिसके द्वारा राष्ट्रों में एक दूसरे के प्रति घृणा, द्वेष तथा भय के बीज सदैव उपजते रहते हैं।

प्रेम और ज्ञान प्रत्येक प्रकार के अन्तर पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। इस शब्द का अर्थ है "भिन्न २ स्थानों पर खड़ा होना।" यह मनुष्य के मस्तिष्क की व्यवस्था प्रकट करता है। यदि वह व्यवस्था प्रेम और अभिलाषा की हो, तो मनुष्य में एक दूसरे के प्रति सद्भावों का उत्पन्न होजाना प्राकृतिक ही है।

विशाल अन्तरों का विचार उस मस्तिष्क को चिन्तित नहीं कर सकता जिसको यह विश्वास है कि अन्तर केवल मानुषिक सृष्टि है। एक तत्वशास्त्रज्ञ एक ज्योतिर्विज्ञानिक से यह सुनता है कि पृथ्वी दो हजार लाख मील दूर दो कोनों तक यात्रा करती है। वह रसायन से यह सुनता है कि एक सीधा रेखा की एक इञ्च जगह को घेरने के लिये लाखों परमाणु (Atoms) की आवश्यकता पडेगा और इस प्रत्येक कण में बहुतेरे विद्युतांश (Electrons) हैं, जिनको जगह बदलने के लिये इतना स्थान है जितना कि पृथ्वी को आकाश मे। और वह मनुष्य इन विचित्र बातों को सुनकर किञ्चितमात्र भी आश्चर्य में नहीं होता क्योंकि वह सम्पूर्ण जगत को मस्तिष्क की सृष्टि समझने लगा है।

अतएव, एक शान्त हृदय से वह विशाल तथा छोटी वस्तुओं को देखता है परन्तु उसका यह विचार नहीं है कि प्रत्येक वस्तु का एक दूसरे से अपरिमित अन्तर है परन्तु उसका दृढ़ विश्वास है कि सब वस्तुयँ मिलकर एक ही हैं।

सप्तम अध्याय

स्थान

बच्चे आरम्भ में गेंद या एक पत्थर के टुकड़े से खेलते हुए यह देखते हैं कि उनमें कितनी दूर फेकने की शक्ति है। एक और भी अच्छा खेल है परन्तु वह बहुधा खेला नहीं जाता, वह है— एक मनुष्य अपने विचारों को कितनी दूर फेंक सकता है। इस खेल का भी अनुभव करो और फिर यह प्रतीत होजायगा कि इन दोनों प्रकार के खेलों में कितना कम अन्तर है।

उदाहरणार्थ, शब्द 'स्थान' को लीजिये। तुम इस शब्द से भी अन्य शब्दों की भाँति परिचित हो, परन्तु क्या तुम्हारे मस्तिष्क ने कभी इस शब्द पर ध्यान पूर्वक विचारने के लिए दो मिनट व्यय किये हैं। अधिक विचार करने के पूर्व, अपने नेत्र एक क्षण के लिए बन्द करलो और इस शब्द का अपने मनमें दो तीन बार उच्चारण करो और फिर देखो कि तुम अपने विचार इस वस्तु में, जिसको स्थान कहते हो, कितनी दूर तक लेजा सकते हो।

सम्भव है कि तुम अपने विचार एक इञ्च दूर भी नहीं लेजा सकोगे वरन् जहां हो वहीं स्थिर रहोगे, जैसे एक सरेश की गेंद कितना ही फेंकने का प्रयत्न करने पर, हाथ पर चिपट जाने के पश्चात् नहीं छूट सकती। स्थान ! यह क्या है ? क्या ऐसी

भी कोई वस्तु है ? यदि है तो यह एक ऐसी वस्तु है कि कोई भी मनुष्य उसे नहीं समझ सकता।

कुछ दिन हुए, एक दशवर्षीय चतुर बालिका से हमने यह प्रश्न किया "शब्द स्थान का प्रयोग करते समय तुम्हारा क्या तात्पर्य होता है ?" उस नन्हीं सी बालिका ने उत्तर दिया "अपने मौजे का छिद्र।"

उत्तर अनुचित न था। शब्द 'स्थान' का प्रयोग करते समय हमारा बहुधा तात्पर्य दो वस्तुओं में अन्तर से होता है। हम कहा ही करते है कि अमुक पुरुष के दोनों नेत्रों के बीच मे अधिक स्थान है, अथवा इस कमरे के द्वार और खिडकी के बीच का स्थान इतना कम है कि एक बिल्ली भी भली प्रकार नही भूल सकती।

परन्तु एक प्रकार का और स्थान है जो बहुत दूरियों का अन्तर है। एक ऐसे प्रकार के स्थान के विषय में हम वास्तव मे क्या जानते हैं। ऐसे दूर स्थान पर, जिसको मनुष्य नापने मे असमर्थ है, अपने विचारों को लेजाना कोई सुगम कार्य नहीं।

एक प्रश्न के द्वारा ही, हमे अपने ज्ञान का पता लग जायगा। "हम स्थान के विषय में क्या जानते हैं ? "हमें ज्ञात है कि भिन्न २ राष्ट्र के मनुष्यों ने एक ऐसी भाषा का अविष्कार किया है, जिसको उनके अतिरिक्त और कोई भी नहीं समझ सकता और केवल इसी रहस्य मयी भाषा में शब्द स्थान का अर्थ कुछ समझ में आसकता है। इस शब्द के विषय में प्रत्येक मनुष्य

थोड़ा बहुत विचार कर सकता है। परन्तु बिना गणित की रहस्यमयी भाषा का ज्ञान किये हुए कोई भी मनुष्य स्थान के विषय में इतनी स्वतन्त्रता पूर्वक तथा स्पष्टता से विचार नही कर सकता, जैसे कि क्रिकेट के विषय मे।

अब, इसके द्वारा हमे एक और नई बात मालूम होती है। इससे हमें ज्ञान होता है कि साधारण भाषा जीवन के रहस्यों को समझने में असमर्थ है; उसके द्वारा हम केवल अपने विचार प्रकट ही कर सकते हैं। एक ज्योतिर्वैज्ञानिक (Astronomer) हमें तारों के विषय मे कुछ भी नहीं बतला सकता था, यदि उसने उन आकाश के प्राणियों से गणित भाषा मे वार्तालाप न किया होता। परन्तु कवि केवल उत्तेजित करने वाली भाषा का प्रयोग करके हमें आकाश प्राणियों के रहस्य तथा गुण और गौरव का ज्ञान करा सकता है।

कुछ मनुष्यों का मत है कि स्थान जैसी कोई वस्तु नहीं— यह केवल मनुष्य के मस्तिष्क मे केवल एक विचार ही विचार है। कुछ वर्ष हुए उस समय तक विश्व के बहुत से योग्य पुरुषोंका यही विचार था। परन्तु अब परिवर्तन हो गया है और तत्व-शास्त्रज्ञ (Philosopher) अब यह कहते हैं कि स्थान का सम्बन्ध समय के साथ है और यह सृष्टि असीम होते हुए भी Finite है।

तारों से भरे हुए आकाश के द्वारा विचार करना

परन्तु स्थान एक ऐसी वस्तु है जिसका हमे ज्ञान हो सकता है और यह देखने योग्य है कि एक ऐसे विशाल रहस्य के विषय

में उत्पन्न हुए विचार साधारण भाषा में कहां तक प्रकट किए जा सकते हैं।

सम्भव है कि तुम यह कहने लगो कि "जब मैं स्थान के विषय को समझ ही नहीं सकता, तो उसके विषय में विचार करने से क्या लाभ ? गणित से सम्बन्ध रखने वाली वस्तु के विषय में विचार करने की भाषा का किस प्रकार प्रयोग हो सकता है ? "इसके उत्तर में हम यह कह देना अनुचित नहीं समझते कि गणित का किसी वस्तु से सम्बन्ध नहीं है। यदि कोई मनुष्य सामुद्रिक यात्रा का कोई पदाधिकारी नहीं है, तो क्या यह आवश्यक है कि वह लहरों में तैरने के सुख से वञ्चित रक्खा जावे ? कदापि नहीं। सङ्गीत विद्या की ओर विचार करो। यह हमें अत्यन्त आनन्ददायक प्रतीत होती है और यदि कोई मनुष्य इसे विज्ञान का चोग़ा पहिना कर हमारे मनोविनोद की यात्रा को कम करना चाहता है, तो हम उसकी हँसी उड़ाते हैं। मनुष्य के विचारने की भाषा का मानुषिक जीवन की प्रसन्नता से गहरा सम्बन्ध है। आओ हम उसी भाषा के द्वारा स्थान के विषय में विचार करें।

परमात्मा की एक अति मनोहर परिभाषा है जिसके अनुसार "उसका केन्द्र प्रत्येक स्थान पर है; परन्तु व्यास कहीं नहीं। एक बहुत बड़ा गोलाकार को ध्यान में लाओ। उसका केन्द्र तुम्हारा हृदय है। अपने विचार उस केन्द्र पर रख दो और अपने विचारने की शक्ति को दूर जाने की स्वतन्त्रता दे दो,

ताकि वह एक ऐसा बिन्दु ढूंढले जहां पर एक गोलाकार खिच जावे।

तुम्हारी शक्ति शुक्र (Venus) या कार्तिक (Mars) तक पहुँच जाती है परन्तु वहां स्थिर नहीं रह सकती क्योंकि वहां से दूर शनि (Saturn) है। यहां से उड़कर वह विचारने की शक्ति वहां तक जावेगी परन्तु केन्द्र हृदय में ही रहेगा और मार्ग में अनेक नक्षत्र तथा सूर्य्य मिलेंगे जो कि पृथ्वी पर दूरबीन (Telescope) से भी स्पष्ट नहीं दिखलाई पड़ते। परन्तु हमारे ज्ञान की अन्तिम पहुँच पर भी कोई रुकावट नहीं दिखलाई पड़ती—मार्ग अब भी खुला हुआ है। आशा नहीं कि गोलाकार पूरा हो जावेगा।

जहां ध्यान एक असीम स्थान में दृढ नहीं रह सकता

परन्तु मान लो कि अन्त मे यदि तुम्हारी विचारने की शक्ति एक दीवाल अथवा चट्टान के आजाने से रुक जाती है, तो तुम अपने आप कहने लगोगे कि "इस दीवाल के दूसरी ओर भी अवश्य कुछ होगा" या मुझे आश्चर्य है कि इस चट्टान से आगे क्या है?" यह तो हमें विश्वास है ही कि कोई भी विशेष वस्तु शून्यता में समाप्त नहीं हो सकती और शून्यता जैसा कोई शब्द ही नहीं है।

कवि इस शब्द स्थान का यही अर्थ समझ कर प्रयोग करते हैं। इस शब्द से उनका तात्पर्य एक असीम मैदान से है, जहां पर विचार दृढ़ नहीं रह सकता। उन्हे इस बात का ज्ञान नहीं कि यह स्थान सदैव उसी ईथर (Ether) से भरा रहता है। वे हमें यह नहीं बतलाते कि उन्हें इस विषय का कुछ ज्ञान है अथवा नहीं; परन्तु वे हमें विश्वास दिलाते हैं कि इस स्थान की असीमता का विचार करना इससे सुगम है कि उस स्थान के चारों ओर सीमाएँ हैं, जिसके आगे कुछ नहीं है।

कुछ नहीं के विषय में कौन विचार कर सकता है? कौन मनुष्य ऐसे गोल आकार को ध्यान मे ला सकता है, जिसके बाहर सर्वशक्तिमान परमात्मा की शक्ति काम नहीं देती? ऐसा कौन प्राणी विचार कर सकता है कि सृष्टि का निर्माता एक द्वार पर खड़ा हुआ खोलने के लिये आवाज दे रहा है, परन्तु वह द्वार सदैव के लिए उसके लिए बन्द है, परन्तु किसने बन्द कर रक्खा है?

कवि की दृष्टि और सृष्टि के रहस्य

जब मनुष्य यह कहते है कि स्थान के अथवा परमात्मा के विषय में वास्तविक बुद्धिमत्ता से विचार करना असम्भव है, तो हमारा उत्तर यह है कि हम में से कुछ के लिए उनके विषय में विचार न करना असम्भव है। हमारा मस्तिष्क यह सोचने मे सर्वथा असमर्थ है कि सृष्टि का आरम्भ स्थान से हुआ या

जीवन से। हमारी प्रकृति ही ऐसी है कि हमारे ध्यान में ऐसा कभी नहीं आ सकता कि सृष्टि के पूर्व कुछ भी नहीं था। स्थान! क्या यह गोली ईथर (Ether) से भरा हुआ है? परन्तु यह गोला किसमें तैर रहा है? इस हमारे सम्पूर्ण विशाल जगत के बाहर भी ईथर है; तारों से परे भी ईथर (Ether) है। यदि ईथर का दूसरा किनारा, सृष्टि के चारों ओर एक गोला बना रहा हो, तो उससे परे क्या है? तुम्हारा कहना है कि यह नियमित है परन्तु फिर भी विवश हो कर कहना पड़ेगा कि यह असीम है। कवि का उत्तर है कि यदि सृष्टि नियमित है तो उसके चारों ओर सीमा है और यदि वह असीम है तो अनियमित है। कवि अपनी विचार शक्ति का प्रयोग करता है और तत्वशास्त्रज्ञ (Philosopher) अपनी बुद्धि से काम लेता है। इस विषय में कवि का अनुसरण करना अधिक सुगम है।

क्योंकि स्थान के विषय में तुम अपने विचार स्पष्ट भाषा में प्रकट नहीं कर सकते, इसलिए यह आवश्यक नहीं कि उस दिशा में तुम अपने विचार दौड़ाना ही छोड़ दो। जब कोई मनुष्य अपने विचारों से कहता है कि "तुम उन विषयों पर काम करोगे, जिनको मैं समझता हूं" तो समझ लीजिये वह अपना कर्तव्य पूरा कर रहा है।

अपने मस्तिष्क से आश्चर्य का विचार निकाल देने से आपत्ति

अनेक विज्ञान के नेताओं ने अपने आपको वृद्धावस्था में अत्यन्त हीन तथा शोचनीय दशा में पाया है क्योंकि युवावस्था में वे काव्य और सङ्गीत से बिलकुल प्रेम ही न रखते थे और अपनी बुद्धिमत्ता के कारण उन्होंने विचार शक्ति और आश्चर्य को अपने मस्तिष्क में स्थान ही नहीं दे रक्खा था। एक और विचारणीय विषय है और वह है कि वैज्ञानिक अन्वेषण के लम्बे मार्ग पर प्रत्येक थोड़े से गजों की दूरी पर ऐसे सिद्धान्त पाये जाते हैं जो वेद के समान सत्य समझे जाते थे परन्तु अब उनमें भी सन्देह होने लगा है। इससे यह सिद्ध होता है कि केवल मनुष्य की बुद्धि सत्य के मार्ग पर नहीं लेजा सकती।

हमें विज्ञान के वशीभूत नहीं हो जाना चाहिये। आधुनिक विज्ञान भी गलत हो सकता है। सब से बड़े वैज्ञानिक के सिद्धान्त भी सम्भव है पचास वर्ष पश्चात असत्य सिद्ध हो जावें यहां तक कि उस महान् वैज्ञानिक सर आइज़क न्यूटन (Sir Isaac Newton)को भी असत्य का उपदेशक समझा जाने लगा है। यह कोई भी विश्वसनीय रूप से नहीं कह सकता कि वास्तविक सत्य क्या है। हमारे सही से सही विचार के फल और सत्य अन्वेषण सत्य के क्षेत्र में केवल कुछ अंश में विजय है।

यह सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि हम केवल वस्तु का अंश ही समझने की योग्यता रखते है। यदि हमें पृथ्वी के विषय में पूरा ज्ञान है, तो वह ज्ञान, सृष्टि के ज्ञान का एक बहुत छोटा सा अंश है। इन सब अंशों का योग करने से प्रतीत होगा कि योगफल एक बहुत छोटी राशि है।

सृष्टि मनुष्य का आत्मा के मनोविनोद का स्थान है

गोयट (Goethe) ने एक स्थान पर लिखा है कि प्रत्येक मनुष्य से, जो सृष्टि को समझाने का प्रयत्न करता है, उसका कहना है "प्रिय मित्र! तुम और मैं समान अवस्था में पड़े हुए है; किसी विशेष विषय मे तुम ज्ञानी तथा शक्तिवान् हो सकते हो परन्तु पूर्ण सृष्टि का जो अंश तुम समझ सके हो, उतना ही अंश मैं समझ सका हूँ।" सम्पूर्ण सृष्टि प्रत्येक मनुष्य की आत्मा के मनोविनोद के लिए स्थान है।

अपनी विचार शक्ति उत्पन्न करो। निर्मल महासागर पर चन्द्रकिरणों के सौन्दर्य का अनुभव करो, चाहे तुम्हें पूर्ण रूप से विश्वास हो कि चन्द्रमा एक अजीव और शून्य जगत है। सूर्योदय की निराली छटा का अनुभव करो, गुलाब के पुष्प की सौन्दर्यता का और सङ्गीत की उत्तेजना का अनुभव करो; काव्य के गौरव और गृह सुख के मूल्य का अनुभव करो, चाहे तुम्हे विज्ञान के सिद्धान्तों का विशेष ज्ञान हो और तुम सृष्टि के विचार रेखागणित की भाषा मे परिणित कर सकते हो।

यदि तुम कमरे का द्वार बन्द करके ईन्सटीन (Einstein) के सिद्धान्तों से भरी हुई पुस्तक का अध्ययन करने लगो तो स्थान के समान एक शब्द तुम्हें पागल बना देगा; परन्तु वही शब्द तुम्हारे हृदय में वीणा की एक झन्कार उत्पन्न कर देगा यदि तुम शुक्लपक्ष की एक रात्रि को चान्दनी के प्रकाश में एक वाटिका में जाओ और तारागणों से भरे हुए आकाश की ओर अपनी आंखें उठाकर देखो और अपनी आत्मा में यह विचार करलो कि किसी प्रकार की कोई भी भाषा सृष्टि के रहस्यों को पूर्णतया नहीं बतला सकती।

यदि तुम्हारी इच्छा है तो अपने मोजे के छिद्र को स्थान का एक भाग कह सकते हो। परन्तु इतनी अज्ञानता न करना कि उस छिद्र को सम्पूर्ण स्थान ही समझने लग जावो। तुम यह विचार कर सकते हो कि यह भौमिक सृष्टि असीम नहीं है, परन्तु यह कभी ध्यान में भी न लाना कि इस सीमा से बँधी हुई सृष्टि के बाहर कुछ भी नहीं है।

एक विशाल रहस्य और उसका मस्तिष्क के ऊपर प्रभाव

स्थान का विचार उस प्रकार करो जैसे अविनाशी का, जिसका न केवल आरम्भ और अन्त ही नहीं होता, परन्तु उसकी प्रकृति से आरम्भ अथवा अन्त होना ही नहीं चाहिये। अपने आश्चर्य के विचार में शक्ति डालने के लिये स्थान के विचार

का प्रयोग करो। अपनी विचार शक्ति मे उन्नति करने के लिए उसका प्रयोग करो, ताकि तुम अपने आपको एक अनन्त जीवन का उत्तराधिकारी समझने लग जाओ। स्मरण रक्खो कि तुम एक ऐसे गोले के केन्द्र पर खड़े हुए हो, जिसके घेरे तक पहुंचने के लिये मनुष्य में शक्ति नहीं है। यह भी स्मरण रक्खो कि स्थान के इस असीम राज्य में वही कानून जो इस सृष्टि मे प्रयोग किये जाते, काम में आते हैं। इस पृथ्वी के एक बहुत विचार करने वाले पुरुष ने कहा था कि इन्हीं कानूनों के द्वारा मनुष्य के मस्तिष्क मे बुद्धि उत्पन्न होती है और हृदय को सन्तोष तथा हर्ष।

प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक वस्तु पर तथा प्रत्येक कार्य पर शक्ति का शासन है। और इसी शक्ति के द्वारा चाहे यह कितनी बलवान् क्यों न हो मातृ हृदय पर शासन होता है और पुष्प और पक्षियो मे सौन्दर्य दिया जाता है। स्थान हमारे ऊपर बोझ नहीं डालता; यह हमारे मस्तिष्क मे नवीन ज्योति उत्पन्न करता है और हमारे विचारों को दृढ़ बनाता है।

अपने जीवन के अन्त काल तक कवि का अनुसरण करो और देखो कि इस स्थान मे, इस आकाश में कितनी दूर तक तुम्हारे विचार पहुँच सकते हैं।

अष्टम अध्याय

संख्या

पाठशालाओं में पढाये जाने वाले विषयों में से अङ्कगणित सबसे अधिक मंदमती है। फिर भी उसके अध्ययन का सम्बन्ध जीवन के एक बड़े रहस्य से है।

वर्णमाला के आविष्कार से पूर्व अङ्कों का आविष्कार हुआ; अ, इ, उ के आगमन से पूर्व १, २, ३ का आगमन हुआ। एक बच्चे ने आम शब्द उच्चारण करने से पूर्व अपने पैर के अंगूठे गिनना सीखा था। हम यह कह सकते हैं कि मनुष्य का सबसे प्रथम बुद्धिमता का कार्य यह ज्ञान था कि वस्तुएँ भागों मे विभाजित हो सकती है। फिर भी वर्णमाला का बहुत काल हुए आविष्कार हुआ था और मनुष्यों ने ऐसी २ पुस्तकें लिखीं जो अमर हैं; अङ्कों से लाभ बहुत काल के पश्चात् हुआ।

पाइथैगोरास (Pythagoras) मिश्र के निवासियों का ऋणी था। वह पुजारियों के पास गया था न कि उनके देवताओं की पूजा करने के लिए परन्तु उनके रहस्य में गुप्त ज्ञान के कण ढूँढ़ने के लिए।

संख्या का अर्थ! हम कहते है कि अमुक पुस्तक की पृष्ठ संख्या इतनी है, कि अमुक क्षेत्र इतने एकड है, कि अमुक जहाज इतने मन भारी है। हम तारे गिनते है; हम विद्युत की जो लैम्प

में जलाई जाती है, संख्या प्रतीत करते हैं। हम अमुक खिड़की के बनाये हुए रन (Runs) की संख्या करते हैं। हम अपने शरीर की हड्डियाँ गिनते हैं, अपने मुँह के दांत और हाथों की अंगुलियाँ गिनते हैं।

एक ड्रिल सिखाने वाला कहता है "गिन जाओ" और खडी हुई पल्टन अपना शिर हिलाती हुई कह डालती है, एक, दो, तीन..........हम एक अनजान शहर में एक भरे हुए होटल में जाते हैं तो हमारे साथ एक मनुष्य की तरह व्यवहार नहीं होता परन्तु संख्या के अनुसार। हम रुपया चुकाते समय नोटों की तथा सिक्कों की संख्या गिन कर देते हैं। यदि कोई मनुष्य किसी कार्य में विघ्न डालता है तो वह अपने अनुकूल की बातों की संख्या को अपने विरोध की बातों की संख्या से तुलना करता है। एक लडका विज्ञान पर लिखी हुई एक पुरानी पुस्तक खोलकर पढ़ता है और उसे ज्ञात होता है कि वह तीन पसार की और पांच दिशाओं की एक विचित्र दुनियां में निवास कर रहा है। एक छोटा सा बच्चा आश्चर्य करता है कि उसके दो नेत्र हैं परन्तु केवल एक मुख।

हमारे प्रत्येक कार्य में संख्या का समावेश है। हमारे हृदय मे सदैव समय का ध्यान रहता है। घडी का लटकन सदैव बजता ही रहता है। हमारे विचार हमारे मस्तिष्क में अमुक संख्या में झूलते हैं। हम कदमों की कुछ संख्या के द्वारा चलते हैं। हमारे पलक उठते और गिरते है। हमारा श्वास दो प्रकार

का है। हमारे मुख से निकले हुए शब्द एकाइयां हैं, जिनका योगफल ज्ञात हो सकता है। हमारा मस्तिष्क दो भागों में विभाजित है। हम स्वयं तीन हिस्सों में विभाजित हैं—शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा।

यह सब संख्या के रहस्य का कुछ अंश है। मनुष्य ने विश्व की ओर देख कर कहा कि एक तो प्रकाश है, दूसरा अन्धकार; एक नर है, दूसरा मादा; एक स्थिर है; दूसरा गति में; एक सीधा है, दूसरा टेढा; एक दाँया है दूसरा बांया; एक अन्त है दूसरा अनन्त; एक अच्छा, है दूसरा बुरा। यह सब एक दूसरे का विरोध हैं और यही संख्या के रहस्य का प्रथम अनुभव था।

संख्या के ज्ञान से आश्चर्यजनक कार्य

संख्या के ऊपर मनुष्य के विचार से एक बहुत आश्चर्य जनक कार्य हुआ। सर्व प्रथम, एक वस्तु के टुकड़े किये गये जिससे यह ज्ञात हुआ कि वह वस्तु किन २ अंशों से मिलकर बनी है। एक वृक्ष, हाथी या चट्टान के देखने के या उसको एक वृक्ष हाथी या चट्टान समझने के स्थान में मनुष्यों ने अपने मन में यह विचार किया "ये वस्तुएँ किन किन अंशों से मिलकर बनी है ? एक वृक्ष हाथी से और एक हाथी चट्टान से क्यों भिन्न है ? इस प्रकार एक ऐसा क्रम आरम्भ होगया कि मनुष्य को यह भी विश्वास होने लगा कि प्रकाश की किरण भी अपने अंशों में विभाजित की जा सकती हैं और उनसे पता लग सकता

है कि ऐसी कौन २ सी वस्तुएँ हैं जिनसे ये किरणें बनती हैं और अब यह भी ज्ञात होगया है कि ऐसा कोई भी पदार्थ इस पृथ्वी पर नहीं है जो कि सूर्य मे न पाया जाता हो।

प्राचीन तत्वशास्त्रज्ञों का आरम्भिक कार्य

यह "विभाग की रीति" विज्ञान का अब एक अंश है। आधुनिक काल मे, कोई भी मनुष्य यह विचार नहीं करता कि कोई वस्तु अपनी सम्पूर्ण अवस्था मे भली भांति जानी जा सकती है। प्रत्येक समस्या के टुकड़े २ कर दिये जाते हैं और उसके अंशों की परीक्षा अलग २ की जाती है और इसके पश्चात् उस वस्तु का पूर्ण परिचय ज्ञात हो जाता है।

इस रीति के आगमन के पूर्व, प्रत्येक मनुष्य को जीवन की समस्या हल करने का स्वतन्त्र अधिकार था, जिस प्रकार उसकी इच्छा होती। यही कारण है कि सम्पूर्ण प्राचीन तत्वशास्त्र अन्दाजे से लगाए हुए है। एक मनुष्य अपनी इच्छानुसार चाहे जो कुछ कह सकता था। उसके दोष प्रकाशक केवल वे ही मनुष्य थे, जोकि उसको उसके शब्दों मे भूल बतलाते थे। ऐथिन्स (Athens) तक मे, जबकि अत्यन्त गौरवशाली था, मनुष्य और सृष्टि के सम्बन्ध मे कुछ सिद्धान्त ऐसे बुद्धि के विरुद्ध हैं कि जिन पर हमको हँसी आये बिना नही रहती। इस विभाग की रीति में जब संख्या का जन्म हुआ तो तत्वशास्त्रज्ञों को अपने अटकल लगाये हुये कार्य विज्ञान की संख्याओं के

अनुसार ठीक करने पड़े। यह कहने से कोई लाभ नहीं था कि पृथ्वी एक कछुए पर खड़े हुए हाथी के ऊपर रक्खी हुई है। दोष प्रकाशकों ने कहा कि यदि कछुवा या हाथी नहीं दिखला सकते तो कम से कम उस ज्ञान को तो बताओ, जिसके ऊपर इस बात का होना सिद्ध होजावे। सदियाँ व्यतीत होजाने के पश्चात् मनुष्य के लिए यह कहना असम्भव होगया कि, पृथ्वी चपटी और स्थिर है; विज्ञान ने सिद्ध कर दिया कि पृथ्वी का चक्र सूर्य के चारों ओर इस प्रकार घूम रहा है जैसे एक डोरे के किनारे पर बँधी हुई गेंद घूमती है।

वह रीति भी जिसके द्वारा यह सत्य प्रकट हुआ, संख्या की एक विजय है। गणित अङ्कगणित से उत्पन्न हुआ।

यूक्लिड ने पुल और भाप के इञ्जिन बनाने में किस प्रकार सहायता की ?

ईसा के जन्म से कोई तीन सौ वर्ष पूर्व एक यूनानी का जन्म हुआ, जिसका नाम यूक्लिडस था और जो अब यूक्लिड के नाम से प्रसिद्ध है। वह भी, पाइथैगोरास (Pythagoras), प्लेटो (Plato) और अरस्तू (Aristotle) की तरह, इस रहस्यमयी शब्द संख्या की विचित्रता पर मुग्ध होगया। परन्तु इस विचित्रता ने कुछ ऐसा कार्य कर दिखाया, जो उन तीनों में से एक भी न कर पाया था। उसकी बुद्धि एक ऐसे विषय की ओर लीन थी, जिसे अब हम गणित कहते हैं।

यह व्यक्ति ऐलेक्जन्ड्रिया (Alexanderia) में जाकर रहने

स्थान

लगा और वहां पर उसने तेरह भागों में एक बहुत बड़ी पुस्तक तैयार की। यह कहा जाता है कि बाइबिल के अतिरिक्त किसी भी पुस्तक की इतनी पूंछ नहीं रही। इस पुस्तक का नाम था:—अंश ('Elements)। इस पुस्तक में साधारण वार्तालाप की भाषा का प्रयोग किया गया था फिर भी वह एक निराली ही भाषा थी जिसे रेखा गणित की भाषा कहते हैं।

अन्य पुरुषों ने उस कार्य को करने का प्रयत्न किया था, जिसे इस महान व्यक्ति ने इतनी सफलता पूर्वक सम्पादन किया। परन्तु वह जगत के अन्य मनुष्यों से एक बात में बढ़ा हुआ था कि उसने गणित की टूटी हुई वर्णमाला के अक्षरों को एकत्र किया और उसकी एक ऐसी भाषा बनाई जिसको सम्पूर्ण मनुष्य जाति अति सुगमता पूर्वक समझ सके।

यह सब संख्या की भाषा के कारण ही है कि आज इतने बड़े २ पुल दिखलाई पड़ते हैं। यह सब अङ्कों की ही माया है कि लोहे के बड़े बड़े जलयान आंधी और तूफान का ध्यान न करते हुए पानी में तैरते हुए चले जाते हैं। यह जलयान उन इञ्जिनों से चलते हैं, जिनके कुछ लोहे के अंश तो एक इञ्च के सहस्रवें भाग तक सही होने चाहिये। इंजनियरिंग की (Ingineering) की सम्पूर्ण विजय ही यूक्लिड (Euclid) के सिद्धान्तों पर है और २००० वर्ष से जगत् भर के गणितज्ञ उस महान व्यक्ति के हाथ से लिखी हुई किसी भी बात को गलत सिद्ध नहीं कर सके हैं।

संख्या की भाषा जिसके द्वारा हम आकाश के रहस्य ज्ञात करते हैं।

यूक्लिड की एक महान विजय तो एक दूसरे मण्डल में है। रेखागणित की एक पूर्ण भाषा मनुष्य जाति को भेंट करके उसने सृष्टि की भाषा ही समर्पित करदी। अतएव एक ऐसे व्यक्ति को यदि अलौकिक कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। और किसी अन्य भाषा के द्वारा मनुष्य को आकाश के रहस्यों का ज्ञान नहीं हो सकता था। और किसी भाषा के द्वारा कोई वैज्ञानिक बृहस्पति अथवा यूरेनस (Uranus) से वार्तालाप नहीं कर सकता था। केवल अङ्कगणित के आधार पर ही प्रोफेसर रामसे (Ramsay) ने एक नई गैस आर्गन (Argon) ज्ञात की है। केवल श्रेष्ठ गणित के आधार पर ही लेवेरियर (Leverrier) और ऐडम्स (Adams) यह सिद्ध कर सके कि एक अज्ञात नक्षत्र यूरेनस (Uranus) को खींच रहा है और उन्होंने ज्योतिर्वैज्ञानिकों (Astronomers) को यह बतलाया कि वह इस दिशा में अपने दूरबीन (Telescope) को रक्खे और फिर ज्ञात हुआ कि वह नक्षत्र नैपच्यून (Neptune) था। ऐसी और कोई भाषा नहीं थी, जिसके द्वारा मनुष्य स्थान और समय के विषय में प्रश्न कर सकता और उनके उत्तर तत्वशास्त्रज्ञों (Philosophers) के पास ला सकता।

अब उस आश्चर्य का विचार करो, जो कि सर्व प्रथम अङ्क

का ज्ञान होने से मनुष्य को हुआ। इन अङ्कों के द्वारा एक ऐसी भाषा का जन्म हुआ है, जिसके द्वारा पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्य का मस्तिष्क परमात्मा की सृष्टि से वार्तालाप कर सकता है। जबकि इस भाषा का जन्म हुए थोड़ा ही काल व्यतीत हुआ था प्लेटो (Plato) ने कहा था कि सिद्ध होता है कि मनुष्य का जन्म अलौकिक है।

अंगुलियों पर गिनने से विशाल कार्य का सम्पादन

क्योंकि केवल इस साधारण भाषा के द्वारा ही मनुष्य शक्तिशाली सृष्टि के भेदों का ज्ञान उत्पन्न कर सकता था और चूँकि यह भाषा भी मनुष्य की ही बनाई हुई थी, अतएव उसका सृष्टि के साथ गूढ़ सम्बन्ध होगया। यह आश्चर्य कितना अधिक होता यदि वह मनुष्य आज यहां होता और गणित की चमत्कार से भरी हुई पुस्तकें पढ़ता और विशेष कर उन पुस्तकों के वह पृष्ठ, जिनमें लिखा हुआ है कि यूक्लिड (Euclid) गलत था, कि न्यूटन (Newton) गलत था और कि सम्पूर्ण सृष्टि एक बहुत बड़ा गोलाकार है।

यह सबसे बड़ी वस्तु है जो उस सर्वप्रथम मनुष्य के मस्तिष्क से निकली थी, जो अङ्गुलियों पर गिन २ कर कहा करता था एक, दो, तीन। परन्तु मनुष्य के इतिहास में अनेक प्रसिद्ध घटना उत्पन्न करने वाली वस्तुएँ उसी कार्य के आधार परहुई हैं।

विश्व व्यापार के विषय में तनिक विचार करो। यह सब अङ्कों का ही बना हुआ है। मनुष्य जाति का एक बहुत बडा भाग अपना काम करने का सम्पूर्ण जीवन गिनने में ही व्यतीत कर देता है। इस पृथ्वी पर सबसे अधिक असभ्य देश का भी एक अशिक्षित किसान ऐसा न होगा जिसको अङ्कों का ज्ञान न होगा। इग्लैण्ड के अर्थ सचिव (Chancellor of the Exchequer) की ओर जरा ध्यान दो जो कि एक पृष्ठ पढ रहा है, जिसमें लिखा हुआ है कि इङ्गलैंड अमरीका का अरबों रुपये का ऋणी है और फिर एक दक्षिणी समुद्र के द्वीप निवासी की ओर देखो जो कि अपने हाथ में मोती गिन रहा है या एक चीन के कुली की ओर देखो जो कि चाय के टोकरे गिन रहा हो। सम्पूर्ण जगत, हम कह सकते हैं, अङ्कों के द्वारा ही जीवन व्यतीत कर रहा है। बैंक के एक क्लर्क को इससे इतना अधिक काम नहीं पडता जितना कि एक किसान की पत्नी को, जो पाँच मील की दूरी पर जाकर एक गाँव की दुकान मे एक गज मलमल आधा सेर साबुन, एक छटांक तम्बाकू और दो कार्ड लेकर घर वापिस आती है।

विश्व धर्म में अङ्क का रहस्य

जगत के बडे बडे बीमे के दफ्तरों की ओर विचार करो। वे सब अंकों के ही बने हुए हैं। कुछ व्यक्ति मनुष्य के जीवन के विषय में कुछ संख्यायें एकत्र कर लेते हैं जिसको विवरण कहते हैं; और उस विवरण के आधार पर एक ऐसा नियम

बना देते हैं जिसके द्वारा बीमा करने वाले दफ्तर अत्यन्त सही हिसाब से काम कर सकते हैं। मध्य गति की ओर ध्यान देते हुए, मनुष्य कुछ विशेष फल ज्ञात कर लेते हैं और इसी रीति द्वारा राजनीति विशारद लगान का हिसाब लगाते हैं, एक रसायनज्ञ गैस के सिद्धान्तों में; कोई डारविन [Darwin] का अनुसरण करने वाला विकास के सम्बन्ध में जानी हुई बातों का अध्ययन करने में और एक विद्यार्थी मनुष्य के मस्तिष्क का अध्ययन करने में।

अन्तिमकार, अङ्क के रहस्य ने जगत के सम्पूर्ण धर्मों में स्थान प्राप्त कर लिया है। एक वृत्त अविनाश को प्रकट करता है और अङ्क सात पवित्र माना जाता है। अत्यन्त प्राचीन काल से यह रीति चली आती है कि मनुष्य अंक तीन के सामने शिर नवाया करते हैं क्योंकि यह पहिला अंक है, जिसका 'आरम्भ है, मध्य है और अन्त है। बहुत काल हुआ मनुष्य परमात्मा को 'एक' कह कर पुकारते थे और उनका यह कहना था कि मनुष्य का जीवन उस एक के पास बहुतों का वापिस चला जाना था। और हम अब भी कह सकते है कि यहाँ सबसे बड़ा धर्म है, जिसका मनुष्य जाति के एक बहुत बड़े भाग को विश्वास है; और वह यह है—यद्यपि सृष्टि के अंशों की संख्या समुद्र के किनारे पर पड़ी हुई बालू के कणों की संख्या से अधिक है, फिर भी वास्तव में वे एक ही हैं और वह एक स्वयं परमात्मा है।

नवम अध्याय

विश्वास

विश्वास एक ऐसा शब्द है जिसका पुनर्जन्म होगा। उसके दिन अभी समाप्त नहीं हुए। यह बिल्कुल सम्भव है कि एक दिन यह तुम्हारे भाग्य का शासनकर्ता बन बैठे और तुम्हारा जीवन और भी सुखमय तथा आनन्द दायक बना दे।

इस संकेत को समझने से पूर्व यह आवश्यक है कि तुम अपने मस्तिष्क में से यह विचार निकाल कर फैंक दो कि विश्वास हां में हां मिला देना है चाहे वह विषय समझ में ही न आया हो। चतुराई के पराजय हो जाने से विश्वास का कोई सम्बन्ध नहीं। एक ऐसा विषय जिसे तुम सिद्ध नहीं कर सकते और तुम्हारा विचार है कि संसार मे यही सबसे अधिक सत्य है—विश्वास कहलाता है; और उसी प्रकाश में कार्य करना भी विश्वास कहा जाता है।

मान लो कि तुम एक लड़के से कहते हो "एक मोटा कोट पहिनने से सर्दी नहीं प्रतीत होती" और वह तुम्हें उत्तर देता है कि "हां, मुझे इस बात में विश्वास है" और एक बहुत ठंडे दिन तुम उसको एक बहुत बड़ा और मोटा कोट पहिने हुए देखते हो और साथ ही साथ यह भी प्रतीत होता है कि ठंड के कारण वह सिकुड़ा जा रहा है और सम्भव है कि मृत्यु की भेंट हो जावे। तो तुम कहोगे कि उसने अपने विश्वास के

आधार पर कार्य नहीं किया। परन्तु मानलो कि कोई मनुष्य तुमसे कहता है "धनहीन और चिन्ताग्रसित मनुष्यों का दुःख दूर कर देने में जीवन व्यतीत कर देना अपने लिये धन एकत्र करने से कहीं अच्छा है।" और तुम अपने आराम दायक मकान से बाहर कोढ़ियों के पास चले गये और उन अभाग्य पुरुषों के दुःख दूर करने में तन, मन और धन से लग गये; क्या तुम्हारे विषय में यह नहीं कहा जायगा कि तुम्हारा विश्वास यथार्थ था क्योंकि तुमने उसी के आधार पर कार्य किया?

सबसे पहिले विश्वास के सम्बन्ध में हमें यही बात ग्रहण करनी चाहिये। बिना कार्य के कोई भी विश्वास यथार्थ नहीं। विश्वास का अर्थ है कि हम अपने विश्वास के अनुसार ही कार्य करें।

जीवन में कुछ ऐसी वस्तुएँ हैं जिनको हम सत्य सिद्ध कर सकते हैं; परन्तु हमारे दैनिक जीवन में ऐसी बहुत सी वस्तुएँ हैं जिनको कोई भी मनुष्य सत्य सिद्ध नहीं कर सकता। इन वस्तुओं के साम्राज्य में विश्वास केवल एक शक्ति ही नहीं वरना एक बहुत भयानक शक्ति है।

एक अमुक बच्चा एक द्वेष को पूर्ण रूप से सन्तुष्ट नहीं कर सकता कि उसकी माता उस पर प्रेम करती है। द्वेषी यह कहेगा। "उसका प्रेम स्वार्थ से भरा हुआ है; अगर तुम्हारे प्रेम से उसे आनन्द न मिले तो वह तुम से कदापि प्रेम न करे; वह तुमको नहीं किन्तु अपने आपको प्यार करती है।" बच्चे को कोई

आवश्यकता नहीं कि वह सिद्ध करे कि उसकी माता का प्रेम यथार्थ है। बच्चा इसी विश्वास पर कार्य करता है कि उसकी माता का प्रेम यथार्थ है और इसी कारण उसका जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत हो जाता है। जीवन का सम्पूर्ण आनन्द ही विश्वास पर निर्भर है।

कोई भी वस्तु बनाने वाला यह सिद्ध नहीं कर सकता कि उस वस्तु का ग्राहक निष्कपट है। हां, वह यह कह सकता है कि "मेरा उसके साथ बीस वर्ष से व्यवहार है और वह अपनी प्रतिज्ञा से कभी च्युत नहीं हुआ;" परन्तु वह किस तरह सिद्ध कर सकता है कि एक दिन यह निष्कपट ग्राहक छल और कपट के लोभ में नहीं आजावेगा ?

सभ्य जीवन विश्वास ही पर निर्भर है। हमारा वेतन कागज के टुकड़ों में दिया जाता है जिनका कोई मूल्य नहीं; परन्तु एक व्यापारी को भारत सरकार पर विश्वास है और वह हमें उस कागज़ के बदले में भोजन की सामग्री देदेता है; और हम उन खाद्य पदार्थों को खाते हैं केवल इस विश्वास में कि यह निष्कपट भोजन है और हमारे अन्दर ज़हरीली वस्तु भेजने का साधन नहीं है।

बिना विश्वास के जीवन की गाडी का चलना अति दुस्सह कार्य है। विश्वास का नामोनिशान मिटादो और हम असभ्य हो जावेंगे, जिसके फल स्वरूप प्रत्येक मनुष्य पशु की भाँति छोटी २ वस्तुओं के लिए दूसरों से लड़ता फ़िरेगा। हमारे शहर

में स्थापित बड़े २ बैंक, बड़े २ बीमे के दफ्तर सब विश्वास की ही सजीव मूर्ति हैं। एक मनुष्य का दूसरे पर विश्वास, सब मनुष्यों का राष्ट्र पर विश्वास और एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र पर विश्वास ही आधुनिक सभ्यता का आधार है। एक राष्ट्र का दूसरे पर विश्वास न होना ही युद्ध का मुख्य कारण है। व्यापार तथा मनुष्य के जीवन की संरक्षता के लिए विश्वास का होना परम आवश्यकीय है।

अब हमें ज्ञात होगया कि विश्वास एक महान वस्तु है और यह हमें दैनिक कार्य के लिए आवश्यकीय है। आओ हम इसके विषय में दूसरे रूप में विचार करे। हमारा चाहे कुछ ही विचार हों, हम जानते हैं कि हम एक ऐसे नक्षत्र पर निवास कर रहे हैं जिसका एक विशाल सृष्टि से सम्बन्ध हैं। हम इस धरातल पर कैसे आये, सृष्टि किस प्रकार आरम्भ हुई, और अब क्यों कर लटकी हुई है इन प्रश्नों का उत्तर कोई मनुष्य नहीं देसकता। हम इनके विषय में विचार कर सकते हैं और सिद्धान्त बना सकते हैं, परन्तु उन सिद्धान्तों को सिद्ध नहीं कर सकते। और इसी कारण प्रत्येक पुरुष, जो इस पृथ्वी पर रहता है, सृष्टि पर विश्वास रखता है।

परमात्मा पर भरोसा करने वाले मनुष्य का निश्चल विश्वास

एक मनुष्य बिना सोचे हुए और बिना किसी तात्पर्य के

कहता है कि सृष्टि एक है। एक दूसरा मनुष्य कहता है "क्योंकि यह इतनी सुन्दर और महिमाशाली है, मुझे विश्वास है कि यह सम्पूर्ण जगत एक महान शक्ति की सृष्टि है और उस महान् शक्ति को मैं परमात्मा कहता हूँ।" अब इन दोनों विश्वासों के अन्तर की ओर जरा ध्यान दीजिये। कुछ थोड़े से मनुष्य, जो यह विश्वास करते हैं कि यह सम्पूर्ण जगत एक मशीन है, यदि उसी विश्वास के आधार पर जीवन व्यतीत करते हैं, तो वे अवश्य स्वार्थ पूर्वक, असभ्यता पूर्वक तथा बुरी तरह से रहते हैं। परन्तु एक वह मनुष्य, जो परमात्मा में विश्वास रखता है और जो उसी विश्वास के आधार पर जीवन व्यतीत करता है, धार्मिक विजय की ओर जारहा है ठीक उसी प्रकार जैसे एक चित्रकार सौन्दर्य की खोज में रहता है। उसका विश्वास बहुत गहरा है। वह गुण के उचित होने में विश्वास नहीं रखता, परन्तु प्रेम की शक्ति में। वह साहस पूर्वक जीवन की परीक्षाओं को सहन करता है और उसके मत के अनुसार मृत्यु तो केवल अविनाशी जीवन का द्वार है।

इतिहास ऐसे मनुष्यों की कहानियों से भरा पड़ा है, जिन्होंने विश्वास का जीवन व्यतीत किया मरते समय तक उस विश्वास का साथ न छोड़ा। सोक्रेटीज (Socrates) हँसते २ सत्य के वास्ते मृत्यु की भेंट होगया और उसका विश्वास इतना दृढ़ था कि उसने जेल से भाग जाने का प्रयत्न तक न किया। लैटीमर और रिडले (Latimer and Ridley) ने अन्य साहसी स्व-

धर्मार्थ प्राण त्यागियों के साथ अपने विश्वास पर दृढ़ रहने के कारण अपने जीवन की आहुति देदी। सर थोमस मोर (Sir Thomas More) मचान पर चढते समय तक हंसता ही रहा था और उसकी यह अन्तिम हँसी उस विश्वास का स्पष्ट प्रमाण थी, जिसको लेकर वह परमात्मा के पास गया।

अनेक वैज्ञानिकों ने भी अपने विश्वास के कारण अपने प्राणों को बलिदान कर दिया। ऐसे महान व्यक्तियों ने अपने विश्वास से चलायमान होजाने से मर जाना ही लाभ दायक समझा किसी वस्तु में विश्वास रखने से भय कोसों दूर रहता है। परमात्मा में विश्वास रखना मृत्यु को मित्र समझना है।

इतिहास में विश्वास की महान शक्ति का वर्णन

आचार के ऊपर विश्वास की इतनी शक्ति है। यह स्पष्ट है कि विश्वास एक बहुत बड़ी वस्तु है। कोई मनुष्य यह अस्वीकार नहीं कर सकता कि यह एक ऐतिहासिक तत्व है। मनुष्य जाति के इतिहास में बहुत से मनोहर जीवन परमात्मा के ऊपर विश्वास और मनुष्य जाति के अमर श्रद्धा की भेंट कर दिए गये। अब भी विश्वास को एक दूसरे रूप में विचार करना शेष है।

ईसा मसीह (Jesus Christ) ने इस शब्द का प्रयोग एक अत्यन्त चित्ताकर्षक रूप में किया है उसने इस शब्द का वह अर्थ नहीं निकाला जोकि बहुत से पादरी बतलाते हैं। उसने इस शब्द को इस अर्थ में प्रयोग नहीं किया कि मनुष्य का कर्त्तव्य

है कि वह देखे कि दृढ़ विश्वास का उसके दैनिक जीवन के आचारों पर क्या प्रभाव पड़ता है। उसने इस शब्द को शक्ति के अर्थ में उपयोग किया—एक ऐसी शक्ति जो प्रत्येक मनुष्य के पास थी और जिसको वे अपनी इच्छानुसार काम में ला सकते थे। उस महान व्यक्ति का कहना था कि विश्वास ऐसी भयानक वस्तु है कि यदि मनुष्य एक पर्वत से कहे और उसे विश्वास हो कि ऐसा होजायगा कि "तू यहां से हटजा और समुद्र के नीचे चला जा," तो पर्वत उसकी आज्ञा का पालन करेगा। वास्तव में कोई भी पुरुष यह विश्वास नहीं कर सकता कि एक पर्वत मनुष्य की आज्ञा का पालन करेगा और इसी कारण मनुष्य के कहने से पर्वत कभी दृष्टि से ओझल न होगा। परन्तु ईसा ने इस शब्द का प्रयोग इसलिये किया था कि मनुष्य को ज्ञात होजावे कि विश्वास कितनी महान शक्ति है। विश्वास रक्खो कि पर्वत तुम्हारी आज्ञा का पालन करेगा, और अवश्य करेगा। एक असम्भव कार्य पर विश्वास रक्खो और वह सम्भव हो जायेगा। इसी महान व्यक्ति ने अपने शिष्यों से कहा था कि विश्वास रक्खो तुम्हारी प्रार्थनाएँ सत्य सिद्ध होंगी और अवश्य होंगी। उसके विषय में कहा जाता है कि एक स्थान पर वह किसी भी मनुष्य का रोग दूर न कर सका, क्योंकि उन मनुष्यों का उसमे कोई विश्वास ही न था। वह बहुधा रोगी पुरुषों से कहा करता था कि यह तुम्हारे विश्वास का ही फल है कि तुम फिर अपनी पूर्ववत् आरोग्यावस्था को प्राप्त हुए हो।

आत्मा की शक्ति का पृथ्वी पर कार्य

ऐसा प्रतीत होता है कि अब मनुष्य विश्वास के विषय में ऐसा विचार कर रहे हैं जैसा कि ईसा मसीह (Jesus Christ) ने किया था वे यह समझने लगे हैं कि विश्वास जीवन पर शासन करने वाली एक शक्ति है। वैद्य यह कहा करते हैं कि रोगी को यह समझना चाहिए कि वे अच्छी दशा में हैं। प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षक शिष्यों से कहते है कि "तुम्हें विश्वास रखना चाहिए कि तुम ठीक प्रकार से काम कर रहे हो और अन्त में कठिनाइयों के ऊपर तुम्हारी विजय होगी।" यह तो सर्वसम्मति है कि निराशाजनक विचार खराब होते हैं और आशाजनक तथा विश्वासनीय विचार अच्छे और सहायक होते हैं।

सम्भव है कि एक दिन आत्मा इस शक्ति के प्रयोग के द्वारा भाग्य पर कुछ प्रभाव डाल सके। ऐसे बहुत से मनुष्य पाए जाते हैं जो कहते हैं "मुझे परमात्मा में विश्वास है" परन्तु ऐसे तो बहुत ही थोड़े मनुष्य है जो ऐसे विश्वास का आनन्द अनुभव करते होंगे। यथार्थ में परमात्मा पर विश्वास रखना, यथार्थ में उससे प्रेम करना, और यथार्थ में मृत्यु के पश्चात् पुनर्जन्म में विश्वास रखना ही सृष्टि के केन्द्र पर निवास करना है। सत्य विश्वास से हृदय में शान्ति, मस्तिष्क में आनन्द और आत्मा में एक महान शक्ति उत्पन्न होती है।

यह कोई भी मनुष्य नहीं कह सकता कि आत्मा की यह शक्ति पृथ्वी पर कितना महान कार्य सम्पादन कर सकती है

परन्तु इस बात के चिह्न दिखलाई पड़ने लगे है कि इस शक्ति के द्वारा राष्ट्र की सम्पत्ति और आरोग्यता मे बहुत अन्तर पड़ जावेगा। मनुष्य जाति का यह मत है कि अशुभ कार्यों पर जीवन व्यतीत करना, जीवन को निरर्थक समझना और रोग से प्रेम करना बहुत खराब है। उनका यह भी मत है कि सेवक और स्वामी मे शान्ति और दो राष्ट्रों में शान्ति केवल मैत्रिक मण्डली द्वारा ही स्थापित हो सकती है, जिसमें सन्देह दूर कर दिए जावे और एक दूसरे पर विश्वास रक्खा जावे। इससे मनुष्य जाति के भाग ही खुल जावेंगे। विश्वास हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और विश्वास ही के ऊपर हमारा भाग्य निर्भर है।

यह महान् वस्तु राष्ट्र की उन्नति तथा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति से भी बढ़कर है। यह परमात्मा के ज्ञान और अलौकिक शक्ति के अभ्यास से कम नहीं है। सृष्टि का कानून है कि विश्वास प्रेम पर भरोसा है। और यह विश्वास इतना दृढ़ है कि यह आत्मा को भी कार्य करने के लिए उत्साहित कर देता है। पैस्काल (Pascal) ने कहा था" परमात्मा के ज्ञान और परमात्मा के प्रेम में कितना विशाल अन्तर है।"

यहां पर यह कहना यथेष्ट होगा कि विश्वास आत्मा का एक कार्य है, मत नहीं। प्रेम और भलाई की शक्ति में विश्वास रखने से मनुष्य उन्नति कर सकता है। हमें अपने विश्वास पर आनन्द पूर्वक दृढ़ रहना चाहिए।

दशम अध्याय

अविनाशी

किसी एक प्राचीन पुस्तक मे एक कहानी है, जिसमे लिखा हुआ है कि विश्व के पश्चिम मे बहुत दूर एक सख्त पत्थर (Granite) की चट्टान है, जो एक मील ऊंची, एक मील चौड़ी, और एक मील गहरी है। प्रत्येक सौ वर्ष पश्चात् एक छोटी सी चिड़िया उस चट्टान पर आती है और पत्थर पर अपनी चोंच तेज करके चली जाती है। जब इस प्रकार चिड़ियाँ उस चट्टान को बिल्कुल घिस देंगी तो वह अविनाशक मे एक दिन माना जावेगा।

सम्भव है एक ऐसी विचार शक्ति के द्वारा मनुष्य अविनाशक के सम्बन्ध मे कुछ विचार करने लगे। यह एक ऐसा शब्द है जिससे मस्तिष्क में विचार उत्पन्न होने की शक्ति आजाती है।

अनेक प्रकार की सभ्यताएँ हो चुकी हैं सहस्रों वर्ष व्यतीत हुए मनुष्य का विचार था कि वे जीवन के उस शिखर पर पहुँच गये हैं और अब शीघ्र ही यह सृष्टि समाप्त हो जावेगी।

मिश्र में, यूनान मे, बोबीलौन (Bobylon) में भिन्न २ प्रकार की सभ्यताएं थीं, परन्तु ये सब सभ्यताएं समाप्त हो चुकी और मनुष्य अब भी जीवन के कठिन पर्वत पर चढ़ हुए चले जा रहे हैं और जीवन का अन्त अभी आकाश में गुप्त है और मनुष्य की दृष्टि से परे हैं।

इन सब मिटी हुई सभ्यताओं मे, हमारे लिए सम्भव है।

कि हम ऐसा समय ज्ञात करलें, जब कि वे सर्वोच्च शिखर पर पहुँची हुई थीं और एक वह समय, जब कि उनमें अवनति होना आरम्भ हो गया था। हम निश्चय रूप से कह सकते हैं कि इन प्राचीन सभ्यताओं की मूर्तियों, शिल्पकला आदि से पता लगता है कि मूल बुद्धि ही उनकी उन्नति का चिह्न था और अनुरूप करना ही उनकी अवनति का मुख्य कारण था।

मूल बुद्धि और अनुरूप में क्या अन्तर है? यह विचार करने का विषय है। मूल बुद्धि परम उत्साह से कार्य करती है। परन्तु एक अनुरूपक शीतल भाव से विचार करता है। एक के लिए सुन्दरता अधिकार है, दूसरे के लिए एक कौशल है। एक मनुष्य के लिए जीवन विपद्जनक कार्य करने के लिए एक अपूर्व अवसर और दूसरे के लिये यह विवेचना करने के लिये एक कठिन कार्य है।

यह प्रतीत होता है कि मनुष्य के जीवन के मुख्य काल में का शब्दों का प्रयोग भी एक मुख्य अंश है। राष्ट्र के जीवन मे ऐसे अवसर आते हैं जब कि एक शब्द तुरही की पुकार के समान गूँजता है, जिससे राष्ट्र की आत्मा आलस्य को छोड़कर कार्य में लीन हो जाती है।

फिर शब्द की गुँजार कम होती जाती है और अन्त मे वायु में लुप्त हो जाती है। इसके पश्चात् अनुरूपक उसी शक्तिशाली शब्द का प्रयोग करता है परन्तु उसमें न वह उत्तेजना

ही होती है न वह तात्पर्य और न यह विचार कि इस शब्द से जीवन शक्ति शाली बन सकता है।

अधिक काल व्यतीत नहीं हुआ कि शब्द 'स्वतन्त्रता' यूरोप की आत्मा में सङ्गीत के समान बजता था। अब यह राज नीतिज्ञों के भाषण से भी उतना उत्तेजक नहीं है। एक ऐसा समय था, जब परमात्मा का शुभ नाम लेते ही मनुष्य की आत्मा पृथ्वी पर लेट जाती थी; अब तो उपन्यासों और थियेटरों में केवल उस महान शक्ति का नाम चिल्लाया ही जाता है। जब कि शब्द का प्रयोग करने वाला उसका वास्तविक अर्थ ही नहीं समझता तो बड़े २ महान शब्दों की शोचनीय अवस्था हो जाती है।

बड़े २ शब्दों को अपने वास्तविक अर्थ से गिरने न देना देश भक्ति तथा धर्म की सजीव निशानी है। यदि हम एक केवल अनुरूपक और एक उत्तेजना देने वाले तथा उत्साह उत्पन्न करने वाले शब्द के बीच में खड़े होकर विरोध करते हैं, तो हम देश की सेवा करते हैं, सभ्यता की सेवा करते हैं और यहां तक कि परमात्मा की सेवा करते हैं। महान शब्दों को घृणित रूप में ही प्रयोग न करने देना मनुष्य जाति के साथ परोपकार करना है। क्यों कि इस प्रकार हम अविचारनीय पुरुषों के मस्तिष्क में यह बात लाते हैं कि ऐसे शब्दों के अनेक लाभ दायक तथा परोपकारी अर्थ हैं। और जब वे उनके अर्थों पर विचार करना आरम्भ कर देते हैं तो उनमें जीवन की

महिमा का विचार उत्पन्न हो आता है और वे तुच्छ कार्यों को घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं।

महान शब्दों को बिना सोचे हुये प्रयोग करने से हम क्या भूल करते हैं।

एक बात तो अवश्य ही माननी पड़ेगी। यदि हमें अपनी सभ्यता को जीवित रहने देना है, तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम प्रत्येक शब्द का सही प्रयोग करें और बिना सोचे हुये किसी भी शब्द को मुँह से बाहर न निकलने दें।

यदि हम अविनाशी शब्द पर विचार करें, तो हमें बिना सोचे हुए महान शब्दों के प्रयोग करने से विपत्ति का पता लग जायगा। प्राचीन काल में एक समय पर इसी शब्द ने भारत माता का उत्थान किया था और उस समय से सुन्दर मन्दिर मनोहर कविता और आनन्द दायक जीवन का सुख प्रत्येक प्राणी को मिलने लगा। अब हम इस शब्द को अधिकतर छोटे छोटे गीतों में प्रयोग करते हैं। यह उत्कृष्ठ शब्द अब केवल गिरी हुई कविता में प्रयोग किया जाता है; यह अनुरूपक के हाथों में पड़ गया है और उसका वास्तविक अर्थ से प्रत्येक मनुष्य अज्ञान है। हम इसका प्रयोग करते हैं, परन्तु इसका अनुभव नहीं करते।

जब न सूर्य्य था और न चन्द्रमा, तो समय कहां था।

इसका क्या फल होता है? हम जन्म और मृत्यु के दो बिन्दुओं के बीच में निवास करते हैं। हम प्रधानत्व का भाव भूल जाते हैं। हम उस विचार को बिल्कुल भूल जाते हैं, जिसके आधीन मनुष्य के मस्तिष्क की बागडोर है। हमारा व्यवहार ऐसा है कि मानों हमारे जीवन का कोई उद्देश्य ही नहीं है, जैसे एक काग समुद्र में पड़ा हुआ लहरों से इधर उधर टक्कर खाता फिरता है।

परन्तु जीवित रहने के सत्य पर विचार करो। अविनाशी का विचार तत्वशास्त्रज्ञ (Philosopher) के गले मढ़ दिया गया है। विना इस विचार के आधार पर कोई भी मनुष्य अपने मस्तिष्क से नहीं सोच सकता। अविनाशी कोई स्वप्न नहीं है। हमारे समझने की शक्ति के बाहर कोई पागलपन का विचार नहीं है; किन्तु सचेतन विचार करने की यह प्रथम दशा है। इसका अर्थ क्या है?

विना घड़ियों का विचार किए हुये हम समय के विषय में नहीं सोच सकते। एक समय था जब यह वस्तुऐं प्राप्त नहीं हो सकती थीं। फिर भी घड़ियों के आविष्कार के पूर्व समय जीवित था। जो मनुष्य घड़ी के या धूप घड़ी के आविष्कार के पूर्व इस पृथ्वी पर रहते थे। समय को दिनों और सप्ताहों से

नापते थे। सूर्य्य उदय होता था और अस्त भी होता था। प्रातःकाल का समय भी होता था और रात्रि का भी। चन्द्रमा भी घटता बढता रहता था। साथ ही साथ, खेत बोने का तथा काटने का भी समय निश्चित था। एक ऐसा समय भी होता था जब कि सूर्य्य अधिक तम गर्म होता था और एक ऐसा समय भी था जब कि बर्फ पृथ्वी को ढक लेती थी। मनुष्य इन्हीं के द्वारा समय नापते थे।

परन्तु जब न सूर्य्य था और न चन्द्र, तो समय कहाँ था? जब कि कोई नक्षत्र सूर्य्य की ओर देखने को ही न था, तो समय किस प्रकार नापा जाता था? बिना सृष्टि के स्थान के विषय में विचार करो। ऐसा विचार करना सम्भव है क्योंकि विज्ञान उस जगत की सृष्टि तक सही माना गया है। स्थान ईथर (Ether) से भरा हुआ परन्तु न सूर्य्य था और न अन्य नक्षत्र—इस पर विचार करो और फिर अपने हृदय से यह प्रश्न करो, 'समय कहां था?"

प्राचीन काल की विचित्र सभ्यताएँ जो अब नहीं हैं।

इस प्रश्न को पूँछते ही हमें अविनाशी का ध्यान आ जाता है। क्यों कि इस शब्द का अर्थ है "वह जिसका समय से कोई सम्बन्ध नहीं है" घड़ियों का विचार छोड़ दो, दिन और रात का विचार छोड़ दो, मास और वर्ष का विचार छोड़ दो

और अविनाशी का विचार उसी समय तुम्हारे मस्तिष्क में आ जावेगा और तुम्हारी विचार शक्ति के द्वार पर आकर अन्दर आने को खटकावेगा। समय का जन्म हुआ; एक वृक्ष पर सबके अथवा एक गुलाब की झाड़ी पर कली के समान उसका जीवन आरम्भ हुआ; परन्तु समय के जन्म के पूर्व एक ऐसी अवस्था थी, जिसमें उसने जन्म लिया और उस अवस्था को हम अविनाशी अवस्था कहते है।

अब इस शब्द का मूल्य निर्णय करो। समय अविनाशी का एक बच्चा है। हम इस पृथ्वी पर थोड़े वर्षों के मेहमान हैं। हम समय के बच्चे हैं। परन्तु चूँकि सयय हमारी माता है, और अविनाशी समय की माता है, अतएव, हमारा सम्बन्ध केवल समय से ही नहीं है परन्तु अविनाशी से भी।

यही दशा हमारे नक्षत्र की है। एक समय मनुष्य का विचार था कि पृथ्वी सृष्टि का केन्द्र है, कि सूर्य्य दिन में प्रकाश करनें के लिये और चन्द्रमा रात्रि में प्रकाश करने के लिए बनाए गए हैं फिर एक ऐसा समय आया जब कि यह ज्ञात हुआ कि हमारी पृथ्वी सृष्टि का केन्द्र नहीं था, कि पृथ्वी महान सृष्टि का वास्तव में केवल एक बहुत छोटा सा अंश था और इस बात का पता लग जाने के कारण बहुत से मनुष्यों को शोक हुआ। परन्तु हमारे नक्षत्र के छोटे या बड़े होनेसेक्या लाभ या क्या हानि है, जब तक कि यह सृष्टि का एक अंश है? बड़ा! छोटा! यह शब्द उस अपार सृष्टि मे किस योग्य हैं? वे केवल मनुष्य

द्वारा रचित पद हैं। मनुष्य के मस्तिष्क से बाहर उनका कोई अर्थ नहीं है। हमारी पृथ्वी अपार सृष्टि का इतना बड़ा भाग है जितना कि एक बड़े से बड़ा नक्षत्र।

समय के परिवर्तन के साथ अनन्त यथार्थता

ऐसी ही दशा मनुष्य द्वारा बनाए हुए समय की है। इसका निवास केवल हमारे मस्तिष्क में है, आकाश में होकर हमारे नक्षत्र की गति के कारण ही यह हमारे लिए बनाया गया। हम पृथ्वी की इन गतियों को अपनी घड़ियों और जन्त्रियों की सहायता से नापते हैं; परन्तु चूँकि हमारे नक्षत्र का निवास एक स्थान में है, अविनाशी के लिए यह निरर्थक हैं। हम मनुष्य द्वारा बनाए हुए समय का विचार त्याग सकते है परन्तु हम अपने आपको अविनाशी से बाहर नहीं सोच सकते।

इसी के आधार पर प्लेटो (Plato) के विचारों में अधिक शक्ति का योग हुआ। उसे ज्ञान हुआ कि दिन और रात भ्रम की प्रकृति में से हैं और अविनाशी का न आरम्भ ही है और न अन्त। उसने मनुष्यों को परमात्मा के विषय में यह बतलाया कि यह न कहो कि "वह था" या "वह होगा" किन्तु केवल यह कि "वह है।" इस अनन्त वास्तविकता पर विचार करने के लिए उसने मनुष्य जाति में उत्साह उत्पन्न करने का प्रयत्न किया जिससे वह समय के भ्रम में पड़कर भविष्य में धोखा न खा जावे। जैसे मूसा (Moses) ने परमात्मा के विषय में कहा था "मैं हूँ," प्लेटो ने कहा "वह है।" समय के तमाम परिवर्तन

और सृष्टि के सम्पूर्ण आकारों के पीछे उन्नत यथार्थत परमात्मा ही है।

यह विचार अब स्पष्ट होता जाता है। अविनाशी का विचार हमें प्रसन्नता ढूँढने का सच्चा मार्ग बतलाता है। हम उन सब वस्तुओं को देखकर यही कह देते हैं कि 'उनका यथार्थ मूल्य क्या है ? हम जानते हैं कि समय केवल मनुष्य की सुगमता के लिए है; अविनाशी यथार्थता के लिये वह निरर्थक है; अतएव समय के सम्बन्ध की वस्तुएँ मोल नहीं ली जा सकती।

यथार्थता का धर्म, जिसमें हमारी सम्पूर्ण कुशल मङ्गल है

अब हम ऐसी वस्तुओं को खोजने के लिए निकलते हैं। जिनका समय से कोई सम्बन्ध नहीं है। ऐसी वस्तुओं को तत्व शास्त्रस (Phileso phers) एक स्वाधीन मूल्य प्रदान करते हैं, जो न समय पर निर्भर है और न अवसर पर। और हमें पता लगता है कि स्वाधीन मूल्य केवल आत्मिक वस्तुओं के सम्बन्ध में प्रयोग किया जा सकना है; न कि खाने और पीने में परन्तु स्वयं खण्डन और करुणा के विषय मे; न कि धन एकत्र करने में और सुन्दर वस्त्र धारण करने में परन्तु बुद्धि और समझ के विषय में, जिसके द्वारा जीवन में भक्ति और प्रेम का सञ्चार होता है।

इस प्रकार हम मस्तिष्क की एक ऐसी दशा पर पहुँचते हैं,

जिसके द्वारा हमारी बुद्धि धोखा खाने से बच सकती है और भाग्य में लिखी हुई विपत्तियाँ सहन कर सकती है। हमें अब यह प्रतीत नहीं होता कि हम खरहों के समान हैं जो जन्म के अन्धकार में से निकल कर मृत्यु के अन्धकार में चले जाते हैं। हम अब यह विचार नहीं करते कि इस पृथ्वी पर हमारा उद्देश्य केवल समय व्यतीत करना है। हम मनुष्य जाति द्वारा सहन की हुई कठिनाइयों को अभी नहीं भूले हैं और न मनुष्य जाति के भविष्य में सहायता देना अस्वीकार करते हैं। हम देखते हैं कि प्राचीन काल की सभ्यताएँ न ठहर सकीं क्यों कि उन्होंने जीवन को अविनाशी का भाग नहीं समझा। हम कह सकते हैं कि हमारी शान्ति, हमारा आनन्द, हमारी उन्नति भ्रम के नहीं किन्तु यथार्थता के साम्राज्य में ही निर्भर है।

समय और अविनाशी में विशाल अन्तर

और हम अपना जीवन आनन्द पूर्वक अपना उद्देश्य पूरा करते हुए व्यतीत कर रहे हैं क्यों कि हमारी आत्माएँ अब दुर्बल और मुर्दे शरीरों में बन्दी नहीं हैं परन्तु वे सदैव अविनाशी वायु की श्वांस ले रहीं हैं और अनन्त बुद्धि और सौन्दर्य्य का उपयोग करते हुए अपनी अलौकिक शक्ति बढा रही है।

एक उस मनुष्य में, जो अविनाशी पर विश्वास करता है और दूसरे उस मनुष्य में जो समय को सत्य मानता है, असीम अन्तर है। एक समय हमने यूरोप के एक प्रसिद्ध नगर में एक

शानदार सड़क पर चलते हुए दो सुसज्जित युवकों को देखा जो कि एक छोटे से बुड्ढे आदमी पर जो वहां से अभी गुजरा था, हँस रहे थे। हमने इस बुड्ढे आदमी के साथ हो लिए जो इतना साधारण और नम्रशील था कि वह सड़क उसके पदागमन के योग्य न थी परन्तु वास्तव में वह जीवित इतिहासकारों में सबसे अधिक बुद्धिमान और चतुर था।

उन विचारों की ओर ध्यान, जिनसे इस महान व्यक्ति की बुद्धि भरी पड़ी थी; उनके विस्तार की ओर, उनके गौरव की ओर, उनकी महिमा की ओर और उनके अनन्तज्ञान की ओर तनिक ध्यान दो; और फिर उन दो युवकों की धूर्तता पर विचार करो, जो कि उस महान व्यक्ति को देख कर हँस पड़े। उनका ध्यान समय के मूल्य की ओर परन्तु उस व्यक्ति का ध्यान था अविनाशी की ओर।

एकोदश : अध्याय

आत्मिक दृष्टि

मनुष्य जाति के इतिहास में बहुत काल हुआ जबकि शब्द 'दृष्टि' का अविष्कार हुआ।

वे वस्तुएँ देख सकते थे—सूर्य रात्रि के अन्धकार से बाहर निकल रहा है, जङ्गल की हरी २ घनी झाडियों में से होकर एक

भालू उनकी ओर दौड़ा चला आरहा है, एक सुन्दर तोता वृक्ष के ऊपर बैठा हुआ शोर कर रहा है, एक भड़कीला सर्प घास में छिप रहा है।

दृष्टि एक साधारण वस्तु नहीं है परन्तु यथा विधि है। यह मनुष्य के मस्तिष्क के उन आश्चर्यजनक कार्यों में से एक है जो कि बहुधा देखने से विचित्र प्रतीत नहीं होते। मनुष्य ने दृष्टि को सदा से मान रक्खा होगा और जब उन्होंने उसके लिए एक शब्द का अविष्कार किया तो यह निसन्देह एक साधारण कार्य था, जैसे एक अमुक पशु को भालू कहना और दूसरे को भेड़िया।

मनुष्य जाति के इतिहास में बहुत काल के पश्चात् एक ऐसे शब्द की आवश्यकता पड़ी जो कि मनुष्य की बुद्धि द्वारा देखी हुई वस्तुओं का वरणन कर सके। रात्रि के समय, जब सूर्य दृष्टि से बाहर होजाता था, नेत्र बन्द करने के पश्चात एक सोने वाले की बुद्धि में आकार दिखलाई पड़ते थे और वह इतने वास्तविक जान पड़ते थे कि वे प्रातःकाल तक स्मरण रक्खे जा सकते थे। यह एक दूसरी प्रकार की दृष्टि थी जिसको अंग्रेजी में विज़न (Vision) कहते हैं।

मनुष्य जाति के इतिहास में इसके भी कुछ समय बाद यह विचार उत्पन्न हुआ कि नेत्र प्रत्येक वस्तु को, जो देखनी चाहिये नहीं देख सकते और उन वस्तुओं के विषय में उसे सूर्य, भालू या वृक्ष, जो भलीभाँति दिखलाई पड़ते हैं, यह

निस्सन्देह पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि मनुष्य के नेत्र कहां तक सही देख सकते हैं।

इस प्रकार मनुष्य दृष्टि और दृष्टि शक्ति में बहुत अन्तर मानते हैं और कुछ ज्ञानी पुरुषों का मत है कि एक नेत्रों की दृष्टि है और एक मस्तिष्क की; एक शरीर की दृष्टि शक्ति है, और एक आत्मा की।

इस शब्द "दृष्टि शक्ति" से विचित्र शायद ही कोई शब्द कोष में मिलेगा। वास्तव में, एक ऐसे शब्द का विचार करना अत्यन्त कठिन है जिससे हमको सन्तोषपूर्वक सिद्ध होजावे कि हम यथार्थ में एक आत्मिक वस्तु हैं और पशुवों से बिल्कुल भिन्न २ हैं।

तुम्हें एक उस अन्धे भिखारी की कथा याद होगी जो जन्म से ही अन्धा था और जब ईसा मसीह (Gesus christ) ने उसके दृष्टि हीन नेत्रों को एक विशेष प्रकार की मिट्टी से छूदिया तो उस मनुष्य ने आकाश और पृथ्वी का सौन्दर्य देखा। यह कहा जाता है कि दृष्टान्तों में इसका बहुत बड़ा स्थान है। वह भिखारी एक ऐसी साधारण वस्तु के द्वारा निरोगी होगया जिसके ऊपर होकर वह सम्पूर्ण जीवन में चलता रहा और यदि उसके नेत्र देख सकते होते तो वह वस्तु सदा से पर्याप्त थी। दृष्टि की शक्ति है, परन्तु हम उसे देख नहीं सकते।

इसी प्रकार हम सब बिना अर्थ पर विचार किये हुये शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं। और इसी कारण हम अनेक साधारण

शब्दों में भूल कर जाते हैं अन्यथा हमें सृष्टि के बहुत से रहस्यों का ज्ञान होजावे। हम तत्वशास्त्रज्ञों (Philisophers) अथवा विज्ञान के नेताओं द्वारा आविष्कार किये हुये बडे २ शब्दों पर अधिक ध्यान देते हैं परन्तु कवि अथवा भावीवक्ता द्वारा अविष्कार किये हुए साधारण शब्दों पर तनिक भी विचार नहीं कर सकते।

इस शब्द को ओर ही तनिक ध्यान दो। तुम्हारे चेहरे पर नेत्र हैं और तुम इस संसार को एक असभ्य पुरुष के समान ही देख सकते हो। परन्तु उन्हीं नेत्रों द्वारा तुम्हारे और असभ्य पुरुष के देखने के ढंग में विशाल अन्तर है। तुम कदाचित यह ध्यान न करते होगे कि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है आकाश में चढता जाता है और फिर सर्वोच्च शिखर पर पहुंच कर उतरना आरम्भ कर देता है और अन्त में पश्चिम दिशा में अस्त होजाता है। तुम यह विचार ही नहीं कर सकते कि यह जगत जिसमें उच्च पर्वत और गहरे महासागर हैं स्थिर है और गति में नहीं है। तुम यह भी विचार नहीं कर सकते कि मनुष्य का शरीर एक महान शिल्पकार का आकस्मिक कार्य है या एक वृक्ष केवल एक माली के परिश्रम का ही फल है शिक्षा के द्वारा मनुष्य में एक और प्रकार का दृष्टि का अनुभव होने लगा है।

नदी के किनारे का एक गुलाब का फूल उसके लिए पीला था

तुम इस बात से भी परिचित हो कि अन्य पुरुष इस जगत

को ठीक इसी प्रकार नहीं देखते जैसे तुम देखते हो। तुम उस एक बुड्ढी स्त्री की कहानी जानते हो, जिसने एक प्रसिद्ध चित्रकार से कहा था कि उसने ऐसा सूर्य्योदय कभी नहीं देखा था जैसा कि उस चित्रकार के एक चित्र में; और इस पर उस चित्रकार ने उत्तर दिया"सम्भव है न देखा हो, परन्तु क्या ऐसा देखने की तुम्हारी इच्छा नहीं है?" अनुभव से प्रतीत होता है कि दृष्टि के भी अनेक भेद हैं।

परन्तु इससे थोड़ा आगे और भी चलना पड़ेगा। तुमको इतनी दूर तक जाना पड़ेगा, जहां तक कि यह शब्द 'आत्मिक दृष्टि' तुम्हें तो जावेगा। इस शब्द का अर्थ है" वह दृष्टि जो नेत्र और मस्तिष्क पर निर्भर नहीं है"

जब देश का राजनैतिक अवस्था बिगड़ जाती है, तो पत्र के सम्वाददाता यह लिखा करते हैं कि "जब आत्मिक दृष्टि का अभाव हो जाता है, तो प्रजा नष्ट हो जाती है।" यह बिल्कुल सत्य है परन्तु अधिकतर मनुष्य इन शब्दों के वास्तविक अर्थ पर किञ्चित मात्र भी विचार नहीं करते। वे इसका यह अर्थ निकालते हैं कि "जब कामनाएँ मिट जाती हैं तो प्रजा का नाश हो जाता है।" आत्मिक दृष्टि और कामना अथवा लालसा में बहुत अन्तर है। अरब के रेगिस्तान में एक यात्री को पानी की लालसा हो, परन्तु उसका जीवन समाप्त हो जावेगा। एक राष्ट्र आराम तथा आलस्य का इच्छुक हो परन्तु वह अधिक काल तक नहीं ठहर सकता। नेपोलियन (Napoleon) के समान

एक विजेता राज्य का इच्छुक हो परन्तु वह भी एक दिन मृत्यु की भेंट हो जावेगा।

मनुष्य अपनी शारीरिक बुद्धि की बेड़ियों में नहीं बँधे हुये।

नहीं, आत्मिक दृष्टि का अर्थ लालसा नहीं है। उसका अर्थ विश्वास भी नहीं है। इसका अर्थ है "आत्मा का विश्वास कि वह अपनी इच्छानुसार विचार कर सके—इस विश्वास के आधार पर अदृश्य भविष्य आत्मा को दिखलाई दे जाता है। और इतना स्पष्ट रूप से कि इच्छा पूर्व से ही यथार्थ थी।

वह राष्ट्र कभी नष्ट नहीं हो सकता, जिसका सौजन्यता की शक्ति में अटल विश्वास है और जहां न्याय और सत्य प्रजा पालित राज्य की प्रधान शक्तियां हैं। परन्तु वह राष्ट्र अवश्य ही शीघ्र नष्ट हो जावेगा जो सौजन्यता को केवल एक सम्भव औषधि विचार करता है परन्तु उसको हृदय में विश्वास नहीं है कि यह औषधि लाभ दायक सिद्ध होगी या औषधि कहीं रोग से भी खराब न हो।

इस विचार से तुम्हें ज्ञात हो जावेगा कि मनुष्य में आत्मिक दृष्टि की एक उत्कृष्ट शक्ति है, जो भविष्य को भी देख सकती है एक ऐसा विचार मनुष्य के मस्तिष्क में से यह सन्देह दूर कर देता है कि हम पशुओं की भांति शारीरिक बुद्धि की बेड़ियों में फँसे हुए हैं। इस शब्द को नेत्र बन्द करके अपने हृदय में कहो

और तुलसीदास, स्वामी श्रद्धानन्द आदि जैसे व्यक्तियों का ध्यान करो, तो यह शब्द तुम्हारे लिए एक ऐसी मिट्टी हो जावेगी जिसके द्वारा ईसा (Jesus Christ) ने अन्धे भिखारी के नेत्र खोल दिये थे।

अदृश्य हाथ और नेत्र जिनको किसी मनुष्य ने नहीं देखा है।

यह तुम्हें अब भली भांति ज्ञात होगया होगा कि जैसे हमारी लालसाएँ और बुद्धि शारीरिक हैं, वैसे ही आत्मिक भी हैं। तुम अपने मन में विचार करोगे कि "अब मैं समझने लगा हूँ कि ईसा (Jesus Christ) के इन शब्दों का क्या तात्पर्य था कि जिसके सुनने के लिए कान हैं वह सुने।" अपनी आत्मिक यथार्थता के आकस्मिक ज्ञान पर सम्भव है तुम आश्चर्य से प्रफुल्लित हो जाओ। तुम्हारे पास ऐसे कान हैं, जैसे आज तक किसी ने नहीं देखे परन्तु ये कान वही हैं, जो मनुष्य की आवाज के धीमे से धीमे स्वर और एक महान उपदेशक के शब्दों के गूढ़ अर्थ सुन सकते हैं। तुम्हारे ऐसे नेत्र हैं, जैसे आज तक किसी ने नहीं देखे परन्तु ये नेत्र वही हैं जो मनुष्य का चेहरा देखने से उसके भाव बतला देते हैं, जो सूर्यास्त या पुष्प की सुन्दरता बतला देते हैं और जो अपनी आत्मिक उन्नति का मार्ग दिखला देते हैं। तुम्हारे ऐसे हाथ भी हैं, जैसे किसी ने आज तक नहीं देखे, जिनकी आकाश तक पहुँच है। एक

ऐसी लालसा है जो केवल ठीक कार्य करने से ही सन्तुष्ट हो सकती है।

पशु और मनुष्य में और मूर्खता और ज्ञान में अन्तर

एक छोटा सा विचार, और अपने आपको एक पशु समझना कितना असम्भव है। पशु और मनुष्य जाति के बीच में परमात्मा की सृष्टि के बराबर एक चौड़ी खाड़ी है। एक सन्यासी और एक अपराधी में, एक विद्वान और एक मूर्ख में भी इतना विशाल अन्तर है कि वे दो भिन्न २ जगत के प्राणी प्रतीत होते हैं।

उन लम्बे २ शब्दों से घबरा जाना कठिन कार्य नहीं है जो कि विचार के सम्बन्ध में तत्वशास्त्रज्ञों (Philosophers) ने आविष्कार किये हैं। परन्तु साधारण मनुष्यों द्वारा कहे हुए शब्दों के द्वारा हमें अन्धकार से प्रकाश में आने का मार्ग ज्ञात हो जाता है।

हमारी पशुओं की दक्षता से ऊपर अलौकिक दक्षता

भाषा यथार्थता की कुञ्जी है। हमें उसमें ऐसे चमत्कारिक शब्द ढूँढने हैं, जो हमें ज्ञान के मार्ग पर ले जाने की प्रतिज्ञा करते हैं चाहे ऐसे साधारण शब्द हमारी जिह्वा पर ही रक्खे

हों जो कि एक क्षण में हमें ज्ञान के द्वार तक पहुँचा दें। विश्वास रक्खो कि मनुष्य द्वारा आविष्कार किये हुए प्राचीन शब्द वह हैं जो हमारा ध्यान अत्यन्त शीघ्रता से मनुष्य के अभ्यास किये हुये ज्ञान की ओर ले जाते हैं। उस समय जब कि मनुष्य का मस्तिष्क नवीन था और सम्पूर्ण अनुभव उनकी स्वेच्छा से हुये थे कि अपना विचार प्रकट करने के लिए मनुष्य ने शब्दों का आविष्कार किया।

'आत्मिक दृष्टि' जैसे शब्द पर विचार करने से हमारा ध्यान अलौकिक दक्षता की ओर चला जाता है। ये दक्षताएँ हमारी पशुओं के समान दक्षताओं से बहुत बढ़ी चढ़ी हैं और इसी कारण हमको पृथ्वी के अन्य प्राणियों से पृथक कर देती हैं। वास्तव में ऐसी वस्तुओं पर हमारा अधिकार है। और उनको प्रकट करने के लिये हमारे पास शब्द भी हैं। हम आत्मा हैं।

हम समझते हैं कि अंधा कवि सूरदास जीवन के रहस्यों से उनसे अधिक परिचित था जितना कि वे मनुष्य जिन्होंने दूरबीन और खुर्दबीन (Telescopes & Microscopes) का प्रयोग किया। हम बिना तर्क किए हुए यह विश्वास सहित कह सकते हैं कि हमारा जीवन आत्मिक तथा शारीरिक दोनों है और शारीरिक से आत्मिक अधिक है: दृश्य से अदृश्य अधिक है।

परन्तु हमें केवल इसी ज्ञान से सन्तुष्ट नहीं होजाना

चाहिए। हमें अपने हृदय में कहना चाहिये। "यदि शिक्षा द्वारा मेरी शारीरिक वुद्धि में उन्नति हो सकती है, तो यह भी निश्चय है कि दुःख सहन करने से आत्मिक दक्षता में भी उन्नति हो सकती है; और यदि शरीर को भोजन की आवश्यकता है, तो यह भी निश्चय है कि आत्मा के पालन पोषण के लिये किसी विशेष वस्तु की आवश्यकता है ताकि आत्मिक दक्षता शारीरिक दक्षता से उत्कृष्ठ होजावे।"

शिक्षा मनुष्य का जीवन आनन्द से व्यतीत कराने की शक्ति किस प्रकार बढ़ा सकती है

मनुष्य को इस बात का क्यों नहीं विश्वास होता कि यथार्थ में वे आत्मा हैं, कि अब भी इसी दशा में उनके जीवन का एक बहुत बड़ा अंश अदृश्य और बिना किसी सामग्री का बना हुआ है? ईसा ने यह क्यों कहा था कि "जिसके कान हैं, वह सुने"? और अब हम यह क्यों कहते हैं कि "जिसके नेत्र हैं, वह देखे"? जगत की आयु बढ़ती जा रही है परन्तु हम इस समय उतने ही अन्धकार में हैं, जितने कि हमारे पूर्वज सहस्रों वर्ष पूर्व थे। ऐसा क्यों है? इसका उत्तर भी यथेष्ठ साधारण है।

हमें अनुभव है कि कुछ मनुष्य अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में मूर्ख और आलसी रहते हैं; और कुछ मनुष्य बहुत मोटे और बेडौल हो जाते हैं, चाहे उनकी आत्मा हो भी नहीं और

वे पशुओं की भांति जीवन व्यतीत करते हैं। परन्तु साथ ही साथ हमारा यह भी अनुभव है कि बहुत से मनुष्य आनन्दमय और कीर्तिमान् होते जाते हैं और दिन पर दिन अधिक चतुर तथा बुद्धिमान भी होते जाते हैं।

यही दशा आत्मिक दक्षताओं की है। उनका विचार छोडदो तो वे अवनति के मार्ग पर चलते जावेंगे और अन्त में एक गहरी निद्रा प्राप्त करेंगे। परन्तु यदि उनका पालन पोषण सत्य अच्छे तथा सुन्दर विचारों द्वारा होगा, तो तुमको यह ज्ञात होगा कि आत्मिक जीवन ही यथार्थ जीवन है।

द्वादशः अध्याय

सौन्दर्य्य

थोड़ा समय व्यतीत हुआ हम एक मनुष्य से वार्तालाप कर रहे थे, जिसका यह विश्वास था कि वह विश्व को ठीक मार्ग पर ला सकेगा। वह एक बहुत शक्ति शाली पुरुष जान पड़ता था। उसके ढंग से प्रतीत होता था कि उसने विचार ऐसे स्थानों से एकत्र किये थे जो शिक्षित मनुष्यों के विरोधी थे। वह अपने आपको सुधारक कहता था।

इन विचित्र और आक्रमणकारी विचारों में से एक सौन्दर्य्य के विषय में था। वह इस बात पर सहमत न था कि वास्तविक और स्वाधीन सौन्दर्य्य भी कोई वस्तु है। उसने कहा कि "यदि

मैं अपने कमरे की दीवालों को ऐसे चित्रों से सजाऊँ जो तुमको कुरूप प्रतीत होते हैं, तो वें मुझको कुरूप नहीं प्रतीत होंगे। यदि मेरा यह विचार है कि वे सुन्दर हैं। तो वे मेरे लिए सुन्दर हैं।"

बहुत से मनुष्यों का यही मत है परन्तु केवल अन्तर इतना ही है कि वे इतना शोर नहीं मचाते। उनका यह कहना है कि "सौन्दर्य्य एक सम्बन्ध रखने वाला पद है" जिसका यह अर्थ है कि प्रत्येक मनुष्य अपने लिए निश्चय करले कि क्या सुन्दर है। अर्थात्, सौन्दर्य्य जैसी कोई वस्तु नहीं है परन्तु एक अमुक वस्तु को एक कुरूप वस्तु की तुलना में सुन्दर कह सकते हैं। इस मत के अनुसरण करने वाले कहते हैं कि सुन्दरता के विषय मे कोई विशेष नियम नहीं हैं। यह केवल प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा पर ही निर्भर है। और उसके विषय में निश्चय करना प्रत्येक व्यक्ति का पृथक २ कर्तव्य है।

चूँकि यह मत सार्वजनिक है, हमारी वर्तमान सभ्यता कुरूपता की एक गोलमाल ? होती जा रही है, जो इतना धक्का पहुँचाने वाली है। कि यदि २५०० वर्ष पूर्व का एक मनुष्य हमारे किसी शिल्पकारी वाले नगर में आवे, तो वह अपने आपको एक ऐसे जगत में समझेगा, जहां केवल दुख, भय और कुरूपता का शासन है।

आओ, देखें यह मत कितना अचेत है। मानलो कि कोई मनुष्य कहे कि "पुन्य एक साम्बन्धिक पद है" और चोरी करने

असत्य बोलने और शराब पीने को वह पुण्य कर्मों में सम्मिलित कर ले। तो हमको यही कहना पड़ेगा कि "प्रिय मित्र" तुम्हारे लिए सर्वोचित स्थान पागलखाना है।" हमको इस विषय में तो कुछ सोचने की आवश्यकता ही नहीं है। हमको उसी क्षण यह ज्ञान हो जाना चाहिए कि वह मूर्खता की बातें कर रहा है, जो सामाजिक जीवन के लिए प्राण घातक हैं।

और मान लीजिये कि एक ज्योतिषी (Astronomer) या रसायनिक (Chemist) या एक अङ्ग विज्ञानिक (Physiologist) एक दिन यह कहने लगे कि "सत्य एक साम्बन्धिक पद है, और जो विचार एक अमुक पुरुष सत्य समझता है, वह उसके लिए सत्य है"। तो अन्य पुरुष उसकी हँसी करेंगे। वे उस व्यक्ति से यही कहेंगे कि क्या वह एक वायुयान, या मोटर या रेल द्वारा यात्रा नहीं करेगा, जो कि एक ऐसे मनुष्य द्वारा बनाई गई हैं जो गणित के नियमों को असत्य समझता है या क्या वह ऐसा भोजन खा लेगा जिसमें संख्या (Arsenic) मिला हुआ हो और भोजन बनाने वाला यह असत्य समझे कि संख्या (Arsenic) एक जहरीला पदार्थ है। यदि कोई भी मनुष्य सत्य को एक साम्बन्धिक पद विचार करता है तो वह अविश्वासनीय है।

परन्तु चूँकि यह वाक्य कम विघ्न कारक है कि "सौन्दर्य्य एक साम्बन्धिक पद है" बहुत से मनुष्य इसका प्रयोग करते हैं। और ऐसे बहुत कम हैं जिनमें इसका विरोध करने का कुछ भी

साहस हो। परन्तु यह एक विचारनीय विषय है। वास्तव में, हम यह कह सकते हैं कि जगत की भावी सन्तानों का आनन्द सौन्दर्य्य के ठीक विचार पर भी निर्भर है क्यों कि सौन्दर्य्य एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग व्यवहार में भी होता है और चित्रों में भी, राज नीति में होता है और इमारत बनाने की विद्या में भी।

सौन्दर्य्य के विचार से हमारा क्या तात्पर्य है

हम इस शब्द सौन्दर्य्य से क्या समझते हैं? कोष से पता लगता है कि सुन्दर वस्तु वह है जो हमें प्रशंसा करने पर बाध्य कराती है और जैसे ही हमारे नेत्र उसको देखते हैं हमें अत्यन्त प्रसन्नता होती है। तारे सुन्दर हैं। ताजमहल सुन्दर है। एक हिरन और एक घोड़ा सुन्दर है। समुद्र भी सुन्दर है। और साथ ही साथ शानदार है।

परन्तु सौन्दर्य्य शब्द की यह परिभाषा इस कथन के विरुद्ध नहीं है कि सौन्दर्य्य एक साम्बन्धिक पद है। एक धनी महाजन के विषय में एक कहानी है, जिसने सम्पूर्ण यूरोप का भ्रमण किया और जब वह वापिस आया तो उससे यह प्रश्न पूछा गया कि रोम के सम्बन्ध में उसका क्या विचार था? निराशाजनक भाव प्रगट करते हुए उसने कहा "रोम को तुम्हीं रक्खो।"

सौन्दर्य्य प्राप्ति के कुछ निश्चय साधन

यह दृष्टान्त सीमा पर पहुँच गये हैं परन्तु यह हमें भली

प्रकार ज्ञात होगया है कि सौन्दर्य्य को एक साम्बन्धिक पद लेना एक भयानक कार्य करना है।

परन्तु क्या ऐसे भी विश्वास जनक चिह्न हैं, जिनसे हम एक सुन्दर वस्तु को एक ऐसी वस्तु से, जो सुन्दर नहीं है, पृथक कर सकते हैं? हां; और वे चिह्न इतने विश्वासजनक हैं जितने कि वे चिह्न जिनके द्वारा हम अच्छा और बुरा या सत्य और असत्य मालूम कर सकते हैं। हम एक अच्छे कार्य और एक बुरे कार्य में किस प्रकार अन्तर बतला सकते हैं? क्या यह स्वाभाविक प्रेरणा का विषय है? नहीं; क्योंकि लाखों मनुष्य हमारे बताए हुए अन्तर को स्वीकार नहीं करते। उनकी बुद्धि यह बतलाती है कि उदाहरणार्थ निस्वार्थता, जिसे हम अच्छा कहते हैं, न केवल बुरा है परन्तु मूर्खता है। सौजन्यता के विषय में हमारा मत सदियों की लालसाओं और सदियों के विकास का फल है। इस पृथ्वी पर रहने वाले सब से महान व्यक्तिओं ने सौजन्यता के विषय में हमारा मत धीरे २ दृढ़ किया है। हम केवल स्वाभाविक प्रेरणा से ही अब यह ज्ञात कर सकते हैं कि क्या अच्छा है और क्या बुरा परन्तु यह प्रेरणा उन मनुष्यों के कारण उत्पन्न हुई है, जिन्होंने हमको विश्वास पूर्वक ज्ञान कराने के लिए, कि अच्छे और बुरे विचार या कार्य मे क्या अन्तर है, अनेक कष्टों का सहन किया।

यही दशा सत्य की है। स्वाभाविक प्रेरणा हमें प्रकृति के विषय में सहस्रों बातें बतलाती हैं, जो असत्य हैं; परन्तु सत्य

के प्रेमियों ने, जिन्होंने असत्य बोलने की अपेक्षा मृत्यु को अधिक उपयोगी समझा, हमारी बुद्धि को दृढ़ कर दिया है, जिससे हम केवल स्वाभाविक प्रेरणा द्वारा ही जान सकते हैं कि पृथ्वी चपटी नहीं है, कि यह स्थिर नहीं है और कि सूर्य न उदय होता है और न अस्त।

अमर सौन्दर्य की तीन महान विशेषताएँ

यही दशा सौन्दर्य की है। यदि हमें एक सुन्दर और एक कुरूप वस्तु के अन्तर का ज्ञान उत्पन्न करना है, तो यह अत्यन्त आवश्यकीय है कि हमें सौन्दर्य के प्रेमियों के पास जाना चाहिये जिन्होंने उसकी इच्छा पूर्ति के लिए कठिन परिश्रम किया है और जो अपने मरने के पश्चात् सौन्दर्य के अमर स्मारक छोड गये हैं। इसका यह तात्पर्य है कि सौन्दर्य की विशेषताओं का आदर करने के लिए हमें शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

एक अंग्रेज विद्वान ने हमें साधारण भाषा मे बतलाया है कि सौन्दर्य के विषय में यूनानियों का क्या मत था। वे सौन्दर्य को सजावट के अर्थ मे नहीं लेते थे। उनका तात्पर्य बनावट के, आकार के और अनुपात के सौन्दर्य से था अथवा साधारणता के सौन्दर्य से था।

यह अब हमें अच्छी तरह ज्ञात होगया कि यह सत्य है कि यथार्थ सौन्दर्य के लिये साधारणता और शुद्धता अत्यन्त आवश्यकीय हैं। भाषा का वास्तविक सौन्दर्य भी साधारणता और अचेतन शुद्धता पर निर्भर है।

शुक्र अपने भक्तों को एक अविनाशी उत्तेजक

यदि हम सुसज्जित इमारत को या एक सुसज्जित लेख को सुन्दर कहते हैं तो हम भूल करते हैं। ऐसो वस्तुएं पूर्णता में चाहे अद्वितीय और महिमाशाली हों, परन्तु वे सुन्दर कदापि नहीं हो सकतीं। एक फैशन से सुसज्जित स्त्री चाहे बाजार में जाते समय हलचल मचादे परन्तु उसका प्रभाव एक प्राचीन मूर्ति के समान अनन्त नहीं रह सकता। कुछ मनुष्यों ने यह दोष प्रकट किया है कि वे शुक्र के विषय में कोई सौन्दर्य अनुभव नहीं करते, वे शिल्पकारों और चित्रकारों का तात्पर्य नहीं समझ सके, परन्तु यूनानी ठीक थे क्योंकि शिक्षित मनुष्य का मस्तिष्क चाहे फुर्ती से थक जावे परन्तु तीक्ष्णता से कभी नहीं थकता। यूनानियों के लिये शुक्र एक देवी थी; वह एक क्षण के मन बहलाने का साधन नहीं थी। वह अपने भक्तों को अविनाशी उत्तेजना तथा साहस प्रदान करती थी।

अतएव सौन्दर्य्य में हमें पवित्रता और गौरव के चिह्न अवश्य देखने चाहिये—सागर पर्वत और तारों की तीक्ष्णता का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। सरलता, शुद्धता और तीक्ष्णता उस अमर सौन्दर्य्य के वह गुण हैं, जिसके अनेक महान व्यक्ति अब भी इच्छुक हैं और इच्छुक थे रूप का सौन्दर्य्य से कभी तुलना नहीं करनी चाहिए। यह कभी विचार नहीं करना चाहिए कि सरकस कि सुन्दर लैम्प तारों से अधिक श्रेष्ठ हैं।

यह बात तो विचारनी ही नहीं चाहिए कि आभूषण और सजावट सन्तुष्ट कर सकती हैं। इस बात का अवश्य स्मरण कर लेना चाहिए कि हम को समोसे चाहे कितने ही अच्छे क्यों न लगें, हम अत्यन्त शीघ्र ही उन्हें खाते खाते थक जावेंगे।

दूसरों के सामने अपने गुण न वर्णन करना।

सत्य और असत्य सौन्दर्य्य के अन्तर का ज्ञान करने का सबसे सुगम मार्ग आचार के साम्राज्य में है। ईसा ने मनुष्य को यह सिखाया कि अपने गुणों का वर्णन दूसरों के सामने कभी न करो। उसने जगत को दिखला दिया कि केवल वही व्यवहार सुन्दर है, जो गर्वहीन, दयालु और निष्कपट है।

अन्तिमकार, हम बहुधा यह कहा करते हैं कि सौन्दर्य्य की शिक्षा हमारे भौमिक विपद्जनक कार्य्यों का एक मुख्य अंश है। काश्मीर में एक बार एक यात्री इस चिन्ता से अचेत होकर गिर पड़ा कि उसे यह विचार हुआ कि उस प्रान्त के उत्कृष्ट सौन्दर्य्य का प्रभाव मनुष्यों की अपेक्षा खेत में चलने वाले पशुओं पर अधिक था। इसके द्वारा उसे यह विचार हुआ कि यदि वह सौन्दर्य्य को देख सकता होता, सौन्दर्य्य जो उसकी आत्मा को स्वर्ग में पहुंचा देता, जहां यह मनुष्य कोई भी विचित्र वस्तु न देख सकते, न किसी वस्तु की

प्रशंसा कर सकते, तो इस पृथ्वी पर इतनी सुन्दरता होती कि वह उस पर विचार तक न कर सकता।

यह नेत्र नहीं, परन्तु आत्मा है, जो देखती है

उसके साथ के अन्य मनुष्यों की नेत्र दृष्टि उससे अधिक तीक्ष्ण थी, फिर भी दृश्य के विचित्र सौन्दर्य्य को कोई भी न देख सका। उस यात्री ने अन्त में चिन्तित भाव से यही प्रकट किया कि" नेत्र नहीं देखते परन्तु आत्मा देखती है।

यदि हम अपने जीवन की यात्रा मे यह स्मरण रक्खें कि यह हमारे अन्दर की अमर आत्मा ही है, जिसके द्वारा हम अच्छे और बुरे की, सत्य और असत्य की, सौन्दर्य और कुरूपता की पहिचान करते है, तो हम अपने न्याय में बहुत कम भूलें किया करेंगे इस ज्ञान के द्वारा हमें एक ऐसा परिमाण मिलता है जिससे हम प्रत्येक वस्तु नाप सकते हैं। उस अविनाशी परिमाण के होते हुए कोई मोहित करने वाली वस्तु सुन्दर नहीं मानी जावेगी। अपने मस्तिष्क में इस परिमाण को सदैव रखना चाहिए ताकि हम असत्य सौन्दर्य्य से धोखा न खाजावें। आओ हम अपनी आत्मा के द्वारा इस जगत के उस अदृश्य सौन्दर्य्य का पता लगावें, जिसका निरूपण करना अभी शेष है।

साथ ही साथ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि जैसे हम अपनी अमर आत्माओ द्वारा यथार्थ सौन्दर्य्य को देखते हैं,

अपने शारीरिक नेत्रों की भांति हमें अपने आत्मिक नेत्रों को भी शिक्षा देनी चाहिए अन्यथा वह अनुचित प्रयोग के कारण दुर्बल हो जावें और सम्भव है अन्धे हो जावें। आत्मिक सौन्दर्य्य की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि हम उसकी खोज करें और यदि हमें सौभाग्य से उसके दर्शन भी हो जावे तो हमारी आत्मा को उसका उचित आदर करने का ज्ञान भी होना चाहिए।

तेरहवां अध्याय

कर्तव्य

हमारा इतिहास इस शब्द से भरा पड़ा है। भारत के इतिहास में इसे सबसे अधिक महिमाशाली शब्द और भारतीय आचारों में इसे सबसे अच्छा कार्य कहना अत्युक्ति न होगी। कर्तव्य के मार्ग पर चलने के ही कारण हम अभी बिल्कुल नष्ट नहीं हुए, क्यों कि हम में आपस में प्रेम नहीं है।

हमें समाचार पत्रों से लगभग प्रति दिवस यह ज्ञात होता है कि अमुक मनुष्य इस कठिन किन्तु सरल पाथ का अनुसरण करके कीर्ति को प्राप्त हो गया है और हम इन कार्यों को बिना आश्चर्य किए हुए स्वीकार कर लेते हैं। ऐसे कार्यों के होने की हम आशा रखते हैं। इससे विपरीत जाति के समाचार हमें आश्चर्य से चकित कर देंगे। यदि एक जलयान पानी में डूबने

वाला हो और अन्य यात्रियों के पूर्व उसका कप्तान अपने जीवन की संरक्षता की खोज में लग जाता है तो जगत भर में सनसनी फैल जावेगी। यदि एक जलते हुए मकान मे एक बच्चे के प्राण बचाने के वास्ते एक अग्नि बुझाने वाला अन्दर जाने से अस्वीकार कर देता है। तो देश में प्रत्येक मनुष्य स्तम्भित हो जावेगा यदि एक न्यायाधीश रिश्वत ले ले या एक राजनीति विशारद शत्रुओं से मिल जावे, तो ये बाते सुनकर यथार्थ मे हम भयभीत हो जावेंगे।

हमें यह विचार नहीं करना चाहिये कि कर्तव्य की यह उच्च भावना हमारे जीवन मे या हमारे पूर्वजों के जीवन में सदैव रही है। इङ्गलिस्तान की ओर ही तनिक ध्यान दो। बादशाह हैनरी द्वितीय के पुत्र अपने देश के विरूद्ध फ्रॉस के बादशाह के साथ मिलने को तय्यार थे। चार्ल्स द्वितीय भी कपटी था। फ्रान्सिस बैकन (Francis Bacon) जब लार्ड चान्सैलर (Lord Chancellor) था, तो रिश्वत लिया करता था और अभी थोड़े दिन हुए जब तक गिरजेघर मे व्यवहारिक कार्य होते थे।

नहीं, अब हमें कर्तव्य की उच्च कल्पना है। हमारे पूर्वजों ने इस पाथ का अनुसरण उस समय किया था, जब उनके चारों ओर अज्ञानता और कपट का शासन था। और देखो कि उन्होंने तुम्हारे लिये क्या किया है।

अपने दैनिक जीवन में हमे यह पूर्ण विश्वास है कि हमारे

सहयोगी अपने कर्तव्य-पथ से च्युत नहीं हो रहे है। हमे रेल में चढ़ते समय यह चिन्ता नहीं रहती कि रेल चलाने वाला गलती कर सकेगा। हम अपने पास मूल्यवान वस्तुएँ रखते हैं इसी विश्वास पर कि पुलिस के सिपाही स्वधर्म पालन से मुख नहीं मोड़ेगें। हम अपने महाजन, वकील और दलालों को उपदेश देकर निश्चिन्त हो जाते हैं क्यों कि हमें विश्वास है कि वे अपना कर्तव्य पालन करेंगे। हम अपने बच्चों को पाठशाला में पढ़ने के लिए भेजते हैं क्यों कि हमें पूर्ण रूप से विश्वास है कि उनके शिक्षक अपना कर्तव्य पालन करेंगे। उन भेदों के ऊपर विचार करो जो कि हम चिट्ठी डालने के बक्स में डाल देते हैं केवल इसी विश्वास पर कि डाकखाना अपने कर्तव्य का पालन करेगा।

एक समय जब रेल के अधिकारियों और कर्मचारियों में बहुत झगड़ा था और प्रत्येक मनुष्य को हड़ताल की दैनिक सम्भावना थी, तो हमें याद है कि एक टिकट जाँचने वाला एक बड़े स्टेशन पर एक यात्री से, जो एक तीसरे दर्जे का टिकिट लिए हुए एक प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठा था, आग्रह, कर रहा था कि उसे उन दोनों श्रेणियों के अन्तर का किराया देना ही पड़ेगा।

इस अवसर पर हमें ज्ञात हुआ कि वास्तव में यह कर्तव्य पालन का एक अत्यन्त मनोहर दृष्टान्त था। वह टिकिट-परीक्षक अपने कार्यकर्ताओं से अवश्य क्रुद्ध था और इसी कारण वह

हड़ताल में सम्मिलित होना चाहता था परन्तु कर्तव्य पालन का इन्द्रिय ज्ञान उसे यह आज्ञा नहीं देता था कि एक कपटी यात्री उन अधिकारियों को लूट ले। उसने अपने आपको उस गाड़ी के सब यात्रियों के टिकिट देखने का कष्ट दिया और विशेष कर उस यात्री के साथ, जिससे वह किराया लेने के लिये आग्रह कर रहा था।

कर्तव्य पालन का यही ज्ञान हमें सरकारी नौकरी में सफलता पूर्वक जीवन व्यतीत करने का अपूर्व अवसर देता है, विशेष कर हमारे देश में जहां इसी के द्वारा शान्ति तथा न्याय स्थापित है। कोई यात्री जिस किसी ब्रिटिश प्रजापालित राज्य में जाता है, उसे अनुभव होता है कि मनुष्य अपना कर्तव्य पालन विश्वास रूप से तथा निष्कपट भाव से कर रहे हैं न केवल अपने वेतन के वास्ते किन्तु अँग्रेजों की सम्मानता को ध्यान में रखते हुए।

खिड़की में से देखते समय प्रधान मन्त्री का विचार

हमारे एक प्रधान मन्त्री लार्ड सैलिसबरी (Lord Salisbury) ने एक बार कहा था कि बहुधा अपने क्लब की खिड़की में से होकर सड़क पर चलते हुए मनुष्यों को देखकर यह विचार उत्पन्न होता था कि 'मैं सड़क पर चला जाऊँ

और एक सर्वप्रथम दिखलाई देने वाले मनुष्य के कन्धे पर हाथ रख कर उससे इङ्गलिस्तान से तीन चार गुणे एक देश को जाने और शासन करने के लिए कह दूँ, यदि मुझे यह विश्वास हो जावे कि उसके शासन विधान न्याय कार। तथा निष्पक्ष होंगे।

कर्तव्य पालन का ऐसा विचार लगभग प्रत्येक मनुष्य के हृदय में उत्पन्न हो उठता है और उसके ऊपर अभिमान करना भी अनुचित नहीं है। परन्तु यह शब्द 'कर्तव्य' इतना महान है कि इसके ऊपर स्वयं सन्तुष्टि ही यथेष्ट नहीं है किन्तु कुछ और भी विचार करना है।

कर्तव्य क्या है? इस शब्द का अर्थ एक ऐसा कार्य है जो प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिये; जो रूचि के ऊपर निर्भर नहीं है किन्तु एक बन्धन है। कुछ ऐसे कार्य हैं जो हमारी इच्छा के ऊपर निर्भर हैं, जिन्हें हम कर भी सकते हैं और जिन्हें करने की विशेष आवश्यकता भी नहीं। परन्तु कुछ ऐसे कार्य हैं जो हमें करने ही पड़ते हैं। यह आवश्यकीय नहीं कि हम एक सभ्य स्त्री को नमस्कार करें, कि हम अपने हाथ शुद्ध रक्खें, कि हम अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करें, कि हम अपने आचार तथा विचार में उन्नति करें परन्तु हमें कर अवश्य ही देने चाहियें, हमें कानून का अवश्य ही आज्ञा पालन करना चाहिये, हमें अपना कर्तव्य पालन अवश्य करना चाहिए।

विश्व में ब्रिटेन का स्थान इतना महान् किस प्रकार हुआ ?

कभी कभी एक मनुष्य कहेगा कि "यह मेरा कर्तव्य ही न था", जबकि एक ऐसी घटना हो जावे जिसको वह बचा सकता था। ऐसे मनुष्य का कर्तव्य पालन का विचार बहुत तुच्छ है वह उसको एक ऐसा कार्य समझता है, जिसका उसे वेतन मिलता है। जब तक वह अपना "कर्तव्य" पालन करता है, उसका विचार है कि उससे अधिक आशा नहीं रखनी चाहिये परन्तु जब नैलसन (Nelson) ने ट्रैफेल्गर के युद्ध में विजय का अमर झण्डा फहराया था—इङ्गलिस्तान की आशा है कि प्रत्येक मनुष्य अपने कर्तव्य का पालन करेगा—तो कर्तव्य से उसका अर्थ था "मनुष्य अपनी शक्ति के अनुसार जितना कर सके और जो कुछ अच्छा कर सके" विजय के अतिरिक्त किसी अन्य कार्य का हिसाब नहीं था। किसी मनुष्य को स्वयं का विचार न था अंग्रेजी बेड़े की सम्पूर्ण आत्मा इङ्गलिस्तान की संरक्षता और समुद्र की स्वतन्त्रता के लिये युद्ध कर रही थी।

ब्रिटेन का अन्य राष्ट्रों मे इतना महान् स्थान पाने का एक यही कारण है कि उनके राष्ट्र के मनुष्यों ने कर्तव्य की भावना को एक बहुत उच्च स्थान दे रक्खा है। यदि एक ऐसे अंग्रेज की प्रशंसा की जाय, जिसने यथार्थ में वीरत्व का प्रमाण देकर आत्म का बलिदान किया हो, तो वह यह सुनकर केवल यही उत्तर देगा "मैंने केवल अपने कर्तव्य का ही पालन किया है।"

स्वतन्त्रता के गान से हमारा इतिहास क्यों भरा पड़ा है ?

एक तत्वशास्त्रज्ञ (Philosopher) द्वारा लिखे हुए इस वाक्य पर विचार करो "मध्यकाल में एक जागीरदार की प्रभुभक्ति एक कर्तव्य समझा जाता था और निज की स्वतन्त्रता का कहना एक अपराध।" मानलो हमारे पूर्वजों ने कहा था "हमको अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये; हमें निजकी स्वतन्त्रता के विषय में विचार ही नहीं करना चाहिये; शरीर और आत्मा सहित हमारा सम्बन्ध शासनकर्त्ता से है।" ऐसे द्वीपों का इतिहास कितना जड़ होगा ? परन्तु हमारा इतिहास स्वतन्त्रता के गान से और विपदाजनक कार्यों के सहन से क्योंकर भरा हुआ है ?

यह हमारे पूर्वजों के ही कारण है, जो कर्तव्य पालन के गुणों का निरन्तर वर्णन करते रहते थे। मध्यकाल में ऐसे मनुष्य थे जिनका यह विचार था कि उन्हें शासनकर्त्ता से अधिक अपने प्रति कर्तव्य पालन करना था। और वे अपनी आत्मा के अन्दर इस उच्च कर्तव्य से विमुख होने की अपेक्षा मृत्यु का सामना करने को तैयार थे। एक कागज के टुकड़े या केवल परम्परा नियम ने उनके लिये शासनकर्ता की सेवा करना एक कर्त्तव्य और निज की स्वतन्त्रता के विषय में विचार करना एक अपराध बना दिया हो, परन्तु उनकी आत्मा के अन्दर

की पुकार क्या कुछ अर्थ न रखती थी जोकि एक अधिक न्यायी कानून और एक अधिक ऊँचे कर्तव्य की प्यासी थी।

जगत के अनेक महा युद्धों में से एक

सम्पूर्ण इतिहास में यह पाया जाता है कि ऐसे मनुष्य भी थे, जिन्होंने परम्परा नियम और कानून के अनुसार कर्तव्य पालन करना अस्वीकार कर दिया और वह भी इस लिए नहीं कि उन्हें कर्तव्य पालन से घृणा थी अथवा वे शासन विधि के विरूद्ध थे, परन्तु इस कारण कि कर्तव्य पालन के वे विचार यथेष्ट ऊँची श्रेणी के नहीं थे और कानून अत्यन्त न्यायी नहीं था।

जगत के अनेक युद्धों में से एक वह था जब कि स्टुआर्ट (Stuart) वंश के बादशाह एक प्रकार के कर्तव्य का पालन करते थे और प्यूरीटन (Puritan) दूसरी प्रकार के। यदि कर्तव्य एक ऐसा घन पदार्थ है, जो सड़क पर गड़े हुए मील के पत्थर की भांति स्थिर है, तो स्टुआर्ट वंश वाले सही थे। परन्तु यदि कर्तव्य एक आत्मिक वस्तु है, यदि यह न्याय और सत्य के लिए मनुष्य की मनोकामना है, तो वे यथार्थ में गलत थे। वह विवाद अन्त में इस अवस्था को उतर आया "क्या बादशाह राष्ट्र को उसके कर्तव्य बतलावे या राष्ट्र अपना कर्तव्य स्वयं निश्चित करले?"

अन्तः करण की मौनता में दो शब्दों की पुकार

यह प्रसिद्ध लड़ाई हमारे मस्तिष्क में सदा से हो रही है। अन्तः करण की मौनता में हमें दो स्वर सुनाई पड़ते हैं। एक परम्परा नियम का स्वर है, जिसके अनुसार हमें अमुक कार्य करने चाहिए और अमुक कार्यों का निषेध करना चाहिये। दूसरा स्वर लालसा का है जो हमें अपने आचारों में उन्नति करने के लिये उच्च परिणाम बनाने का उपदेश देता है। अनेक मनुष्य केवल प्रथम स्वर को ही सुनते हैं। वे कदाचित ही कोई भूल करते हैं। वे कानून का विरोध नहीं करते। यदि वे अपने कर्तव्य पथ से च्युत हो जावें तो वे लज्जित होते हैं। वे अपना सम्मान कराना चाहते हैं। परन्तु ऐसे मनुष्यों का जगत् के भविष्य पर कितना कम प्रभाव पड़ता है और उनका जीवन कितना रूखा होगा? वही मनुष्य प्रसन्न है जिसकी आत्मा रीति बनाने के प्रयत्न में लगी रहती है।

थोड़ा समय व्यतीत हुए हाउस आफ कामन्स (House of Commons) के एक सदस्य आचार के विषय में वार्तालाप कर रहे थे और उनका कहना था कि "मनुष्यों के आचार इतने उच्च श्रेणी के नहीं हैं जितने कि स्त्रियों के।" इसको यह देख कर आश्चर्य हुआ कि कुछ नये सदस्यों ने चिल्लाकर विरोध किया "क्यों?" यह प्रश्न वास्तव में एक प्रश्न था कि उस गुण

निष्कपट मनुष्यों के मुँह से निकल ही गया "क्यों ?" इसका अर्थ यह है कि भविष्य के हम उत्तर दायी हैं। मनुष्य का कर्त्तव्य जो पचास वर्ष पूर्व था, वह आज दिन यथेष्ट नहीं है। वह वाक-विवाद जो बहुत से मनुष्य पुरुष और स्त्री जाति के सम्बन्ध में माने हुए अन्तरों पर विचार करने के लिए प्रयत्न करते हैं, प्राचीन नियम परम्परा पर ही निर्भर हैं, जिसके चिन्ह अब दिखलाई तक नहीं पड़ते। सब सम्भव अवसरों तथा काल में पुरुष और स्त्री दोनों ही समान उत्तरदायी हैं। सत्य और असत्य के सही और गलत के विचार में कोई लिङ्ग भेद नहीं है।

प्रत्येक मनुष्य का प्रथम और अन्तिम कर्तव्य उत्तमोत्तम कार्य करना है

कर्तव्य एक ऐसा कार्य है जो हमे करना ही चाहिये अर्थात् जिसके हम ऋणी हैं, परन्तु यह ऋण किसको देना है ? कर बादशाह को दिये जाते हैं। परन्तु और भी कर्तव्य है— अपने माता पिता के प्रति कर्तव्य, कार्य कर्ताओं और शिक्षकों के प्रति कर्तव्य, अपने पड़ोसियों के प्रति कर्तव्य। परन्तु फिर भी और प्रकार के कर्तव्य हैं। हम कहते हैं कि "अपनी आरोग्यता के ऋणी हम स्वयं हैं।" तो अवश्य एक ऐसी कोई वस्तु है जिसके हम अपने आप ऋणी हैं। बुद्धिमान होना हमारा कर्तव्य है। परन्तु फिर भी एक और कर्तव्य है, जो अन्य सर्व

कर्तव्यों से उच्च श्रेणी का है। वह है परमात्मा के प्रति हमारा कर्तव्य।

इस कर्तव्य से हमारा क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि हमारी आत्माओं को सौन्दर्य्य, सौजन्यता और सत्य में सदैव उन्नति करते रहना चाहिए। क्यों? क्यों कि परमात्मा मनुष्य जाति को उन्नति करने के लिए उपदेश दे रहा है, उसकी इच्छा है कि मनुष्य कुलीन हो। प्रत्येक मनुष्य का प्रथम और अन्तिम कर्तव्य उत्तमोत्तम कार्य करना है। यदि इस कर्तव्य के प्रति हम चिन्ता रक्खें, तो अन्य कर्तव्य अपनी चिन्ता अपने आप कर लेंगे।

चौदहवां अध्याय

अदृश्य

नेत्रों का बिना नेत्रों वाला प्रसिद्ध खेल अनन्तकाल से चला आता है। यह खेल उस समय से आरम्भ हुआ है जब मनुष्य एक जीवन आत्मा बन गई। सम्भव है मनुष्य के मस्तिष्क में आश्चर्य का सर्व प्रथम विचार यही था कि वह अपने नेत्रों द्वारा सृष्टि को तमाम आश्चर्य करने वाली वस्तुओं को नहीं देख सकता था।

हमें प्राचीन मनुष्यों के असत्य विश्वास से पता लगता है कि मनुष्य के हृदय में अदृश्य की भावनाएँ कभी २ उठती थी।

मनुष्य, जब पशुओं के आधार छोड़ रहा था परन्तु एक जीवित आत्मा में परीणित नहीं हुआ था, पृथ्वी के विषय में आश्चर्य चकित होकर देखता था।

जबकि सब अन्य जीव जगत को जैसा है वैसा मानते थे और उसे केवल अपनी लालसा की सन्तुष्टि का एक साधन समझते थे, मनुष्य ने यह सोचा कि उसका जन्म एक रहस्य से भरे हुए जगत में हुआ था। मनुष्य के लिए यह मनोहर और महिमाशाली पृथ्वी केवल पेट पूजा के लिए ही नहीं बनाई गई। जब क्षुधा मिटाने के लिए उसने बेर तोड़ लिए थे वह समुद्र की ओर देखता हुआ और उसका वज्रनाद सुनता हुआ खड़ा था। मनुष्य के इतिहास मे आरम्भ से ही मनुष्य का मस्तिष्क बिना प्रश्न किए हुए नहीं रह सका।

प्राचीन मनुष्य के मस्तिष्क में अनेक विचार उत्पन्न हुए जिनको सभ्य मनुष्यों के मस्तिष्क में कोई स्थान नहीं दिया गया। परन्तु अदृश्य के सम्बन्ध में विचार न केवल अब तक चही चला आता है, विज्ञान तत्वशास्त्र और धर्म की पुस्तकों में उसने न केवल उत्तेजना दी है, परन्तु वह सत्य सिद्ध कर दिया गया है। विज्ञान सदा से नेत्रों का बिना नेत्रों वाला खेल कर रही है और अब वह खेल अदृश्य के साम्राज्य में बहुत अच्छी तरह खेला जा रहा है। विज्ञान से हमें ज्ञात होता है कि हमारा जीवन हमारे नेत्रों पर ही निर्भर है और उन नेत्रों द्वारा देखी हुई वस्तु, चाहे Telescope अथवा Microscope द्वारा कितनी

ही बड़ी बनादी जावे, इस सृष्टि के एक कण से तनिक भी अधिक नहीं है।

अदृश्य के साम्राज्य में वैज्ञानिक अन्वेषण के समाचारों को सुन सुन कर तत्वशास्त्रज्ञों (Philosophers) का कहना है कि हमारे जीवन का भी अधिकांश अदृश्य है। जगत का बच्चा बच्चा प्रेम के विषय में ऐसे बात करता है मानों वह गुलबहार की भांति एक साधारण वस्तु हो। परन्तु क्या किसी ने कभी प्रेम देखा है ? हमने एक माता अपने बच्चे पर चुम्मा लेती हुई देखी है परन्तु वह अधरों का मिलाप केवल प्रेम का संदेश है जैसे अङ्गड़ाई लेना थकावट का संदेश है, या सीटी बजाना आनन्द का सन्देश है। परन्तु प्रेम के दर्शन किसने किये हैं ? किसी ने भी नहीं। न कोई (Telescope) ही और न (Microscope) ही पृथ्वी पर सबसे महान वस्तु को मानुषिक दृष्टि में ला सकता हैं और यह वह वस्तु है जो प्रत्येक बच्चा जन्म पाते ही मान लेता है।

तत्वशास्त्र हमें यह स्मरण कराता है कि हमारे जीवन का अधिक अंश अदृश्य में व्यतीत होती है। मनुष्य की सबसे भारी गलतियाँ इसी विचार के कारण होती हैं कि वे यह समझते हैं कि इस पृथ्वी पर जो कुछ देखने के लिए है वह हम देखते हैं। कुछ मनुष्यों का कहना है कि वे अदृश्य वस्तुओं पर विश्वास नहीं करते और वे धार्मिक मनुष्यों की हँसी उड़ाते हुए अपने आपको बहुत बुद्धिमान समझते हैं। परन्तु वे यह

समझते कि वे नेत्र अन्धे हैं जिनमें इनका इतना गूढ़ विश्वास है और यदि उन्हें अदृश्य में अनुमित विश्वास नहीं है तो उनका जीवन ही वृथा है। बिना अदृश्य शक्तियों की सहायता के यह किस प्रकार सम्भव था कि वे एक घण्टा भी जीवित रह सकते?

वे मूर्ख मनुष्य, जो जीवन का आनन्द और सौन्दर्य खो देते हैं

ऐसे अज्ञान मनुष्य अपने जीवन का सौन्दर्य्य और बहुत सा आनन्द खो देते हैं। वे बहुत कर पशुओं की भांति हो जाते हैं।

पशु का स्वभाव है कि वह केवल दृश्य जगत को निस्सन्देह स्वीकार कर लेता है। मनुष्य का स्वभाव है कि वह अदृश्य जगत का निरन्तर अन्वेषण करता रहे।

अदृश्य पर हँसी करने वाले मनुष्यों को अपनी मूर्खता प्रकट करने का एक बहाना है, क्यों कि मनुष्य के प्राचीन इतिहास में ऐसे धोखा देने वाले मनुष्य थे जो अदृश्य पर विश्वास करने वालों का विरोध करते थे और उनका कहना था कि वे अदृश्य पर उनकी अपार शक्ति थी और जादू के प्रभाव से उस अदृश्य के साम्राज्य में वे विचित्र कार्य कर सकते थे।

उसी दिन से विश्व भर के प्रत्येक राष्ट्र में ऐसे धोखे बाज मनुष्य हो गये हैं जो अपने को जादू में प्रवीण प्रसिद्ध करते हैं,

और सरल मनुष्यों के साथ छल और कपट का व्यवहार करते हैं। इसीलिए एक मन्द मती पुरुष के लिए यह बहाना है कि वह रहस्य को एक व्यर्थ वस्तु बता कर टाल देता है।

सत्य की खोज करने वाले मनुष्य और विज्ञान में गूढ़ मित्रता है और विज्ञान के द्वारा एक ऐसे प्रसिद्ध जादू में प्रवीण मनुष्य के लिए यह अत्यन्त कठिन हो जाता है कि वह एक कपटी सिक्का बना सके। विज्ञान के द्वारा अदृश्य का विशाल और महिमाशाली साम्राज्य में आत्मा के नेत्रों के सामने दिखलाई दे जाता है। परन्तु यह साम्राज्य कानून और शान्ति बुद्धि और ज्ञान का है।

इस साम्राज्य में ऐसी अनेक वस्तुएँ हैं, जिनसे हमें आश्चर्य उत्पन्न होता है। इसमें ऐसी अनेक वस्तुएँ हैं, जिनके सामने सम्मान और भक्ति के कारण हमें शिरनवाना पड़ता है; और इसमें ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जिसके द्वारा हम अपनी भलाई के लिए सृष्टि को धोखा दे सकें।

यह हमारी वर्तमान अवस्था है। विज्ञान ने नेत्रों और बिना नेत्रों वाला खेल ऐसे उद्देश्य से खेला है कि अब वह हमारे जगत के विषय में एक असाधारण बात अवश्य बतला सकती है। यह मनोहर जगत जो हमारी बुद्धि के लिये यथार्थ है, वास्तव में एक अदृश्य जगत है।

यह जगत हमारी बुद्धि के लिए यथार्थ है। एक द्वार हमारे स्पर्श के लिये ठोस है और हमारे नेत्रों के लिये अभेद्य है।

परन्तु जैसे एक्स-रे (X-ray) द्वारा एक बन्द द्वार के पीछे की वस्तुओं का चित्र खींचा जा सकता है, इसी प्रकार एक दिन पृथ्वी के अन्दर की सब वस्तुएँ किसी वैज्ञानिक अविष्कार से दिखलाई पड़ने लगेंगी। सम्पूर्ण वस्तुएँ की रचना परमाणु से हुई है और तमाम परमाणुओं का अन्तिम परमाणु विद्युतांश है। हमें यही समझना चाहिये कि यह जगत एक ठोस वस्तु है। परन्तु एक विचारणीय मनुष्य की भाँति हमें इस पृथ्वी को एक गोला समझना चाहिए, जो ईथर (Ether) में घूम रहा है।

यह कहना अनुचित न होगा कि सौ वर्ष पश्चात सबसे अच्छी अध्ययन करने योग्य पुस्तकें वे होंगी जिनमें वैज्ञानिकों की अदृश्य में यात्राओं का वर्णन करने वाली कहानियां होंगी।

दृश्य वस्तुएँ सांसारिक और अदृश्य वस्तुएँ अविनाशी हैं

उस समय तक विश्व भर में कोई भी मनुष्य यह विचार न करेगा कि यह दृश्य सृष्टि वास्तविक है। उस काल में रहने वाला प्रत्येक मनुष्य अदृश्य को ही यथार्थ जानेगा और स्वयं अपने जीवन को उसके प्रेम, आशाएँ, इच्छाएँ, भय और उद्देश्य को—अदृश्य समझेगा।

फिर एक आत्मिक अवस्था में, अपने आपको पशु न विचार करते हुए, अपने मस्तिष्क में यह विचार न करते हुए कि यह

जगत और इस जगत की वस्तुएँ इसकी आवश्यकताओं को कभी दूर नहीं कर सकती, मनुष्य, जो इस पृथ्वी का अदृश्य मस्तिष्क है, आत्मिक यथार्थता की उच्च वस्तुओं की खोज महान शक्ति और परमोत्साह से करेगा और जब तक अविनाशी जीवन को प्राप्त न कर लेगा, वह अपनी यात्रा में निरन्तर चलता ही रहेगा।

वर्तमान काल के सङ्कट और शोक अब समाप्त होते जारहे हैं। अपरमार्थिकता की वह केवल एक दशा प्रकट करते हैं। चाहे राजनीतिज्ञ आपस में वादानुवाद करें, चाहे व्यापारी एक दूसरे से अपनी वस्तुओं के विक्रय के लिए झगड़ा करें और चाहे अज्ञान पुरुष जीवन के इस उद्देश्य में विश्वास रक्खें कि "खाओपीओ और आनन्द करो" परन्तु शान्तिपूर्वक, एक विजय के पश्चात् दूसरी विजय प्राप्त करते हुए, विज्ञान हमें उस परदे के समीप लाता जाता है, जिसके पीछे अदृश्य, मनुष्य के मस्तिष्क के परिश्रम का पारितोषिक देने के लिए प्रतीक्षा कर रहा है। और यह पारितोषिक क्या होगा? यथार्थता का अनन्त जीवन।

पन्द्रहवाँ अध्याय

धैर्य्य

जीवन के विषय में अनेक चित्ताकर्षक बातों में से एक यह है कि वह सुगम नहीं है। यदि वह कठिन न होता, तो

हम अति शीघ्र ही थक जाते। मनुष्यको जीवन से प्रेम इसी कारण है कि वह कठिन है क्योंकि उनके मस्तिष्क और शरीर की शक्तियाँ सब काम में आती रहती हैं।

बहुधा एक मनुष्य यह कहता हुआ सुनाई पड़ता है "सरल करो, सरल करो!" और कुछ अन्य पुरुष यह कहते हुए उसके पीछे दौड़ते हैं कि "हां, यही हम चाहते हैं; हम सभ्यता से रोग ग्रस्त हैं, हम युद्ध से तङ्ग आगये; चलो प्रकृति को लौट चलें।"

परन्तु सत्य तो यह है कि जीवन इससे अधिक साधारण नहीं हो सकता। मान लो कि मनुष्य जाति इस सभ्यता से थक जावे, जो वास्तव में इतिहास में एक नई वस्तु है, और चारवाहे के जीवन की सरलता पर लौटने का निश्चय करले। और मान लो कि इस पृथ्वी पर रहने वाले करोड़ों मनुष्यों के लिए भोजन सामग्री है और न कोई युद्ध है, न घृणा और न धनोपार्जन के लिए मुठभेड़। और यह भी मान लिया जावे कि सम्पूर्ण प्राचीन राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं की पूर्ति हो जावे। फिर भी जीवन का व्यतीत करना एक कठिन कार्य है।

यह इसलिये कठिन है कि मनुष्य का मस्तिष्क इस पृथ्वी की किसी भी दशा से या किसी भी अधिकार से सन्तुष्ट नहीं हो सकता। मस्तिष्क परमात्मा की उत्पत्ति है अतएव वह केवल परमात्मा के यहां ही विश्राम कर सकता है। जबतक

वह पृथ्वी पर है, उसकी शारीरिक दशा चाहे कुछ भी हो, मनुष्य सन्तुष्ट कभी न होगा किन्तु सदैव चिन्तित ही रहेगा।

धैर्य्य के विचार में, मनुष्य को लिए एक सरल जीवन व्यतीत करने की कठिनता का यह एक अच्छा उदाहरण है। यदि सद् गुणों की एक सूची बनाने के लिए कहा जावे, तो अधिकतर मनुष्य धैर्य्य को इसमें अवश्य सम्मिलित करेंगे। धैर्य्य, छटे २ पर्वतों के समान, अत्यन्त प्राचीन काल से चला आता है। ईसाई धर्म के जन्म के पूर्व ही प्राचीन हो जाने वाले धर्मों का यह अन्तः करण था। और इसकी उत्पत्ति की खोज करने से पता लगता है कि स्वीकृत इसका पिता, प्राणघातकता इसकी माता और ऐशिया इसका जन्म स्थान था। धैर्य्य एक गुण है, एक सद्गुण है परन्तु अनेक सद्गुणों के समान यह भी एक दुष्ट कार्य हो सकता है।

अब, देखो मनुष्य का जीवन कितना कठिन है। मानलो एक ऐसा मनुष्य जो प्रत्येक कार्य में और प्रत्येक वस्तु में सरलता का इच्छुक है, हमसे कहे कि "यदि तुम इस प्रकार जीवन व्यतीत करना चाहते हो जैसा कि परमात्मा तुमसे आशा रखता है, तो सद्गुणों का अनुसरण करो और छल, कपट आदि पापों से कोई सम्बन्ध न रक्खो", तो हमें यह कहना चाहिये कि "हां, यह बिल्कुल साधारण है जो कुछ हमें करना चाहिये वह यह है कि सही मार्ग पर चलकर कुमार्ग से मुख मोड़ते हुए अपना जीवन व्यतीत करें।"

परन्तु थोड़े समय पश्चात् हमें यही अपने मन में सोचना चाहिये कि नहीं, जीवन इतना सरल नहीं है। इतिहास में अनेक भयानक दुःख धार्मिक पुरुषों के कार्यों के फल थे। निर्दयी और कठोर दिल अनेक पुरुष सद्गुणी हुए हैं। वर्तमान काल में भी हम ऐसे मनुष्यों को जानते हैं जो यद्यपि सद्गुणी थे परन्तु सदैव सब के प्रिय नहीं थे। और फिर हमें यह भी देखना चाहिए—जो कि जीवन में अवश्य देखना चाहिए कि गुण भी भयानक हो सकते हैं। आओ, इस बात का सामना करें, न कि इसे सुन कर ही भाग जावें। यह हमें अपनी यात्रा सफलता पूर्वक समाप्त करने में सहायता देगी।

प्रार्थना की पुस्तक में धैर्य के विषय में सुन्दर शब्दों का प्रयोग

मस्तिष्क को उन महान और आवश्यकीय कठिनाइयों को सरल बनाने का प्रयत्न ही न करना चाहिए, जिनको परमात्मा ने बुद्धि और शक्ति की उन्नति करने के लिए दिया है।

आओ धैर्य की कठिनाई का सामना करें। कलकत्ते के एक बड़े अस्पताल में एक मनुष्य एक दुःखदायक रोग से मर रहा है; उसकी भौंहें क्रोध से भरी हुई हैं; उसके नेत्र क्रोध प्रकट कर रहे हैं, वह अपने दाँत पीस रहा है और विद्रोह और बलवे को श्राप दे रहा है। अन्त में हमें यही कहना पड़ेगा कि "इस बिचारे मनुष्य ने धैर्य के सद्गुण को अभी नहीं सीखा

वह पृथ्वी पर है, उसकी शारीरिक दशा चाहे कुछ भी हो, मनुष्य सन्तुष्ट कभी न होगा किन्तु सदैव चिन्तित ही रहेगा।

धैर्य्य के विषय में, मनुष्य को लिए एक सरल जीवन व्यतीत करने की कठिनता का यह एक अच्छा उदाहरण है। यदि सद् गुणों की एक सूची बनाने के लिए कहा जावे, तो अधिकतर मनुष्य धैर्य्य को इसमें अवश्य सम्मिलित करेंगे। धैर्य्य, छटे २ पर्वतों के समान, अत्यन्त प्राचीन काल से चला आता है। ईसाई धर्म के जन्म के पूर्व ही प्राचीन हो जाने वाले धर्मों का यह अन्तः करण था। और इसकी उत्पत्ति की खोज करने से पता लगता है कि स्वीकृत इसका पिता, प्राणघातकता इसकी माता और ऐशिया इसका जन्म स्थान था। धैर्य्य एक पुण्य है, एक सद्गुण है परन्तु अनेक सद्गुणों के समान यह भी एक दुष्ट कार्य हो सकता है।

अब, देखो मनुष्य का जीवन कितना कठिन है। मानलो एक ऐसा मनुष्य जो प्रत्येक कार्य में और प्रत्येक वस्तु में सरलता का इच्छुक है, हमसे कहे कि "यदि तुम इस प्रकार जीवन व्यतीत करना चाहते हो जैसा कि परमात्मा तुमसे आशा रखता है, तो सद्गुणों का अनुसरण करो और छल, कपट आदि पापों से कोई सम्बन्ध न रक्खो", तो हमें यह कहना चाहिये कि "हां, यह बिल्कुल साधारण है जो कुछ हमें करना चाहिये वह यह है कि सही मार्ग पर चलकर कुमार्ग से मुख मोड़ते हुए अपना जीवन व्यतीत करें।"

परन्तु थोड़े समय पश्चात् हमें यही अपने मन में सोचना चाहिये कि नहीं, जीवन इतना सरल नहीं है। इतिहास में अनेक भयानक दुःख धार्मिक पुरुषों के कार्यों के फल थे। निर्दयी और कठोर दिल अनेक पुरुष सद्गुणी हुए हैं। वर्तमान काल में भी हम ऐसे मनुष्यों को जानते हैं जो यद्यपि सद्गुणी थे परन्तु सदैव सब के प्रिय नहीं थे। और फिर हमें यह भी देखना चाहिए—जो कि जीवन में अवश्य देखना चाहिए कि गुण भी भयानक हो सकते हैं। आओ, इस बात का सामना करें, न कि इसे सुन कर ही भाग जावें। यह हमें अपनी यात्रा सफलता पूर्वक समाप्त करने में सहायता देगी।

प्रार्थना की पुस्तक में धैर्य के विषय में सुन्दर शब्दों का प्रयोग

मस्तिष्क को उन महान और आवश्यकीय कठिनाइयों को सरल बनाने का प्रयत्न ही न करना चाहिए, जिनको परमात्मा ने बुद्धि और शक्ति की उन्नति करने के लिए दिया है।

आओ धैर्य की कठिनाई का सामना करें। कलकत्ते के एक बड़े अस्पताल में एक मनुष्य एक दुःखदायक रोग से मर रहा है; उसकी भौंहें क्रोध में भरी हुई हैं; उसके नेत्र क्रोध प्रकट कर रहे हैं, वह अपने दाँत पीस रहा है और विद्रोह और बलवे को श्राप दे रहा है। अन्त में हमें यही कहना पड़ेगा कि "इस बिचारे मनुष्य ने धैर्य के सद्गुण को अभी नहीं सीखा

है। "हम उसके लिए शोक प्रकट करते हैं। उसने अपनी शारीरिक आरोग्यता की अपेक्षा एक बहुत बढ़िया वस्तु खो दी है।

यह हमें प्रत्यक्ष है और उस मनुष्य को भी होना चाहिये कि उसकी भौं चढ़ाना और बरबराना उसके लिए तनिक भी लाभ दायक नहीं है। कोई औषधि उसे आरोग्यता प्रदान नहीं कर सकती। वह एक ऐसी दशा में है जब परमात्मा की इच्छा पर ही सब कुछ छोड़कर उसे शान्ति प्राप्त हो सकती है और विद्रोह के कारण वह उस शान्ति से कोसों दूर है। केवल धैर्य की आवश्यकता है।

एक प्रकार का धैर्य, जिससे हमें धैर्य नहीं हो सकता

परन्तु हमारे विचार के लिये यहां एक और दृश्य है। एक केले के वृक्ष के नीचे हाथ जोड़े हुए और भारी नेत्रों सहित एक भारतीय किसान भूखा मर रहा है- उसके बच्चे प्लेग की भेंट होगये और पानी की वर्षा ने उसके चावल के खेत नष्ट कर दिये। उसने अपनी इच्छा को ईश्वर की इच्छा के समर्पण कर दिया है। वह दुःख सहन करते हुए भी धैर्य धारण कर रहा है। वह इसे सृष्टि का कानून स्वीकार करता है कि उसके दुःखों का परिणाम आनन्ददायक नहीं होगा। उसमें धैर्य का वह कठिन सद्गुण है, जिसका उस विद्रोही रोगी में पूर्ण अभाव था।

फिर भी, क्या तुम उसकी प्रशंसा करते हो ? क्या तुम यह विचार कर सकते हो कि वह यथार्थ में एक सद्‌गुणी है ? क्या उसके धैर्य्य के साथ तुम्हारा कोई धैर्य है ?

तुम्हारा हृदय कैसे उछलता है और तुम्हारे नेत्र आशा और अभिमान से कैसे चमक उठते हैं जबकि तुम्हारे देश के दो निवासी महामारी और भूख के दृश्य में दिखलाई देते हैं— एक प्लेग की चिकित्सा से और दूसरा प्यासी पृथ्वी की चिकित्सा से। हम देखते हैं कि वे गिरे हुए पुरुषों के ऊपर झुकते हैं और उनमें नये जीवन का सञ्चार करते हैं, हम देखते हैं कि वे महा नदियों को सूखी पृथ्वी में परिणित करते हैं, जो गुलाब के फूल की भांति खिलते हैं और हम अपने आपको कहते हैं कि "एशिया को धैर्य धारण करने दो और यूरोप के निवासियों को मानुषिक जीवन की बुराइयों का विरोध करना चाहिए।"

परन्तु तनिक प्रतीक्षा करो। जीवन इतना सरल नहीं है क्या प्लेग की चिकित्सा एक आत्मिक दृष्टि द्वारा हुई ? क्या सींचने का यन्त्र रहस्य एक स्वप्न में दिखाई दिया था ? एक क्षण के लिए रुक जाओ। उन दो मनुष्यों से पूंछो कि ऐसी महान शक्ति का ज्ञान उन्हें कैसे हुआ। एक तो अदृश्य रोग के ऊपर शक्ति और दूसरी सूखी पृथ्वी के ऊपर शक्ति। वे हमसे यही कहेंगे कि "इन वस्तुओं के समझने के लिए हमने वर्षों अध्ययन किया है परन्तु अब भी हम सन्तुष्ट नहीं हैं कि इन सङ्कटों के लिए हमने सबसे अधिक उपयोगी औषधि का अन्वे-

प्राप्त कर लिया है ?" उन महान व्यक्तियों से फिर यह पूछो कि किस वस्तु की सहायता से वे इतना कठिन अध्ययन कर सके और निराशा जनक परीक्षाओं से निस्साहस न हुए ? उनका उत्तर होगा "धैर्य"।

धैर्य्य द्वारा मनुष्य की प्राप्ति

रैबीलैस (Rabelias) ने कहा था "धैर्यवान पुरुष चाहे कुछ प्राप्त कर सकता है। हां, धैर्य ही सम्पूर्ण ज्ञान की नींव है। यदि तुममें शिक्षा ग्रहण करने का धैर्य नहीं है तो न तुम क्रिकिट के खिलाड़ी हो सकते हो न एक विद्वान, न तुम एक गवैया बन सकते हो और न एक ज्योतिर्वैज्ञानिक, न तुम एक अच्छे माली ही हो सकते हो और न एक राजनीति विशारद। कार्लाइल (Carlyle) का कहना था, कि प्रतिभाशाली मनुष्य (Genieus) वही हो सकता था जिसमें दुःख सहन करने का अपार पराक्रम था। विशाल इमारतें बनाने में, संगीत की अमर पंक्तियां लिखने में, अमर काव्य के रचने में, विज्ञान के क्रूर अन्वेशण में, मनुष्य में उत्तम चरित्र बनाने में कितने धैर्य की आवश्यकता हुई है।

इस प्रकार हमें ज्ञात होता है कि धैर्य एक अति उत्तम गुण है और साथ ही साथ भयानक अवगुणों में से एक है। इङ्गलिस्तान में सौ वर्ष हुये ऐसे धार्मिक सज्जन पुरुष थे, जिनको दास व्यापार करने में कोई लज्जा प्रतीत नहीं होती थी और जिन्हें लैङ्काशायर (Lancashire) की रूई की मिलों में काम

करने वाले बच्चों के दुःख पर रत्ती भर भी दया नहीं आती थी यह केवल इसी कारण था कि विल्बरफोर्स (Wilberforce) और शेफ्टसबरी (Shaftesbury) जैसे व्यक्ति ऐसे दुष्कर्मों के होते हुए धैर्य धारण न कर सके और इङ्गलिस्तान के अन्तः-करण को एक गहरी निद्रा से उठा दिया और यह अत्याचार रोक दिया गया। अहा! अधैर्य भी कितना महान गुण है जब कि यह दया से उत्तेजित किया जाता है और धैर्य कितना महान अवगुण है जबकि उसका प्रवर्त्तक केवल स्वार्थ के ही लिए हो।

मनुष्य जाति के भला चाहने वालों को उत्तेजना देने वाला उत्तम धैर्य

परन्तु मानलो फ्रान्सीसी वैज्ञानिक पेस्टर (Pasteur) धैर्य रहित होता, मानलो सिम्पसन (Simpson) और (Lister) लिस्टर दुःख मिटाने और डाकर को भय रहित कर देने के अनुभवों में धैर्य छोड़ देते धैर्य कितना उत्तम गुण है जबकि यह मनुष्य का भला चाहने वाले पुरुषों के कार्य में उत्तेजना उत्पन्न करता है।

इस प्रश्न पर पाठशाला में पढने वाले दो विद्यार्थियों का दृष्टान्त लेकर विचार करो एक लडका एक लालच का बराबर सामना कर रहा है, जो उसको बार बार दबा देता है। अन्त में वह धैर्य रहित होजाता है। "अब मैं प्रयत्न न करूंगा, प्रयत्न करना भी व्यर्थ है; जितना अधिक मैं प्रयत्न करता हूं उतना ही

अधिक मैं बुरा हूँ।" यह कह कर वह लडाई में पीछे हट जाता है और उसकी दशा में अवनति होती जाती है। परन्तु दूसरा लडका कहता है "मैं देखता हूँ कि मुझे धैर्य धारण रखना चाहिये। यह युद्ध बहुत काल तक होता रहेगा। मुझमें वो साहस होना चाहिये; जो वर्षों तक युद्ध करने वाले मनुष्यों में था। यदि मैं विजय प्राप्त न भी कर सकूँ, तो भी मेरा हृदय नहीं टूट सकता। नाश करने वाली भयानक वस्तु तो भयभीत हो जाती है। मुझे डरना नहीं चाहिये। जितना अधिक मैं हारता जाऊँगा, उतना ही अधिक प्रयत्न मैं अगली बार विजय प्राप्त करने के लिए करूंगा। धैर्य से मेरा प्रेम है और लडते लडते धैर्य को न छूड़ूंगा।"

एक आश्चर्य जनक पुस्तक है, जिसमें भयानक लालचों और सैकड़ों पराजय के पश्चात् एक मनुष्य ने कहा है "बुद्धि का अन्त होगया। विजयी पुरुष ही लाभ उठा सकता है और स्वतन्त्रता पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है। अन्त में उसने यही पाया कि इस पृथ्वी पर न कोई अन्तिम आनन्द है न अन्तिम भलाई। केवल निरन्तर प्रयत्नों और अभिलाषाओं के द्वारा ही मनुष्य का मस्तिष्क बन्धन की बेडियों से छूट सकता है।

पराजय प्राप्त करने पर युद्ध का आदेश देनेवाला धैर्य

इस विचित्र जगत में हमारा जन्म एक ऐसी वस्तु की खोज करने के लिए हुआ है, जो कहीं भी नहीं मिल सकती। हमें

आत्मिक जीवन और आत्मिक स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिये प्रति दिवस युद्ध करना है। हमें अपने मार्ग में पड़ने वाली बाधाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ते हुए युद्ध करना है। पराजय प्राप्ति के पश्चात् हमें युद्ध का आदेश देनेवाला धैर्य यथार्थ में धैर्य है।

इस ज्ञान के द्वारा जीवन इतना तेजोमय हो जाता है। केवल पशुओं की भांति रहने वाले मनुष्यों का जीवन निरर्थक है। एक बिचारे बैल या टट्टू का धैर्य्य मनुष्य के लिए उचित नहीं है। मनुष्य जाति के ऊपर प्रभाव डालने वाली प्रत्येक बुराई के विरूद्ध षड़यन्त्र रचना प्रति मनुष्य का कर्तव्य है। उसके लिए केवल वही धैर्य्य उत्तम है जो उसके परिश्रमों में उसे उत्तेजना देता है और जब अधिक प्रयत्न की आवश्यकता नहीं होती तो धैर्य्य स्थिर हो जाता है।

परन्तु ऐसे भी मनुष्य हैं, जो धैर्य्य को एक ओर छोड़कर मनुष्य के जीवन का आकार बदलने के लिए शक्ति और प्रचण्डता का प्रयोग करते हैं। उनका उद्देश्य अवश्य उत्तम है, वे जीवन को अधिक आनन्द दायक बनाना चाहते हैं परन्तु सत्य उन्नति और वास्तविक परिवर्तन में वे एक महान शक्ति का ख्याल नहीं करते। और वह महान शक्ति क्या है? समय का तत्व। धैर्य्य एक इस प्रकार का है, जो दुष्ट और प्राणघातक है। परन्तु एक अधैर्य भी इस प्रकार का है, जो अज्ञान और नष्ट कारक है।

निःस्वार्थ मस्तिष्क का अविनाशी वस्तुओं पर धैर्य

इस प्रकार हमें ज्ञात होता है कि जीवन सुगम नहीं है। यह भी निश्चय करना अत्यन्त कठिन है कि कब धैर्य एक सद्‌गुण है और कब अधैर्य अपराध नहीं है। परन्तु हमारे मस्तिष्क विचार करने के लिए बनाए गए हैं और जितनी अधिक भावनाएँ हमारे मस्तिष्क में आवेंगी, तो उतनी ही अधिक सुगमता से जीवन व्यतीत करने की समस्या हल हो सकेगी।

उत्तेजित अवस्था में धैर्य एक सद्‌गुण है। जकड़े हुए कोने में धैर्य एक सद्‌गुण है। हमारे अध्ययन में, हमारे परिश्रम में, हमारी परीक्षाओं में धैर्य न केवल एक सद्‌गुण है परन्तु विजय प्राप्त करने के लिए आवश्यकीय है। बिना धैर्य के हम कुछ प्राप्त नहीं कर सकते।

एक मनुष्य को क्रूरता सहन करते हुए देख कर भी धैर्य रखना, लालच के वशीभूत होकर भी धैर्य रखना, भयानक है। सरलता का मार्ग निःस्वार्थता में है। जब तक हमारा उद्देश्य अपना जीवन दूसरों के लाभ के लिए बनाना है, तब तक हमारा यह विचार है कि उन्नति के लिए समय की आवश्यकता है, तो हम सत्य धैर्य के स्थान में असत्य धैर्य को कभी नहीं ले सकते।

रैबीलैस (Rabelias) का कहना था "कि धैर्यवान् पुरुष

कोई भी वस्तु प्राप्त कर सकते है।" सत्य है; यदि वह एक निस्वार्थ मस्तिष्क का अविनाशी वस्तुओं पर धैर्य्य हो।

सोलहवां अध्याय

अधिकार

शेक्सपियर द्वारा लिखित "बादशाह लियर" (King lear) में जब अर्ल ऑफ कैन्ट (Earl of kent), जिसको लियर ने बनवास दे दिया था, रूप बदल कर बादशाह के सामने सेवा करने आता है, तो निम्नलिखित वार्तालाप होता है।

लियर — तू क्या करेगा?

कैन्ट — सेवा

लि० — किसकी सेवा करेगा?

कै० — आपकी

लि० — क्या तू मुझे जानता है?

कै० — नहीं, श्रीमान्; परन्तु आपके चेहरे में एक वह गुण है, जिसको मैं प्रसन्नता पूर्वक स्वामी कह सकता हूँ।

लि० — वह क्या है?

कै० — अधिकार।

एक शब्द में, शेक्सपियर ने उन गुणों का वर्णन कर दिया है, जिनके कारण एक मनुष्य दूसरे को आज्ञा दे सकता है।

अधिकार: इसका क्या अर्थ है ? इसका अर्थ पद नहीं है, इसका अर्थ धन नहीं है, इसका अर्थ शक्ति भी नहीं है। बहुधा मनुष्य ऐसी शक्ति के स्थान पर पहुँच जाते हैं जिनमें कोई ऐसा आत्मिक गुण नहीं होता, जिसके कारण हम उनका सम्मान कर सकें। परन्तु अधिकार का क्या अर्थ ? शेक्सपियर ने उपर्युक्त स्थान पर इस शब्द का प्रयोग किस अर्थ में किया था ?

इस स्थान पर इसका अर्थ है—शासन करने का आत्मिक स्वत्व। इसका अर्थ एक ऐसी वस्तु है, जिसका सम्मान करना चाहिये और आज्ञा माननी चाहिये। इसका अर्थ एक ऐसी वस्तु है जो इस धरातल पर अत्यन्त कठिनाई से प्राप्त हो सकती है क्योंकि इसकी आत्मा अन्य मनुष्यों की आत्माओं से उत्कृष्ट है।

परन्तु एक और प्रकार का भी अधिकार है। उसका अर्थ एक ऐसी शक्ति है जिसमें किसी प्रकार का आत्मिक स्वत्व नहीं है। यह अधिकार अति तुच्छ है। मनुष्य जाति के इतिहास का एक बड़ा अंश इसी में व्यतीत हुआ है कि एक ऐसा अधिकार होना ही न चाहिये, जिसका न सम्मान हो और न जिसकी आज्ञा मानी जावे।

मनुष्य की आत्मा के लिए अधिकार का मार्ग अनुसरण करने की अपेक्षा और कोई अच्छा मार्ग नहीं है। इसके द्वारा हम पूर्वीय क्षमताशील महाराजाओं के विशाल भवनों तक पहुंच सकते हैं और एक त्यागी सन्यासी की गुफा तक पहुँच

सकते हैं, इसके द्वारा दुष्ट मनुष्यों से भी परिचय हो सकता है और साधू महात्माओं के भी दर्शन होते हैं। मनुष्य सदा से अधिकार प्राप्त करने की खोज मे रहा है, जिससे वह तमाम झगड़ो को न्याय पूर्वक निश्चय करने के लिए कह सके। अधिकार एक ऐसी महान शक्ति है, जिसका कर्तव्य है कि कानून को माना जाता है और मनुष्य मनुष्य के बीच न्याय रक्खा जाता है।

मनुष्य जाति के मस्तिष्क में एक प्राचीन विचार का पुनर्जन्म

मनुष्य जाति के इतिहास का यह भयानक रूप एक छोटे से पैमाने पर एक क्रिकिट के खेल में देखा जा सकता है। बिना कप्तान के कितने झगड़े पड़ जावेंगे—कौन गेंद फेकेगा (Bowl) कौन विकेट (Wicket) के पीछे खड़ा होगा, कौन पहिले, दूसरे तीसरे आदि नम्बरों पर खेलने (Bat) जावेगा। एक और सीढ़ी आगे चलो। एक आक्रमणकारी के विरूद्ध अपने देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए यदि एक सेना में न कप्तान हो, न कर्नेल (Colonel) न सेनापति न प्रधान सेनापति, तो कितनी घवड़ाहट फैल जावे। इसी प्रकार यदि एक राष्ट्र किसी का आधिपत्य स्वीकार न करेगी तो बहुत सम्भव है कि उसकी दुर्दशा और राष्ट्र मे गोलमाल होना आरम्भ हो जावे।

परन्तु मनुष्य अब एक सीढी और आगे चले गए हैं, जिससे

थोड़े वर्षों पश्चात् हमारा भी कुछ भाग होगा। एक प्राचीन विचार का मनुष्य जाति के मस्तिष्क में पुनर्जन्म हुआ है। यह एक अन्तराष्ट्रीय अधिकारी का विचार है। महायुद्ध से यह सिद्ध हो गया है कि प्रत्येक राष्ट्र के ऊपर पृथक शासन कर्ताओं के रखने से कोई लाभ नहीं, इन सम्पूर्ण स्थानिक शासन कर्ताओं के ऊपर एक उत्कृष्ट अधिकार होना चाहिए जो अन्त र्राष्ट्रीय झगड़ों को तय करे।

सम्पूर्ण जाति तथा मनुष्य के लिए एक अधिकारी का उत्तम विचार

मनुष्य के मस्तिष्क में उठने वाले महान विचारों में से यह एक है परन्तु फिर भी यह बहुत सरल है। वास्तव मे यह उतनी कठिन नहीं है जितना कि कुछ मनुष्यों का विश्वास है। चलो क्रिकेट के मैच की ओर देखें।

मान लो बम्बई की एक टीम एक मद्रास की टीम से खेल रही हैं और यह मैच किसी पदक की प्राप्ति के लिए है। बम्बई का एक कप्तान है और मद्रास का एक कप्तान है प्रत्येक टीम अपने कप्तान की आज्ञाकारी और धर्मपरायण है; विद्रोह की कोई घटना नहीं है। परन्तु थोड़ी देर पश्चात् बम्बई के कप्तान और मद्रास के कप्तान में झगड़ा होगया कौन उसका निश्चय करेगा ? वे पञ्च (Umpires) से प्रार्थना करते हैं और वे (Umpires) बम्बई की तरफ निश्चय कर देते हैं। परन्तु मद्रास

का कप्तान इससे सन्तुष्ट नही हुआ। उसका विचार है कि पञ्च (Umpires) ने गलत निश्चय किया है। मेच समाप्त होने के पश्चात् उसे पूर्ण रूप से निश्चय है कि पञ्चों का फैसला गलत है। वह क्या करता है। वह बोर्ड आफ क्रिकिट कन्ट्रोल (Board of Cricket control) से अपील करता है और वह झगड़े का फैसला कर देती है। उस निर्णय की अब कहीं अपील नहीं होसकती। वह अन्तिम है।

कई सौ वर्ष पूर्व एक सभा विश्व सङ्घ स्थापित करना असम्भव सा प्रतीत होता था। जो सम्पूर्ण राष्ट्रों के ऊपर उत्कृष्ट हो सकता। उस काल मे न केवल राष्ट्र एक दूसरे से गहरी घृणा ही करते थे परन्तु उनका विश्वास था कि दूसरे राष्ट्रों पर विजय प्राप्त करना या उनको नष्ट कर देना ही उनका कर्त्तव्य था। परन्तु अब हम जानते है कि युद्ध सबका शत्रु है और कि कोई राष्ट्र बिना अन्य राष्ट्रों की उन्नति के, स्वयम् उन्नति नहीं कर सकता। अब हम जानते हैं कि "अपने शत्रुओं से प्रेम करना" बुद्धिमानी की निशानी है और आनन्द की प्राप्ति के लिए शान्ति होना आवश्यक है। इस शिक्षा के प्राप्त करने में हमे बहुत कुछ बलिदान करना पडा है परन्तु अन्त मे वह शिक्षा ग्रहण करली है। वर्तमानकाल में कोई भी चाहे वह राष्ट्रसङ्घ का कट्टर शत्रु ही क्यों न हो, यह कहने का साहस नहीं रखता कि युद्ध एक सुखदायक वस्तु है और नाश करना एक अच्छा व्यापार है। इस पृथ्वी पर कोई भी मनुष्य ऐसा मूर्ख और उन्मत्त अधिकार नहीं मांग सकता।

एक उत्कृष्ठ न्यायालय जगत की महान आशा है

जिस प्रकार वह सुनिश्चित है कि सूर्य कल प्रकाश करेगा उसी प्रकार मनुष्य एक जगत न्यायालय स्थापित करेगा। और उस महान शक्ति के सामने प्रत्येक राष्ट्र, चाहे छोटे हों, चाहे बडे दिखलाई देगें जब उनके बीच में ऐसा कोई झगडा होगा जिसमें मनुष्य जाति की शान्ति में विघ्न पडने की सम्भावना हो। चाहे युद्ध हमारे जीवन काल के पश्चात् ही क्यों न हो परन्तु हमारा विश्वास है कि एक उत्कृष्ठ जगत न्यायालय शीघ्र ही स्थापित होजाना चाहिये। ये विचार राष्ट्रसङ्घ के स्थापन से पहिले के थे। परन्तु अब तो एक ऐसा सङ्घ वास्तव में बनगया है।

अधिकार की इस कथा के दूसरे पक्ष की ओर तनिक ध्यान दीजिये। राष्ट्र-सङ्घ को केवल राजनैतिक अधिकार दिये गये हैं। क्या उससे उत्कृष्ट और कोई वस्तु नहीं हो सकती? क्या जगत में ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो मनुष्यों के जीवन पर सामाजिक और राजनैतिक सुभीते की अपेक्षा और अधिक अधिकार कर सके।

देहली की सडकों पर सप्ताह के किसी दिन हम यह देख सकते हैं कि एक सिपाही ने एक बडे जिमीदार को रोक रक्खा है ताकि अनाथालय के कुछ बच्चे संरक्षतापूर्वक सडक पार कर सकें या कदाचित वह एक टोकरे वाले को निकल जाने के लिए

अर्थ सचिव को रोकदे। यह पुलिस का आदमी थोडे दिन हुये किसी छोटे से ग्राम में एक किसान का लडका था या भेडे चराया करता था अब उसे भारत की राजधानी में इतना अधिकार कहां से प्राप्त हुआ? वह एक नम्र पुरुष है और उसका वेतन भी अधिक नहीं है। न उसके पास जमीन है न मकान और शारीरिक शक्ति में भी उसके समान बीसियों मनुष्य प्रति घंटे उसके समीप होकर चले जाते हैं। तो फिर उसमें शक्ति कहाँ से आती है।

कानून की महिमा और अन्तः करण की महिमा

इस प्रकार का अधिकार दूसरों पर निर्भर है। उस पुलिस के आदमी में यह शक्ति इङ्गलिस्तान के बादशाह से भी बड़े मूल से आई है। वह कानून की महिमा प्रकट करता है। वह एसेम्बली के सभापति को भी वारंट से पकड़ सकता है। वह कलकत्ते के शरीफ को गवर्नर को, सरकारी वकील को बन्दीगृह में कर सकता है। एक हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को उस पुलिस के आदमी के कहे अनुसार चलना पड़ता है। और सब मनुष्य उसकी आज्ञा का पालन करते हैं क्यों कि उसकी शक्ति का मूल भारत की सबसे बड़ी वस्तु उसके कानून से है। यह कानून बादशाह से ऊँचा है और इस कानून का सेवक देश का उत्तमोत्तम न्यायाधीश भी है।

इसी प्रकार हममें से प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में एक

पुलिस का आदमी है। हम उसे अन्त: करण का पुलिस मैन कहेंगे। वह हमें यह करने को और वह न करने को कहता है। जब हम उसके कहे अनुसार चलते हैं, तो हम अच्छे नगर निवासी है; जब हम उसकी आज्ञा का पालन कर देने से अस्वीकार कर देते हैं, तो हम बुरे नगर निवासी हैं। परन्तु हम अपने इस भाग की आज्ञा क्यों मानें? अन्तिमकार यह हमारे मस्तिष्क का एक नम्र तथा अस्पष्ट भाग है। सड़क पर खड़े हुए पुलिस के आदमी की भांति इस पुलिस मैन का जन्म भी एक छोटे घराने में हुआ है। यदि हम मनुष्य के इतिहास में यथेष्ट पीछे का वृतान्त पढे तो हमें ज्ञात होगा कि अन्त:करण के इस पुलिस मैन के माता पिता किसी किसान या गड़रिये से तुच्छ थे। हमें ज्ञात होगा कि इसका जन्म भय और झूंठे विश्वास से हुआ है और अपनी बाल्यावस्था में इसने ऐसे कार्य किये हैं, जिनसे हमें अति घृणा होती है।

अलौकिक शक्ति जगत को उसके भाग्य की ओर लेजा रही है

हां, यह ठीक है। परन्तु सड़क पर खड़े हुए पुलिस मैन की भांति मस्तिष्क के इस पुलिस मैन की अवस्था बढ गई है। और यह हम से एक बड़ी वस्तु प्रकट करता है। वह भी एक ऐसे कानून की महिमा प्रकट करता है, जो सर्व मानुषिक कानूनों से उच्च है। और जो सम्पूर्ण मानुषिक कानूनों का मूल है। और वह ईश्वर का कानून है।

यह मनुष्य के जीवन में सर्वोच्च अधिकार शक्ति है। अपने सम्पूर्ण इतिहास में मनुष्य ने एक अदृश्य शक्ति में विश्वास किया है। उसे ज्ञात हुआ है कि सब देखने योग्य वस्तुएँ केवल इन नेत्रों की सहायता ही से नहीं देखी जा सकती और इस दृश्य जगत के बीच में एक अदृश्य आत्मा है जो कि इन तमाम वस्तुओं का महिमा शाली और विचित्र अन्त कर देगी। जैसे २ उसके ज्ञान और बुद्धि में उन्नति होती गई है, उसे यह निश्चय हो गया है कि प्रत्येक वस्तु जो वह अपने नेत्रों से देखता है। या अपने मस्तिष्क से ध्यान में लाता है, किसी ऐसी महान वस्तु की केवल एक छाया है जो अत्यन्त मनोहर है और इतने दिनों में अन्त होने वाली है कि उसे अविनाशी कहना अनुचित नहीं। मनुष्य ने इस उत्कृष्ट और अविनाशी महान आत्मा को ईश्वर का नाम रख दिया है।

यह स्पष्ट है कि एक बुद्धिमान मनुष्य एक ऐसी वस्तु ज्ञात करने का प्रयत्न करेगा, जो परमेश्वर उससे कराने की इच्छा रखता है। वह अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिए स्वतन्त्र है। वह अपनी मानसिक शक्ति में उन्नति करने का दुःख सहन कर सकता है या वह एक पशु की भांति जीवन व्यतीत कर सकता है। वह शान्त और परिश्रमी हो सकता है या शराबी और आलसी। वह सत्यभाषी हो सकता है या झूंठ बोलने वाला। वह कृपालु हो सकता है या क्रूर। परमेश्वर उससे क्या कराना चाहता है। परमात्मा की यह इच्छा नहीं है कि

वह दोनों मार्गों में चाहे जिसका अनुसरण करे। परमात्माने निश्चय कर लिया है कि वह अपने आप अपना मार्ग पसन्द करले। इस प्रश्न का उत्तर देना शेष है।

परमात्मा का अन्तिम अधिकार

इस प्रश्न ने अन्तः करण को मनुष्य के जीवन में सबसे मुख्य भाग बना दिया है। अन्तः करण बुराई को कभी नहीं चाहता। अन्तः करण मनुष्य को यह कभी नहीं बतलाता कि क्या गलत है या कौनसी वस्तु मनोहर नहीं है। अन्तः करण सदैव श्रेष्ठता की ओर है। इसी कारण मनुष्य कहते हैं कि मनुष्य के जीवन मे पृथ्वी के कानून से भी बढकर एक और शक्ति है। उनका कहना है कि कानून सदैव न्यायी नहीं है और जब वे कानून में परिवर्तन अथवा उन्नति करते हैं, तो वे अन्तः करण के संकेत से करते हैं। और यह अन्तः करण एक ऐसी वस्तु है जिसको परमात्मा से अधिकार प्राप्त हुआ है। और जो परमात्मा की इच्छा की खोज कर रही है।

जीवन का अन्तिम पक्ष अन्तः करण का अधिकार है, जिसका उद्देश्य परमेश्वर की इच्छा, बुद्धि का विकास करना है। यह सत्य है कि जब मनुष्य आगे का विचार करता है तो उसे अलौकिक रूप के दर्शन होते हैं और इस रूप को वह प्रसन्न चित्त से स्वामी कहता है। सम्पूर्ण मनुष्य जाति के ऊपर, केवल एक उत्कृष्ट स्वामी है जिसमें अपार शक्ति है और वही

शक्ति इस मनोहर पृथ्वी के भाग्य की रचना कर रही है। हमारे ऊपर यह अपार शक्ति परमात्मा है।

सत्रहवां अध्याय

सफलता

थोड़ा समय ही व्यतीत हुआ होगा जब अमरीका में एक स्त्री का, जिसका नाम एमिल डिकिन्सन (Emily Dickinson) था, देहान्त होगया। यह स्त्री एक धनी पुरुष की पुत्री थी और अपनी बाल्यावस्था में उसे जीवन को आनन्दमय बनाने वाली प्रत्येक वस्तु पर्याप्त थी। परन्तु अपनी यौवनावस्था में पैर रखते ही, उसके ऊपर एक भारी सन्ताप पड़ा और उसी दिन से वह एक वानप्रस्थी होगई। न कहीं गई, न किसी को देखा।

उसकी मृत्यु के पश्चात, मनुष्यों को ज्ञात हुआ कि उसके कमरे में हाथ की लिखी हुई अनेक कविताएँ पड़ी हुई थी। वे कविताएँ इतनी गूढ़ और विचित्र भावों से भरी हुई थी कि उनमें से कुछ एक छोटी पुस्तक के रूप में प्रकाशित की गई और यह पुस्तक साहित्य के प्रत्येक प्रेमी के पास पाई जाती है। उस काव्य रचना के ही कारण, उस महान व्यक्ति का नाम आज तक प्रसिद्ध है।

उसकी दुर्लभ कविताओं में से एक का अर्थ यह है "सफलता उन्हीं के लिए मधुर है, जो कभी सफल नहीं होते।"

उसे इस वाक्य का अर्थ भलीभांति ज्ञात था कि "पराजय

से केवल एक वस्तु अधिक खेद जनक है, और वह विजय है।" एक वह सिपाही, जो युद्ध से जीवित लौट आता है विजय के अर्थ को इतनी भली प्रकार कदापि नहीं समझ सकता जितना कि एक वह सिपाही, जो बिगुल सुनते २ युद्ध में लड़ते हुए प्राण तज देता है और जानता है कि वह अपने पिता के घर कभी वापिस न लौटेगा।

परन्तु इस एकान्त निवासिनी स्त्री द्वारा लिखित कवितायें युद्धक्षेत्र के स्पष्ट तत्व से अधिक आकर्षिक है। उसका ध्यान एक भिन्न प्रकार के युद्धक्षेत्र की ओर था। वह इस सम्पूर्ण जगत पर विचार कर रही थी, जहां सैंकड़ों वर्ष से पुरुष और स्त्रियों ने सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयत्न किये हैं। वह लेखकों का, तत्वशास्त्रज्ञों का, चित्रकारों का, पत्थर पर काम करने वालों का, सङ्गीत प्रवीणों का, राजनीतिज्ञों का, वैज्ञानिकों का, व्यापारियों का, सौदागरों का, खिलाड़ियों का, पहलवानों का विचार कर रही थी। उसका ध्यान था कि इन सब मनुष्यों का केवल एक उद्देश्य था और उसी उद्देश्य के लिए वे सब प्रयत्न कर रहे थे और वह उद्देश्य क्या था? सफलता प्राप्त करना। यही कारण था कि उसने कहा "सफलता उन्हीं के लिए मधुर है, जो कभी सफल नहीं होते।"

इन शब्दों से उसका क्या तात्पर्य था? क्या यह वास्तव में सत्य है कि जीवन में असफल होजाने वाले मनुष्यों को सफलता के पारितोषिक प्राप्त करने वालों से सफलता के सम्बन्ध

में अधिक ज्ञान हंता है ? यदि ऐसा ही है, तो यहां विचारने की सामग्री है।

वृद्धावस्था मे लार्ड बैकन्सफील्ड (Lord Beacons field) जब एक रात्रि को अंगीठी पर हाथ गर्म कर रहा था तो उसके मित्र ने पूछा कि क्या वह अपनी कीर्ति और पारितोषिक से सन्तुष्ट था ? उसका सिर दोनों हाथों के बीच में घूमने लगा और मानो वह अपने हृदय से वार्तालाप कर रहा हो, यह वृद्ध राजनीति विशारद ने कहा "स्वप्न —स्वप्न—स्वप्न।"

हमें अनेक सफल मनुष्यों की जीवनी से ज्ञात होता है कि वृद्धावस्था ने उनके जीवन को आनन्दमय नहीं बनाया किन्तु उसके विरुद्ध। वे अशान्ति, निराशा और अभ्रान्ति की शिकायत करते हैं। हमे अनुभव होगया है कि सफलता प्रसन्नता के लिए दूसरा शब्द नही है। जीवन इतना सरल नहीं है कि जगत धनी और निर्धन मे विभाजित किया जासके और हम यह कह सके कि धनी सुखी हैं और निर्धन मनुष्य शोक ग्रस्त हैं। न जीवन इतनी मूर्ख वस्तु ही है कि अमुक मनुष्य के कोट में बेल लगा देने से वह सुखी हो जावे या किसी मनुष्य के कुरते में से एक बटन निकाल लेने से वह दुखी होजाय। इस पृथ्वी पर अनेक अभाग्य पुरुष "सफल" लखपती हैं, अनेक सुखी मनुष्य निर्धन तथा नम्र जाति मे से हैं, जिनका इतिहास मे कहीं नाम भी नहीं है।

अपर्याप्त तक पहुँचने की हार्दिक इच्छा

एमिल डिकिन्सन (Emily Dickinson) ने यह सिखाने का प्रयत्न किया कि लेखक, सङ्गीत प्रवीण, वैज्ञानिक, पहलवान जैसे मनुष्य, जो सफलता प्राप्ति के लिए प्रयत्न कर रहे थे, जो सफलता का स्वप्न देख रहे थे, जिन्हें सफलता की हार्दिक इच्छा थी, उन मनुष्यों से कहीं अधिक आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करते थे, जिन्होंने सफलता प्राप्त करली थी। आनन्द केवल इच्छा और कार्य में है। कोई भौमिक पारितोषिक सफलता की तृष्णा को नहीं दूर कर सकता। न धन, न ऊँचे पद, न शानदार बंगले, न बढ़िया पोशाक, न अनेक सेवक एक सफलता के इच्छुक हृदय को कभी सन्तुष्ट कर सकते हैं। इससे अच्छा तो यह होगा कि एक भूखे कुत्ते को एक पुष्प या एक चित्र से सन्तुष्ट करदो। सफलता के लिये अभिलाषा करने का अर्थ है कि हृदय को अपर्याप्त वस्तु से प्रेम है। यह हमको धोखा देती है और हम विचार करते है कि यह केवल धन या मकान की इच्छुक है; परन्तु यह यथार्थ में एक ऐसी वस्तु चाहती है, जो इस जगत में नहीं पाई जा सकती और वह वस्तु सन्तुष्टि है।

यदि भौमिक वस्तुओं के हृदय सन्तुष्ट हो सकता, तो जीवन में कोई समस्या ही शेष न रहती। सम्पूर्ण कठिनाइयां केवल इस कारण होती है कि कोई भी सांसारिक वस्तु मनुष्य के हृदय को सन्तुष्ट नहीं कर सकती। एक लट्टू के स्थान मे उसे धनुष बाण देदो और जब तक उसे बन्दूक न मिल जावेगी, उसका हृदय

शान्त न होगा, उसे एक छोटी बन्दूक ही देदो, परन्तु फिर वह एक बड़ी बन्दूक की प्रेरणा करेगा: उसे एक बन्दूक देदो तो वह गोले और विषैली गैसों की मॉग उठावेगा।

प्राचीन काल के मनुष्य एक जीन कसे हुए घोड़े से कितने सन्तुष्ट थे, यह विचारणीय विषय है। फिर भी जब घोड़े को शिक्षा दीगई, मनुष्य को गाडी की आवश्यकता पड़ी; और जब उन्हे गाडी मिलगई तो रेलों की इच्छा हुई, और जब रेलगाडी में यथेष्ट उन्नति होगई, तो उन्हें मोटर की इच्छा हुई; और अब जबकि मोटर फैशन प्राचीन होता जारहा है, मनुष्य वायुयान के लिये चिल्ला रहे हैं। क्या आधुनिक काल के मोटर बाइसिकल वाले बच्चे अपनी साधारण बाइसकिल वाले पिताओं से अधिक सुखी हैं।

दोषहीन जगत एक असहनीय मद स्थान होगा

यह निश्चय है: चाहे आने वाले सौ वर्षों मे वैज्ञानिक आविष्कार कितने ही विचित्र तथा आश्चर्यजनक क्यों न हों, मनुष्य जाति कभी सन्तुष्ट न होगी। पिछली शताब्दी का एक विचारने वाला यह सोचकर चकित हुआ था कि यदि वह तमाम सुधार, जिनके लिए वह इतना कठिन परिश्रम कर रहा था, काम मे आजावे तो यह जीवन जीने योग्य न रहेगा। वह वह जीवन जैसा था, उससे घृणा करता था; उसे अच्छा बनाने की उसकी आत्मिक इच्छा थी; परन्तु यकायक उसके मस्तिष्क में यह विचार उठा कि एक दोषहीन जगत उचाट और मदमती

हो जावेगा। क्यों? क्योंकि ऐसे जगत में कोई लड़ाई ही न होगी; केवल आनन्द ही आनन्द। आनन्द जो तृप्ति है! वह जानता था कि निर्धन अधिकतर मगज खाऊ नहीं होते और धनवान पुरुष एक स्थान से दूसरे स्थान को भागते फिरते हैं।

प्रयत्न और कामनाओं में ही सत्य आनन्द है

कोई भी मनुष्य आलस्य में सुखी नहीं रह सकता। न केवल प्रसन्न रहने से ही सुखी हो सकता है। मनुष्य के अन्य अनुभवों की भांति यह भी निश्चय है कि हम जब ही सुखी रह सकते हैं जब कि हम प्रयत्न करते रहें और कामनाएँ करते रहे। सुधारक का कर्तव्य है कि वह जगत को उतना दोषहीन बना दे जितना कि उसकी इच्छा है और दूसरी उत्पत्ति जगत को सदैव से अधिक दोषयुक्त बतलावेगी, क्यों कि ऐसे जगत में कुछ भी कार्य करने के लिए नहीं था।

ये सब बातें मस्तिष्क में घबड़ाहट फैला देती हैं। यदि सफलता धोखा देती है, तो उसके लिए क्यों प्रयत्न किया जाता है? हम ऐसे शान्तिमय स्थान में क्यों न स्थापित हो जावे जहाँ कोई चिन्ता न हो और हमारा उद्देश्य न आलस्य हो और न अनुचित प्रसन्नता किन्तु आत्मा की शान्ति और स्थिरता परन्तु यदि हम ध्यान पूर्वक विचार करें तो यह घबड़ाहट दूर हो जाती है। हम किस लिये जीवन व्यतीत कर रहे हैं?

मनुष्य के अतिरिक्त कोई बड़ी वस्तु नहीं है और मनुष्य में मस्तिष्क से बड़ी कोई वस्तु नहीं है।

अब इस प्रश्न का उत्तर अधिकाधिक निश्चित होता जाता है। मनुष्य इस पृथ्वी पर यथेष्ट काल निवास कर चुका है। और मनुष्य के अनुभवों पर यथेष्ट विचार हो चुका है और हमें ठीक प्रकार ज्ञात हो गया है कि जगत में सबसे बड़ी वस्तु मस्तिष्क है। एक अति उत्तम कहावत है कि पृथ्वी पर मनुष्य के अतिरिक्त कोई महान् वस्तु नहीं है; और मनुष्य में मस्तिष्क के अतिरिक्त कोई महान् वस्तु नहीं है। तो फिर यदि मस्तिष्क एक महान वस्तु है, तो धन, पद और मकान चाहे कितने ही क्यों न हों, हमें सन्तुष्ट नहीं कर सकते। ये सब वस्तुएं मनुष्य के मस्तिष्क से बाहर हैं। वे उसके अन्दर कभी नहीं जा सकतीं। वह उन्हे स्पर्श कर सकता है और उन्हें निज की कहकर पुकार सकता है; परन्तु उसके मस्तिष्क से उनका सम्बन्ध उतना ही है जितना कि वायु, समुद्र और आकाश से।

जीवन का दुख मनुष्य जाति के इस भ्रम के ही कारण है—विचारने का यह भ्रम कि वस्तुओं की पहुँच मस्तिष्क के अन्दर तक है, कि मस्तिष्क मे सामग्री एकत्र हो सकती है। इससे अधिक अज्ञान से भरी हुई कोई बात नहीं हो सकती, परन्तु इसको सत्य सिद्ध करने के लिए ही मनुष्य अपना सम्पूर्ण

जीवन इसी में व्यतीत कर देते हैं। एक मनुष्य अपना जीवन बिना पैसे से आरम्भ करके मृत्यु के समय अनेक महल, जागीरें और पद छोड़ देता है तो उसका जीवन सफल माना जाता है चाहे वह अज्ञान, और मूढ ही क्यों न हो और उसके लिये जीवन एक भार ही क्यों न हो; परन्तु उस मनुष्य के भी मस्तिष्क है किन्तु वह अन्धकार से भरा हुआ है। उसके अन्दर उसको कोई अधिकार नहीं है। वे उसकी सफलता के साक्षी हैं परन्तु वह सफलता कैसी विचित्र है क्योंकि अपने अधिकारों पर उसका कोई अधिकार नहीं है। उसके मस्तिष्क के अन्दर केवल दो बातें हैं—अन्धकार और असन्तुष्टि।

ज्ञान में सुख और शक्ति

परन्तु मस्तिष्क का किससे सम्बन्ध है? ज्ञान। और ज्ञान मस्तिष्क की किस प्रकार सहायता करता है? वह उसकी शक्ति में, बुद्धि में, सौन्दर्य मे उन्नति कराने का एक साधन है। प्रत्येक नवीन बात, जो हमे ज्ञात होती है, हमारे मस्तिष्क में स्थान पा लेती है। मस्तिष्क उस पर अधिकार कर लेता है। वह हमारे जीवन का एक भाग हो जाता है। वह कभी मरता नहीं है।

हमारे प्रश्न का उत्तर अब स्पष्ट है। हम क्यों जीवित दशा में हैं? ज्ञान की उन्नति करने के लिए। यह स्पष्ट है, क्योंकि यह समझना अति सरल है कि ज्ञान ही एक ऐसी वस्तु है जिस पर हमारा अधिकार हो सकता है। हमारा अधिकार न धन पर

हो सकता है, न मकानों पर, न पदों पर और न जागीरों पर; परन्तु हम ज्ञान पर अधिकार कर सकते हैं। हम ऐसा ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, जिसके द्वारा हमारा जीवन शक्तिशाली हो सकता है, जिसके द्वारा बुद्धिमत्ता और सौन्दर्यता सहित हम जीवन व्यतीत कर सकते हैं और दूसरों की सहायता कर सकते हैं—यह ऐसा ज्ञान है कि मरते समय भी हम इसे परमात्मा की दूसरी सृष्टि में लेजा सकते हैं।

यह स्पष्ट है कि केवल एक सफलता प्रयत्न करने योग्य है और वह अपने मस्तिष्क का विकास है। यदि हम यही प्रण करलें और मानसिक उन्नति और आत्मिक विकास की ही ओर ध्यान दें, तो यह कदापि सम्भव नहीं कि हम पारितोषिकों से धोखा खाजावें या भाग्य की भूल से निराशाजनक होजावें। हमारा सुख केवल इसी ज्ञान में है कि हम यथार्थ में उन्नति कर रहे हैं। हमारे जीवन का तात्पर्य पृथ्वी पर कोष जमा करना नहीं है किन्तु स्वर्ग में कोष लेजाना ही जीवन का मुख्य ध्येय है।

शान्ति ही योग्य सफलता है।

एमर्सन (Emerson) की एक विचित्र कहावत है, जिसके ऊपर हमारे लिए ध्यान पूर्वक विचार करना अत्यन्त आवश्यकीय है, जिसका अर्थ यह है "जिस पर तुम्हारा हृदय लगा हुआ है उससे होशियार रहो, क्योंकि वह अवश्य एक न एक

दिन तुम्हारी होजावेगी।" इस महान चेतावनी की सत्य परीक्षा के लिए अनेक मनुष्य प्रतीक्षा कर रहे हैं। "प्रबल इच्छा सत्य सिद्ध होजाती है।" चाहे जल्दी या देर में, एक या दूसरे आकार में हमारी इच्छा सफल हो जाती है।

तो फिर अभिलाषा भयानक वस्तु है। एक अनुचित वस्तु की इच्छा रखना सुगम है। केवल एक कोष है, एक प्रसाद है जिसके ऊपर हम एकाग्रचित्त होकर ध्यान दे सकते हैं और वह चरित्र है। हमारा चरित्र हमारे कार्यों पर ही निर्भर नहीं है किन्तु उन कार्यों की आत्मा (Spins) पर। अपना हृदय धन पर लगादो और यदि तुम वास्तव में अपने हृदय से धन के इच्छुक हो, तो बहुत सम्भव है कि तुम धनी होजाओ; और जब धन तुम्हारे पास आजावेगा, तो तुम उससे न शान्ति न आराम क्रय कर सकोगे। परन्तु भूखे और प्यासे अपना ज्ञान प्रेम, बुद्धि, दया, कृपा आदि जैसी आत्मिक वस्तुओं पर लगावो और जब तुम इन पर अधिकार कर लोगे तो तुम्हें ज्ञात होगा, चाहे जगत तुम्हें सफल समझे या असफल, कि तुम्हारे अधिकार एक वह सफलता है जिससे हृदय को शान्ति होती है।

अठारहवां अध्याय

ज्ञान

बहुत काल व्यतीत हुआ जब कुछ वीर पुरुषों ने मनुष्य जाति को झूठे विश्वास के फन्दे में से छुडाने के लिए यह कहा

कि उन्हे ऐसी वस्तु मे विश्वास नहीं करना चाहिये जिसे वे देख न सकते हों।

"तुम देवताओं के विषय मे बात करते हो" उनका कहना था। तुम भूत और प्रेत के विषय में बात करते हो, परन्तु यह बतलाओ कि ये जीव कौन हैं और क्या हैं? हम चारों ओर देखते है परन्तु वे हमे तो दिखलाई नहीं पडते। हम घोड़े और गाय, वृक्ष और झाड़ियां, पर्वत और महासागर, पुरुष और स्त्री, आकाश और पृथ्वी देखते हैं किन्तु तुम्हारे देवता और भूत कहाँ है? क्या तुम्हे पूर्ण रूप से विश्वास है कि ऐसी वस्तुएँ जीवित हैं? कहीं वे उन आकारों के ही समान न हों, जो स्वप्न में दिखलाई पड़ते है।

फिर उसी ध्येय को सन्मुख रखते हुए वे एक सीढी और आगे बढ़े। उन्होंने कहा "जब तुम अपने पुजारी और आकाश वाणियों से भूत प्रेतों से रक्षा करने के लिए प्रार्थना करते हो, तो हम उन वस्तुओं की परीक्षा करेंगे, जिनको हम आँखों से देख सकते है और अङ्गुलियों से स्पर्श कर कर सकते हैं, क्योंकि यह विचार होना आवश्यकीय है कि ऐसे यथार्थ वस्तुओं के समझने से, हमे इस जगत के ऊपर शासन करने वाले कानूनों के समझने मे सुगमता होगी और इस प्रकार पृथ्वी के ऊपर हमारा कुछ अधिकार हो सकेगा।"

इसे यथार्थ ज्ञान की प्रथम सीढी कहना अनुचित न होगा। इसी के द्वारा झूठे विश्वास से सर्व प्रथम सम्बन्ध तोड़ा गया।

पुरोहित के चातुर्य्य पर यह प्रथम आक्रमण था।

परन्तु ये वीर विचारज्ञों ने अपना धार्मिक युद्ध आरम्भ भी न कर पाये थे कि दो तीन आश्चर्य चकित बुद्धि वाले मनुष्य विरोध करने के लिए खड़े हो गये। जगत के नवीन विचार उनके मस्तिष्क में स्थान ले रहे थे। उन्होंने कहा—

"हमारा भूत और प्रेतों में तुमसे अधिक विश्वास नहीं है, परन्तु हमारे विचार के अनुसार, तुम्हारा यह मत अज्ञानता का चिन्ह है कि मनुष्य अपने नेत्रों की सहायता से प्रत्येक देखने योग्य वस्तु देख सकता है अथवा उन दृश्य वस्तुओं को, जिनको स्पर्श कर सकते हैं और देख सकते हैं, समझने की प्रत्येक मनुष्य में यथेष्ट बुद्धि है।"

"यथार्थता तुम्हारे अनुमान से बहुत बड़ी वस्तु है। तुम्हारी बुद्धि तुम्हें धोखा देती है; केवल आत्मा ही बुद्धि को सही मार्ग पर ला सकती है। आत्मा ही उत्कृष्ट यथार्थता है, और वह बुद्धि के मत को सदैव स्वीकार नहीं करती। वह उचित और अनुचित का अन्तर समझती है, वह सत्य प्रतीत होने वाली और यथार्थ सत्य में भेदकर सकती है; उसे सुन्दर और कुरूप के, और अच्छे और बुरे के भेदों का ज्ञान है।"

"क्या तुम्हारा यह विचार है कि तुम एक वृक्ष को देखने से उसे समझ सकते हो? तुम उसे एक वृक्ष कहते हो। और समझते हो कि तुम्हें उसके विषय मे पूर्ण ज्ञान है, परन्तु वृक्ष की यथार्थता अभी तक अदृश्य है।"

इन सब मनुष्यों का एक ही उद्देश्य है—ज्ञान। मनुष्य का सदैव—जङ्गली सभ्यता के काल मे—यही मत रहा है कि ज्ञान ही शक्ति है। ज्ञान के लिए उसने जादूगर और पुरोहित की खोज की। वह जानता था कि अज्ञान से भय का द्वार खुलता था। देवताओं का ज्ञान, जादू का ज्ञान, औषधि का ज्ञान उनके मस्तिष्क में सनसनी फैला देता था। सम्पूर्ण ज्ञान शक्ति है। और अज्ञान ही विघ्न कारक है।

मनुष्य के इतिहास मे इस विचार ने कि, ज्ञान शक्ति है बहुत सहायता दी है। एक समय का वृतान्त है कि हमें एक पहाड़ी मार्ग पर जाते साथ एक स्त्री से भेंट हुई, जो अपनी विद्वत्ता में प्रसिद्ध थी। उसने अपने हाथ के संकेत से घाटी मे एक श्वेत इमारत को बताया, जो एक गौशाला सी प्रतीत होती थी। और उसने कहा "इस प्रान्त में यह सबसे प्रसिद्ध इमारत है।" हमे आश्चर्य हुआ और उन देवी से पूछा कि "क्या यह किसी महान व्यक्ति का जन्म स्थान है?" उसने मुस्कराते हुए कहा कि "नहीं, यह ग्राम पाठशाला है।" त उसने बताया कि इस पाठ शाला से संस्कृत, तत्वशास्त्र आदि अध्ययन करने के पश्चात् मनुष्य विश्व विद्यालयों मे शिक्षा पाकर वैज्ञानिक, उपदेशक आर शासन कर्ता बन गये।

मनुष्य जाति को बचाने वाला ज्ञान का पवित्र स्थान।

भारत के स्कूल और विश्व विद्यालयों में इस प्राचीन

विचार ने कि ज्ञान ही शक्ति है, मनुष्य जाति के इतिहास पर यथेष्ट प्रभाव डाला है। जब कभी मनुष्य जाति अज्ञान और विद्रोह के दलदल में फँस गई है, तो उसकी रक्षा ज्ञान के पवित्र स्थान बना कर की गई है। यूरोप का ही दृष्टान्त ले लीजिये। जब मध्यकाल में गिरजे की शक्ति कम हो गई, तो स्कूल और कालिजों की स्थापना ने मनुष्य जाति को डूबने से बचा लिया। वे शान्ति पूर्वक अब भी यह प्रकट करते हैं कि मनुष्य का प्राचीन विचार ठीक ही था कि ज्ञान ही शक्ति है।

उस काल में, और वर्तमान काल तक मनुष्य ने ज्ञान की खोज के लिए अनेक आयोजनाएँ की। ज्ञान प्राप्ति के अवसान में वे भूखों रहने मे और फटे वस्त्र पहिनने में सङ्कोच तक नहीं करते थे। धनी पुरुषों ने, राजनीति विशारदों ने, व्यापारियों ने स्कूल और कालिज खोल दिये हैं, जिससे निर्धन पुरुष और स्त्री भी ज्ञान का लाभ उठा सके। अठारहवीं शताब्दी तक अधिकतर विद्वान दरिद्र होते थे और बनारस और बम्बई विश्व विद्यालय में अध्ययन करने वाले अनेक विद्यार्थी केवल रोटी और पानी पर जीवन व्यतीत करते थे।

मनुष्यों का ज्ञान के विषय में भ्रम

मनुष्य इतिहास के एक उत्कृष्ठ विद्वान ने कहा है कि "ज्ञान आत्मा का कार्य है" और एक प्रसिद्ध तत्वशास्त्रज्ञ (Philosopher) का उपदेश है कि "केवल ज्ञान ही यथार्थ है।"

परन्तु आधुनिक काल में बहुत से मनुष्य ज्ञान का अर्थ केवल "बातों के जानने" को लेते हैं। इन दोनों अर्थों का अन्तर दिन और रात्रि, अथवा वर्षा और शरद ऋतु के अन्तर के समान है।

शिक्षा तत्व घोटना नहीं है। उसका तात्पर्य मनुष्य की शक्ति का उचित उपयोग करना है। उसका उद्देश्य केवल पारितोषिक प्राप्त करना नहीं है किन्तु मनुष्य में विचार शक्ति उत्पन्न करना है। ज्ञान आत्मा का कार्य है। आत्मा को सदैव विचार कर के कहना चाहिये न कि स्मरण करके वही बात दुहरा दे अन्यथा वह अवनति की दशा को पहुँच जावेगी व हमारा कर्त्तव्य केवल पूर्वजों के विचार को ही सीखना नहीं परन्तु जीवन के रहस्य को हल करने के लिये स्वयं भी कुछ सोचना चाहिये। यह सत्य है कि हम में से प्रत्येक मनुष्य कवि और तत्वशास्त्रज्ञ, राजनीति विशारद या वैज्ञानिक नहीं हो हो सकता है परन्तु ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं है जो अपने मस्तिष्क का उचित उपयोग करके अपने सम्बन्ध में यथार्थ मत न बनाले।

विचार हीन होने की अपेक्षा तो जीवन के गलत विचार रखना कहीं अच्छा है। मस्तिष्क का उपयोग अवश्य होना चाहिये अन्यथा वह मुरझा जावेगा। हम भी वास्तव में विचार के अतिरिक्त क्या हैं? यदि हम यह सोचने का प्रयत्न करें कि हमारी आवश्यकीय यथार्थता क्या, तो हमें ज्ञात होगा कि वह ज्ञान है।

पार्लियामेण्ट के चुनने वालों के ऊपर दायत्व

हम देख सकते हैं कि अज्ञानता कितनी भयानक है। इंग्लिस्तान का भाग्य पार्लियामेण्ट के हाथ में है और पार्लियामेण्ट देश के पुरुष और स्त्री द्वारा चुनी जाती है। एक पार्लियामेण्ट के लिये यह बिल्कुल सम्भव है कि अंग्रेजी राज्य का विध्वंस कर दे, उनके व्यापार की उन्नति में बाधा डाल और एक द्वेशी आक्रमणकारी को साम्राज्य में लादे। केवल एक ही पार्लियामेण्ट के लिये सम्भव नहीं है कि वह देश की महिमा और शान नष्ट कर दे किन्तु देश की आबादी को मृत्यु और विद्रोह से कम दे। साथ ही माथ यह भी पार्लियामेण्ट के ऊपर ही निर्भर है कि साम्राज्य में उन्नति हो, राष्ट्र के सुख और धन में वृद्धि हो रोग नष्ट हो और यदि युद्ध असम्भव न कर सके, तो कम से अन्य राष्ट्रों को अति कठिन कर दे कि वे आक्रमण कर सकें।

यह सब पार्लियामेण्ट के आचारों पर ही निर्भर है। इससे हमें मालूम होता है कि पार्लियामेण्ट के चुनने वालों को मस्तिष्क का उचित उपयोग करना चाहिये।

केवल शिक्षा ही द्वारा हम नाश होने से बच सकते और जगत को उत्तम बनाने की आशा रख सकते हैं। हमें विचार करना आरम्भ कर देना चाहिये। हमें विचारना सीखने की इच्छा उत्पन्न कर देनी चाहिए। बच्चों की आधुनिक वंश परम्परा जगत को नाश होने से बचा सकती है यदि वे ज्ञान का नवीन विचार अपने मस्तिष्क में बना लें। यदि हम यह विचार

करलें कि हमारे विचार उत्कृष्ट हैं, तो हमारी विचार शक्ति अति हीन हो जावेगी और हम अपने पूर्वजों के बताये हुए मार्ग का अनुसरण करने लगेंगे।

एक ज्ञानी पुरुष दरिद्र मे धनवान हो सकता है

और फिर ज्ञात होगा कि अध्ययन मे सुख के सब आकारों के ऊपर एक सुख है। हमें प्रतीत होगा कि हम उन्नति कर रहे हैं। हम केवल संसार के लालचों की दया पर जीवित नहीं रहेंगे। हमे इस बात की चिन्ता नहीं कि हम धनवान हैं या धनहीन; फैशनदार है या नम्र। हम केवल उत्तेजना के वशीभूत होकर अपने दिन व्यतीत न करेंगे हम शान्त पूर्वक सोच विचार कर जीवन का एक एक दिन व्यतीत करेंगे।

ज्ञान शक्ति है; और ज्ञान ही शक्ति का प्रभाव केवल जीवन की शारीरिक वस्तुओं पर ही नहीं है परन्तु उस मनुष्य की आत्मा पर भी जो जानता है अर्थात जिसे ज्ञान है। न कोई परियों का निवास स्थान, न छिपे हुए कोष का द्वीप सत्य की खोज करने वाले मस्तिष्क की सन्तुष्टी से ऊपमा दी जा सकती है। ज्ञान का कोष उन लोहे की अलमारियों मे नहीं रक्खा जाता जिनको मृत्यु के पश्चात इसी पृथ्वी पर उपयोग या खराब करने के लिये छोड़ देना पड़ता है किन्तु अमर आत्मा मे एकत्र किया जाता है और उसको अपना मार्ग मृत्यु के पश्चात निश्चत करना पड़ता है। उसको कोई मनुष्य चोरी नहीं कर सकता न उसे राजा छीन सकता है, न आग और भूकम्प से रक्षा करने के

लिये उसको बीमा कराना पड़ता है। यही नहीं, वह चक्रवृद्धि व्याज से भी अधिक जाति से बढ़ता जाता है और अन्त में एक तुच्छ विद्वान भी मनुष्यों में सब से अधिक धनवान, हो जाता है।

अमर प्लेटो (Plato) ने हमसे कहा था कि इस सत्य शिक्षा का क्या चरित्र है; यह एक चिन्गारी से उठी हुई रोशनी है; जो आत्मा के अन्दर प्रवेश करके ईंधन प्राप्त कर लेती है।

जब हम यह देखते हैं कि ज्ञान का प्रेम अथवा सत्य का प्रेम आत्मा का परमात्मा के पास पहुँचने का सीधा मार्ग है तो हम जगत के खोजने वालों और विचारने वालों की उत्तम सेना में सम्मिलित हो जावेंगे।

जगत में ज्ञान की खोज करने वालों की उत्तम सेना

हम केवल अपने चारों ओर देखने से ही ज्ञात कर सकते हैं कि यह सेना कितनी उत्तम है। प्रत्येक पुस्तक और पत्रिका एक अविष्कार- मुद्रित करना, का फल है। रेल जो हमें एक दिन में सैकड़ों मील दूर ले जाती है, और जलयान जो हमे महासागर में सहस्रों मील की दूरी पर ले जाता है, आपकी परीक्षा के अनुभव के फल हैं। टैलीफोन का आविष्कार एक ऐसे मनुष्य ने किया था जिसने विद्युत को समझने का प्रयत्न किया था और बेतार का टैलीफोन एक उस मनुष्य ने आविष्कार

किया था जिसने अदृश्य ईथर (Ether) के रहस्यों का अन्वेषण करने का प्रयत्न किया था। डाक्टर, सर्जन (Surgeon) अब शरीर के किसी भी भाग को स्पर्श कर सकता है जिससे हमारा रोग दूर हो सके। एक ज्योति ज्ञान को न केवल पृथ्वी का ही सम्पूर्ण वृतान्त ज्ञात है किन्तु आकाश और तारों के विषय में भी कुछ बता सकता है।

हमारा भोजन, हमारे वस्त्र, हमारी घड़ियाँ, हमारी वाटिकाएं और हमारे खेत अज्ञान के ऊपर ज्ञान की विजय के साक्षी हैं।

ज्ञान के लिये मनुष्य की खोज की अन्तिम पहुँच

केवल एक मनुष्य ने हमें असभ्यता के भय और अन्धकार से दूर कर दिया है; और यह वह मनुष्य है जिसने ज्ञान प्राप्त करने के लिये प्रयत्न किया है।

और उसने हमें न केवल असभ्यता से ही दुत्कार दिया है; उसने मनुष्य को सम्मानित कर दिया है। क्योंकि उचित उपयोग करने से मनुष्य ने मस्तिष्क की शक्ति को बढ़ा दिया है जिसके फल स्वरूप अधिक मनुष्य सृष्टि के रहस्यों को हल करने का प्रयत्न करते हैं। न्यूटन (Newton) या डारविन (Darwin) के समान पुरुष और एक अफ्रीका के जंगली पुरुष में भेद बताने की आवश्यकता नहीं है। यह प्रतीत होगा कि मनुष्य की आत्मा अपने आपको उतनी अधिकार पूर्वक प्रकट

नहीं कर सकता जब तक कि उसे एक मस्तिष्क ऐसा मिले कि जिसे ज्ञान की यथार्थ अभिलाषा हो।

उन्नीसवां अध्याय

शक्ति

शक्ति वह है जिससे मस्तिष्क पर फौरन प्रभाव पड़ सके। एक मध्यगति के स्वस्थ पुरुष का मस्तिष्क अधिक दिन तक एक ही भाव का सहन नहीं कर सकता। मस्तिष्क केवल कार्य्य ही से जीवित है।

शक्ति का अर्थ बल का प्रभाव है। परन्तु यह शब्द की भांति सरल नहीं है। वास्तव में एक क्षण विचार करने से विश्वास हो जावेगा कि इस शब्द का अर्थ समझने का प्रयत्न करना सृष्टि के रहस्यों का विरोध करना है।

यह बताने के लिये कि शक्ति कैसी असाधारण वस्तु है, विज्ञान से पता लगता है कि मृत्यु के पश्चात् एक कुत्ते में वही शक्ति रहती है जितनी कि उसके जीवन काल में थी। वह सम्पूर्ण शक्ति अभी मौजूद है, जिसके द्वारा वह अपने स्वामी की छाती पर कूदता था, वह एक हड्डी के टुकड़े को देखकर पूँछ हिलाता था और व्यायाम करने के समय कूदता और दौड़ता था—वह सम्पूर्ण विचित्र शक्ति अब भी वही है परन्तु उसमें

अब अधिकार नहीं है। उस शक्ति के उचित उपयोग करने के लिये अब जीवन की आवश्यकता है।

तूफान गाड़ी के सामने लगे हुए इञ्जिन की ओर देखो, मानो वह गार्ड की सीटी सुनने को और उसके झण्डे को फहराते हुए देखने को अधीर हो रहा हो। उस इञ्जिन के सिरे पर हमें एक छोटा सा चमकता हुआ पीतल का गुम्बद दिखाई देता है; और हम जानते है कि इस गुम्बद के अन्दर भाप है, कि जब भाप को काम करने का संकेत दिया जावेगा, तो वह इस बड़े यन्त्र के पहियों को हिला देगी, कि यह यन्त्र इस लम्बी और भारी गाडी को स्टेशन के बाहर खींच कर ले जावेगा और कि थोड़े समय पश्चात् कुल गाडी साठ मील प्रति घन्टे की चाल से दौड़ी हुई चली जावेगी।

परन्तु आग के ऊपर एक चम्मच पानी डाल दो और देखो कि हम भाप में से इतनी शक्ति प्राप्त कर सकते हैं जिससे कमरे की खिड़कियां खुल जावें। व्यर्थ वही शक्ति जो एक बड़े भारी बोझे को ऐसी शीघ्रता से ले जाती है, यहां पर वायु में व्यर्थ उड़ती हुई दिखलाई देती है या रात्रि के समय चिमनी मे से निकल कर हानि न पहुँचाते हुये हवा में मिल जाती है।

केवल शक्ति ही यथेष्ट नहीं है। उसका उपयोग एक निश्चित कार्य के लिए होना चाहिये। तूफान गाड़ी का इञ्जिन सहस्रों मन कोयला जलाने पर भी एक खाली दियासलाई के बक्स को आधा इञ्च भी दूर न ले जावे। यदि शक्ति का उचित

उपयोग करना है तो आवश्यकीय है कि उसे सही मार्ग पर काम में लाया जावे।

चलो, फिर तूफान गाड़ी की ही ओर चलें। मनुष्य के मस्तिष्क ने कहा है कि "हमें देहली से कलकत्ते तक रेल की पटरी डालनी पड़ेगी, नहीं तो हमारी गाड़ियां बिहार व बङ्गाल तक न जा सकेंगी।" परन्तु ये रेल की लाइनें गाड़ी को भेजने में कुछ भी सहायता नहीं करती। वे एक फटे वस्त्र की भांति अथवा सड़क पर पड़े हुए पत्थर के एक टुकड़े के समान पड़ी रहती हैं। केवल इतना ही नहीं, वे वास्तव में घिस्से के कारण पहियों की गति को कम कर देती हैं।

महान शक्तियां और शान्त मस्तिष्क की शिक्षा का फल

फिर भी वे आवश्यकीय हैं। वे कोई काम नहीं करती, परन्तु एञ्जिन के कार्य पर प्रभाव डालती हैं, वे उसकी शक्ति का उचित उपयोग करने में सहायता देती हैं।

पानी गरम करने वाले पात्र की ओर देखो। उससे भाप पैदा होती है; परन्तु यह कार्य तो एक चम्मच पानी ने भी किया था। उससे भाप उत्पन्न होती है परन्तु उसे इसका ज्ञान नहीं है कि भाप क्या है, या भाप क्या कर सकती है या उससे निकलती हुई भाप का क्या होगा। दूसरे शब्दों में इसका ज्ञान मछली पकड़ने वाले कौटे की भांति है जिसका तात्पर्य मछली पकड़ना है।

हांकने वाले की ओर देखो। वह भाप उत्पन्न नहीं करता जैसे भाप पैदा करने वाला पात्र एक दियासलाई नहीं जला सकता, उसी प्रकार एञ्जिन हांकने वाला भाप नहीं पैदा कर सकता। परन्तु भाप के सम्बन्ध में तो सब कुछ इस जलहीन मनुष्य के ऊपर ही निर्भर है कि वह पात्र से निकलती हुई भाप का उचित उपयोग करके उसके द्वारा एञ्जिन के पहियों को घुमावे और इस प्रकार गाडी को देहली से कलकत्ते पहुँचा दे।

यही हाल क्रिकिट के एक खिलाडी का है। मिस्टर अमर नाथ शक्ति पैदा नहीं करता किन्तु उसे सही मार्ग बतलाता है। यही हाल मिस्टर नायडू अपने बल्ले (Bat) से करते हैं। हम शक्ति बना नहीं सकते। हम केवल उसे ज्ञात कर सकते हैं, उसे छोड सकते हैं और उसे सही मार्ग बतला सकते हैं। यही कारण है कि मनुष्य सृष्टि के विषय मे यह कह सके हैं कि 'यह दो बाते तो हमे निश्चय रूप से ज्ञात हैं। एक पदार्थ है दूसरी शक्ति और एक तीसरी वस्तु और है, जिसका ज्ञान अभी तक अनिश्चित है और वह है मस्तिष्क और इन तीनों में मस्तिष्क सबसे बड़ा है।"

पानी के एक गिलास में की शक्ति अंग्रेजी बेड़े को उठा सकती है

प्रत्येक स्कूल के लड़के को पटाका उठाने का अनुभव होगा। इसमें बारूद कागज में लिपटा होता है। शक्ति बारूद में है

परन्तु बारूद को लो और उसे पृथ्वी में बो दो अथवा पानी भरे पात्र में डालदो या चावल के भात के ऊपर छिड़क दो; न तो कोई लपट ही उठेगी और न कोई धक्का ही लगेगा उस शक्ति को निकालने के लिये अग्नि की आवश्यकता है। अग्नि शक्ति उत्पन्न नहीं करती किन्तु उसे बारुद मे से निकाल लेती है।

एक बारूद से भरी हुई बन्दूक सैकड़ों वर्ष तक, सम्भव है, बेकार रक्खी रहे। उसकी सम्पूर्ण शक्ति कुछ भी कार्य नहीं कर रही होगी और एक मिट्टी के ढेर के समान शान्त रहेगी। परन्तु इसका घोड़ा दबाते ही शक्ति उसी क्षण काम में आजाती है, जिसके फलस्वरूप बारुद बहुत तेजी से बाहर आ पड़ता है और ऐसी तीक्ष्ण आवाज करता है कि बिल्ली कूद कर छत से जा लगे।

एक वैज्ञानिक ने हमें बताया कि पानी भरे गिलास में इतनी शक्ति है कि वह अंग्रेजी जहाज के बेड़े को वायु में कुतुबमीनार के बराबर ऊंचा उठा सकती है। परन्तु तुम्हें पानी के अनेक गिलास पीने पड़ेगें ताकि तुम्हारे सिर पर एक बाल एक इञ्च की कुछ भिन्न भी बढ सके।

यह कहा जाता है कि परमाणु में यथेष्ट शक्ति है जिससे जमीन फट सकती है-यदि हम एक परमाणु (Atom) फूंक दें तो वह अपने पास वाले को फूंक देगा, इसी प्रकार तमाम परमाणु समाप्त होते जावेंगे और अन्त में न दोनों ध्रुव रहेंगे, न भूमध्यरेखा, न परिधि, न पृथ्वी और न महासागर।

समस्या सदैव प्रथम यही है कि शक्ति का उद्धार होना चाहिये जैसे कि बन्दूक का घोड़ा हम खींच लेते हैं, और फिर उस की दिशा जैसे हम गरम पात्र की भाप को इञ्जिन के पहिये के चलाने के काम में लेते हैं।

शक्तिकार्य में भयंकर किन्तु शान्तिअवस्था में हानिकारक नहीं

सर ओलीवर लोज (Sir Oliver Lodge) का कहना है शक्ति वह, जो जब किसी वस्तु में हो तो दूसरी वस्तु में जाते समय प्रथम वस्तु कार्य करने के योग्य बनादे।

हमारे चारों ओर और हमारे अन्दर यह रहस्यमय वस्तु है, जिसको शक्ति के नाम से पुकारते और जितना अधिक हम इसके विषय में विचार करेंगे, उतना ही अधिक स्पष्ट हमको पता लग जावेगा कि उसके विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं है।

"शक्ति वह है जो ।" यह परिभाषा "वह" में समाप्त होजाती है। यह सब जानते हैं कि हम में शक्ति है और हम यह भी जानते हैं कि हम उसका कुछ भाग एक क्रिकेट के बल्ले (Bat) को देदें तो वह एक गेंद को पृथ्वी पर फेंक देगा; परन्तु यह क्या है ,यह कौन बता सकता है? हम सबको यह ज्ञान है कि भाप में महान शक्ति है; परन्तु किसने उसको कभी देखा है, उसका प्रयोग किया है, उसके टुकड़े २ किये हैं, उसका चित्र खींचा हैं, या उसका फोटो (Photograph) खींचा है।

हम आकार वस्तु देख सकते हैं परन्तु उसकी शक्ति को नहीं देख सकते। हम पदार्थ को कार्य करते हुये देख सकते हैं जैसे क्रिकिट खेलने वाला एक गेंद को मारकर फैंक देता है अथवा एक इञ्जिन एक गाड़ी को खेंचता है; परन्तु हम उस शक्ति को नहीं देख सकते जिसके द्वारा कार्य सम्पादन होते है। और इससे भी कम हम मस्तिष्क को देख सकते है, जो प्रकृति की शक्तियों को ठीक मार्ग पर लेजाता है और उनका उचित प्रयोग करता है।

अब शक्ति के विषय में अनेक विचित्र बातों में यह सबसे विचित्र है यह व्यवहार के साथ अति भयङ्कर है और शान्ति-अवस्था में यह कोई हानि नहीं पहुँचा सकती। दो मनुष्यों के ऊपर विचार करो। एक पहलवान है जिसके मांसपेशी बहुत बलवान हैं, जिसकी छाती पर्वत के समान है, जिसकी टागें एक खड़े हुये वृक्ष के समान हैं और जिसकी कमर एक बर्र के समान है। दूसरा मनुष्य पीला, पतला, और चिन्ताग्रस्त है और तमाम दिन कई वर्षों से बिस्तर पर पड़ा हुआ है, जहां से उठने तक के लिये उसमें बल नहीं है।

कभी न घटने वाला और उपयोग से बढने वाला बल

पहलवान जो कुछ है वह अपनी शक्ति के कारण है। यह बड़ा भारी बल है जिसके कारण वह भारी वजन उठा सकता

है, लम्बी दूर दौड़ सकता है, बड़ी ऊँचाई तक कूद सकता है। बिना उस शक्ति के वह कुछ भी नहीं कर सकता।

लेकिन वह बिचारा बुड्ढा भी इसी शक्ति से भरा हुआ है। उसके शरीर में भी शक्ति भरी हुई है किन्तु उसका कभी उपयोग नहीं होता। क्या तुम्हारा यह विचार नहीं है कि इससे उसका नाश हो जायगा ? इतना बल शान्ति मे पड़ा हुआ यदि शक्ति के द्वारा पहलवान ऐसे विचित्र कार्य कर सकता है तो वही शक्ति उस बुड्ढे आदमी के शरीर को क्यों नहीं फाड़ देती है जो उस शक्ति का उचित उपयोग नहीं करता अथवा नहीं कर सकता।

यहां भी यह व्याकुलता समाप्त नहीं हो जाती। क्योंकि वह पहलवान, जो कि शक्ति का जीवन के प्रतिक्षण में उपयोग करता है, उस शक्ति को कभी नहीं खोता। जितनी अधिक वह उसे निकालता है, उतनी ही अधिक शक्ति उसके शरीर में शेष रहती है।

मानलो कि वह इस शक्ति का एक बडा भाग एक क्रिकिट की गेन्द को दे देता है जिसके द्वारा एक अचल और मुर्दा गेन्द वायु मे उछल जाती है। और मैदान के बाहर सड़क पर जाकर गिरती है। उसने अपनी शक्ति का जरासा अंश भी नहीं खोया है, किन्तु इसके विरुद्ध उसे अपनी शक्ति बढती हुई प्रतीत होगी। उसकी मांस पेशी भले ही थक जावे, क्योंकि यह रेलवे की लाइन हैं जिन पर शक्ति यात्रा करती है; परन्तु उसकी शक्ति

कभी थकती नहीं है, न कभी समाप्त होती है और उसके मृत्यु काल उसके शरीर मे ही रहेगी।

एक बीज के जीवन में विचित्र रूप परिवर्तक दृश्य

यह मातृ प्रेम की भांति है। किसी ने कहा है कि माता का प्रेम अपने गृहस्थ के साथ दिनो दिन बढता ही रहता है। जब वह अपनी प्रथम सन्तान का पालन पोषण करती है, वह उसके ऊपर अपना सम्पूर्ण प्रेम न्यौछावर कर देती है। वह उसमें से कुछ भी शेष नहीं रख सकती, जो कुछ उसके पास है वह उस नन्हे से बच्चे को ही दे देती है। परन्तु जब वह अपने द्वितीय बच्चे को पालती है, तो उसके लिए भी माता के पास असीम प्रेम आ जाता है और फिर भी प्रथम सन्तान के ऊपर दूसरी सन्तान से प्रेम का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

यह प्रेम भी कितनी विचित्र वस्तु है। यह कभी समाप्त नहीं होने वाली है। इसमें से सदैव व्यय होती रहती है और फिर भी सदा वृद्धि ही होती रहती है। वह सदैव एक सी रहती है और फिर भी उसमें सदा परिवर्तन होता रहता है।

इसके विषय में ठीक प्रकार से विचार करो क्योंकि हम कल्पना पूर्वक नहीं किन्तु वैज्ञानिक ढङ्ग से बात कर रहे हैं। प्रत्येक मनुष्य जानता है कि प्रेम क्या है; यह मनुष्य के अनुभव का एक महान फल है परन्तु फिर भी एक ऐसा रहस्य है जिसे

कोई भी पुरुष अथवा स्त्री अभी विश्वास पूर्णता से नहीं समझा सके। क्यों कि इसका कोई अन्त नहीं और ऐसा प्रतीत होता है कि इसे शब्दों मे प्रकट करने का प्रयत्न ही निष्फल है।

यही हाल शक्ति का है। जैसा हम पूर्व कह चुके हैं, विज्ञान का सम्बन्ध है दो वस्तुओं से—पदार्थ और शक्ति; और शक्ति के विषय में हम पहिले कह ही चुके हैं कि वह "एक ऐसी वस्तु है जो.. आदि २।" एक पौदे मे जीवन है। पौदे को खालो और तुम इस प्रकार उसकी शक्ति निकाल लो, ताकि तुम्हारा पालन हो जावे तथा तुम्हारे अन्दर वल आजावे। परन्तु एक पौधे की शक्ति को कौन समझ सकता है? यह वह शक्ति है जो एक दिन एक छोटे से वीज में आई थी, उसमे कुल्ले फूट गये थे, सूर्य्य की ओर मुँह कर लिया था और सूर्य के प्रकाश में ही वीज से दस सहस्त्रवाँ वड़ा भाग धारण कर लिया था। कौन इस शक्ति का वर्णन कर सकता है? किसने उसे कभी देखा है अथवा स्पर्श किया है।

हम देखते हैं कि यह विचार करना विल्कुल असम्भव है कि प्रकृति में भिन्न २ प्रकार की शक्तियां जगत को इतना मनोहर वना देती जव तक कि उन्हे उचित शिक्षा मस्तिष्क द्वारा न दी जाती। जिधर भी हम देखते हैं, उधर ही हमें दिखलाई देता है कि इस शक्ति के लिए प्रकृति ने रेलवे की लाईन, पहिये और भाप वनाने के पात्र दिये हैं, जिससे सदैव के लिये वेकार हो जाने अथवा सदा के लिए व्यर्थ व्यय करने के स्थान में इस विचित्र शक्ति का किसी विशेष उद्देश्य के लिए प्रयोग किया

जाता है; दूसरे शब्दों में शक्ति से स्वामी की निगरानी में काम लिया जाता है।

पदार्थ, शक्ति और मस्तिष्क, और इन तीनों में सबसे बड़ा मस्तिष्क है

एक पानी भरे गिलास में अँग्रेजो जहाजो बेड़े को उठाने की यथेष्ट शक्ति है। तो फिर एक गोल तालाब में कितनी शक्ति होगी या हिन्द महासागर में कितनी शक्ति होगी ? परन्तु फिर भी पृथ्वी ऐंठ नहीं रही है। उसमें शान्ति है, सौन्दर्य है, वृद्धि है, और विकास है। निश्चय ही, यदि एक तूफान गाडी के चलाने के लिये एक हांकने वाले की आवश्यकता है, तो इस प्रकृति की महान शक्तियों का उचित उपयोग करने के लिए एक अति महिमा शाली मस्तिष्क की आवश्यकता है।

निश्चय रूप से हमें इसका ज्ञान है—कि मनुष्य की उन्नति इन प्राकृतिक शक्तियों के अन्वेषण पर और उनको उचित ध्येय पर पहुँचाने के प्रयत्न पर निर्भर है। वे तमाम शक्तियाँ, जिनसे सभ्यता वर्तमान रूप में बन सकी है, मनुष्य के मस्तिष्क द्वारा ही ठीक बन सकी हैं। बिना मस्तिष्क की अधिकारी शक्ति के, वे कुछ भी काम में न आ सकती। वे ज्यों की त्यों रहती।

पदार्थ है। शक्ति है। मस्तिष्क है। फिर भी हम यही कहेंगे कि इन तीनों में मस्तिष्क सबसे बड़ा है।

बीसवां अध्याय

गुण

गुण भी कैसी मनोहर वस्तु है। अवगुण उससे कितना भिन्न है। अवगुण का अर्थ है बुराई, परन्तु एक विशेष प्रकार की बुराई; न कि घृणित, अचिन्तित, अज्ञान अथवा अबोध बुराई किन्तु सावधान बुराई, सबोध बुराई, सम्पूर्ण इच्छा से भरी हुई बुराई और अपने हृदय से बुराई। अवगुण एक भयानक वस्तु है, क्योंकि उसका तात्पर्य है भिन्न २ काल के मनुष्यों के सौजन्यता के प्रयत्न को निष्फल कर देना तथा परमेश्वर को घृणा की दृष्टि से देखना।

डान्टे (Dante) ने कहा था "सम्पूर्ण वस्तुओं का मूल परमात्मा है। निर्माण की हुई वस्तुओं में मनुष्य सबसे उत्तम है। परमात्मा ने अन्य वस्तुओं की अपेक्षा मनुष्य को अपनी प्रकृति का अधिकांश दे दिया है।" इतिहास के आरम्भ में ही मनुष्य ने अपने आप में और पशुओं मे यह अन्तर समझ लिया था। मनुष्य जाति और पशुओं के बीच एक स्पष्ट रेखा खींचदी गई थी। उस रेखा के ऊपर गुण थे जो मनुष्य जाति का ध्येय होना चाहिये और जिससे उसकी महिमा में वृद्धि होसके। उस रेखा के नीचे पशुओं द्वारा किये हुए कार्य थे जिनमें से कुछ एक मनुष्य केवल अपना मनुष्यत्व खोकर ही कर सकता था।

हमें अति शीघ्र ज्ञात होगया कि यदि मनुष्य के इतिहास के आरम्भ में कुछ ऐसे मनुष्य न होते जो उन्नति प्राप्त करने का प्रयत्न न करते, तो मनुष्य जाति इस समय भी पशुओं की भांति खेत चरती होती।

सत्य के गुण पर ही विचार करो। मानलो मनुष्य ने यह कहा होताकि "सत्य भाषण मूर्खता है क्यों कि कभी २ उससे आपत्ति का सामना करना पड़ता है।" अथवा मानलो कि उन्होंने कहा होता कि "सत्य केवल सरल मनुष्यों के भाषण की भाषा है; झूठ बोलने के लिये एक विचार करने योग्य मनुष्य की आवश्यकता पड़ती है।" हम देखते हैं कि यदि मनुष्य जाति का यह मत होता तो कोई उन्नति न हो सकती।

परन्तु मनुष्य ने सोचा था कि उनकी संरक्षता के वास्ते सत्य आवश्यकीय था और जब ऐसा अवसर आ पड़ता था कि असत्य भाषण अधिक सुरक्षित था फिर भी वे सत्य ही बोलते थे।

यह बताने के लिये अधिक विचार की आवश्यकता नहीं है कि यदि मनुष्य ने सत्य भाषण को मनुष्य जाति की संरक्षता के हेतु आवश्कीय न समझा होता तो जीवन मे कितनी गड़बड़ हो जाती। यदि एक मनुष्य दूसरे के शब्दों का विश्वास न करता तो आज हमारी क्या दशा होती—यह विचार करने योग्य विषय है। न बैङ्क होते, न बीमा के दफ्तर और न व्या-पारी लोग। हमें अपना भोजन अपने ही आप पैदा करना तथा

बनाना पड़ता अन्यथा सम्भव है कि पकाने वाले झूठा हो और हमारे भोजन में कोई विषैली वस्तु डालदे। हम अपनी मृत्यु के पश्चात अपने बच्चे एक वकील की देख रेख में न छोड़ सकते क्योंकि शायद वह उनको मृत्यु की भेंट करके हमारा माल लेकर चम्पत होजावे। हम न हमारा रुपया किसी व्यापार अथवा कारखाने मे लगाते क्योंकि सम्भव था कि दुकान वाला या सौदागर या सामान बनाने वाला झूठा हो और हमारा रुपया लेकर भाग जाय।

मनुष्य जाति को नाश होने से बचाने के लिए सत्य भाषण अतएव आवश्यकीय है। हमें डाक्टर का विश्वास करना चाहिये कि वह ठीक नुस्खा बनादे और वैज्ञानिक का कि वह उसमें कोई विषैली वस्तु न डालदे जिससे हमारे जीवन का अन्त हो जाय। हमें अपने पत्रों के लिए डाकिये का विश्वास करना चाहिये और अपने निवास स्थान के लिए रात्रि मे सिपाही का विश्वास करना चाहिये। हमें एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुचने के लिये एञ्जिन चलाने वाले का अथवा मोटर के हॉकने वाला का विश्वास करना ही चाहिये।

परन्तु यह तो केवल सुगमता का एक गुण है। सत्य बोलना इसलिये उचित है कि असत्य भाषण द्वारा सभ्यता असम्भव होजाती है। बहुधा ऐसा होता है कि यदि उसका मुंशी उसका रुपया चोरी करले तो वह मनुष्य क्रुद्ध होगा और जनता से रुपया बचाने का लालच देगा। बहुधा यह भी देखा गया है

कि एक उपन्यास लेखक के पत्र एक डाकिया चुराले अथवा उसका रुपया लेकर दलाल भागजावे तो वह उनके विरुद्ध ऐसी पुस्तकें लिखेगा जिससे प्रतीत होगा कि गुण भी अज्ञान से भरा हुआ है।

गुण की शक्ति में मनुष्य की अपार श्रद्धा

तो फिर यह कहना उचित नहीं है कि गुण एक अच्छी वस्तु है क्योंकि यह आरामदायक है। सम्भव है एक वस्तु एक मनुष्य के लिए आरामदायक हो और दूसरे के लिए न हो; इतना ही नहीं, यह भी सम्भव है कि एक वस्तु जो एक मनुष्य के लिए एक समय आरामदायक हो, दूसरे समय आरामदायक न हो। गुण से मनुष्य को सुभीता होता है; और यह बात बहुत काम का विषय है जिससे ज्ञात होता है कि मानुषिक उन्नति विधि विषयक है। परन्तु गुण केवल सुभीता ही नहीं है परन्तु उससे कहीं अधिक है।

मनुष्य के मुँह से निकले हुए सबसे अधिक उत्तम पांच शब्द एक अँग्रेजी व्यापारिक जहाज के कप्तान के मुँह से निकले थे। उसका जहाज समुद्र की लहरों में घिर गया था और कुछ मिनटों में ही वह समुद्र में डूबने वाला था और फिर कभी न दिखाई देता। कप्तान मनुष्यों को बचाने का प्रयत्न कर रहा था। प्रथम बच्चे और स्त्रियां बचाई गईं। फिर मनुष्य—इसके पश्चात मल्लाह। इस समय जहाज बहुत तेजी से डूब रहा था

एक यात्री ने कप्तान से प्रार्थना की कि वह अपनी जान बचाले। उसने अस्वीकार कर दिया। उसने अन्तिम नाव की संरक्षता को खतरे मे डालना उचित न समझा क्योंकि उसमें बहुत यात्री भर दिये गये थे। फिर एक बार उससे विनती की गई परन्तु व्यर्थ। तो यात्रियों ने पूछा कि वह जहाज के साथ क्यों डूबना चाहते थे और कप्तान ने उत्तर दिया कि "क्योंकि मैं एक मनुष्य हूँ।"

इन पांच शब्दों में उस महान व्यक्ति ने गुण की उत्तमता में मनुष्य जाति का विश्वास प्रकट कर दिया। वहां सुभीते का कोई विचार ही न था। कुल विषय का सारांश एक शब्द मे कहा जा सकता है—कर्तव्य एक परिमित मनुष्य को गुणी होना आवश्यकीय नहीं है। एक ईमानदार मनुष्य, एक वीर मनुष्य, एक धर्मार्थ मनुष्य, एक तीक्ष्ण मनुष्य—इनमें से किसी को गुणी मनुष्य होना आवश्यकीय नहीं है। गुणी पुरुष वही है जो निस्सन्देह और निःसङ्कोच अपमान तथा कपट की अपेक्षा अपना जीवन बलिदान करने के लिये तत्पर रहता है।

मनुष्यत्व सिखाने के लिय अच्छे गुण

"क्यों कि मै एक मनुष्य हूँ।" कुछ ऐसे कार्य हैं जिन्हे मनुष्य को अवश्य करने चाहिये और बहुत से ऐसे कार्य है जिन्हे उसे नहीं करने चाहियें। वह इन विषयों मे विवाद नहीं करता। यदि कोई मनुष्य यह पूँछे कि वह अमुक कार्य क्यों

करता है और अमुक क्यों नहीं करता, तो वह मनुष्य, जिससे यह प्रश्न किये गये हैं, आश्चर्य चकित हो जावेगा। उसका उत्तर वही होगा जो उस कप्तान ने दिया था कि "क्यों कि मै एक मनुष्य हूँ।"

गुण का अर्थ केवल उन कार्यों से ही नहीं है जो कि एक मनुष्य कर सकता है किन्तु उन कार्यों से भी जो उसे अवश्य करने चाहिये। कोष से हमें ज्ञात होता है कि इस शब्द का अर्थ है मनुष्य के ढङ्ग। इस शब्द के द्वारा उन ढङ्गों का हमे कुछ विचार हो जाता है जैसे बल, साहस, योग्यता, पराक्रम। एक निष्कपट मनुष्य में ये सब गुण होने चाहिये और इसके अतिरिक्त भी अनेक। उन पर उसका पूर्ण अधिकार होना चाहिये ताकि वह उनके विरूद्ध न कुछ करे, न कुछ कहे और न कुछ विचार करे।

मनुष्य के ढङ्ग को गुण कहते हैं—इस पर विचार करना भी एक मनोहर विषय है। हम ढङ्ग का अर्थ भली प्रकार समझते हैं। शक्ति लोहे का गुण है; नरमी उनका गुण है; मिष्टता अनेक फलों का गुण है। हम एक वस्तु को दूसरी से उसके गुण के द्वारा भिन्न २ कर सकते हैं और करते हैं।

एक मनुष्य जो अपनी भावना के हेतु मृत्यु का सामना करने को तत्पर है

इसी तरह हम गुणों के द्वारा मनुष्य और पशु मे भेद कर

सकते है। गुण एक ऐसी वस्तु है जिससे मनुष्य अन्य जीवों से पृथक किया जा सकता है। यही मनुष्य का स्वभाव है। यही उसका चिह्न है। यह चरित्र है। यह विचारना विचित्र है कि मनुष्य का अन्य जीवों से भेद इस आचार के ही कारण है जिसे हम गुण कहते हैं। वह एक अजनबी मनुष्य की सहायता व रक्षा के लिये जाता है जैसे एक जलते हुए मकान मे स्त्री या गहरे समुद्र मे एक बालक क्यों? क्योंकि वह एक मनुष्य है। वह एक ऐसे विचार के कारण फांसी के तख्ते पर चढ़ने को तैयार हो जाता है, जिसको वह इस जगत में सिद्ध नहीं कर सकता, क्यों? क्योंकि वह एक मनुष्य है।

जब हम पढते हैं कि एक बेरहम जीव ने एक बच्चे को अथवा एक स्त्री को मारा है, तो हम क्या कहेंगे? हम यही कहेंगे कि "वह मनुष्य ही नहीं है।" हम उस कपटी आदमी के विषय मे क्या कहेंगे जो अपने देश को शत्रु के हाथ सौंप देता है। हम यहीं कहेंगे कि 'वह मनुष्य ही नहीं है।" कोई हमसे यह कहता है कि एक मनुष्य जो ऐसे कर्म कर सकता है, मनुष्य ही नहीं है। वह स्वयं कपटी है और छल से भरा हुआ है। उसने अपनी आत्मा का भी अनुसरण नहीं किया है।

मनुष्य जाति की यात्रा और अचलायमान आत्मा

हम पशु से उन्नति करते २ जङ्गली मनुश्य बने और अधिक

उन्नति करने के पश्चात् अब सभ्य बन गये हैं क्योंकि प्रत्येक परम्परा में ऐसे पुरुष और स्त्रियों ने जन्म लिया है, जिन्हें गुणों से प्रेम रहा है। उनकी संख्या चाहे अधिक न रही हो परन्तु उनका प्रभाव सदैव बहुत रहा है। उनका सदैव यही ध्येय रहा कि मनुष्य जाति को अभी और उन्नति करनी है। उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि "अब हम रुक सकते हैं। हमें अब विश्राम करने का अवसर प्राप्त होगया है।" नही उन्हें यह कहने तक का साहस होगया कि "जैसे परमात्मा दोषहीन है, उसी तरह मनुष्य जाति को शुद्ध तथा दोषहीन हो जाना चाहिए।"

यदि उन्होंने उन्नति के लिये यह आवश्यक न समझा होता, तो जगत इस समय रेगिस्तान होता। गुण के विषय में यही सबसे अधिक विचित्र बात है—यह अवगुण की भांति अति भयङ्कर है। केवल जीवित कामना करते हुए, भूखा और प्यासी अवस्था में गुण यथार्थ है।

हमें इस समय उन दो मनुष्यों का विचार आ जाता है जो एक मन्दिर में प्रार्थना करने गये। उनमें से एक विधि विषयक पुरुष था और उसने परमात्मा को धन्यवाद देते हुए कहा कि अन्य पुरुषों की भांति वह बदमाश न था। दूसरे पुरुष ने अपना शिर नवाते हुए परमात्मा से यह कहते हुए क्षमा मांगी कि हे परमात्मा मुझ एक पापी पर दया कर।" इन दोनों पुरुषों में क्या अन्तर, विशेष अन्तर है? एक स्वयं सन्तुष्ट है,

दूसरा असन्तुष्ट है: एक ने उन्नति बन्द कर दी है: दूसरा अभी उन्नति कर ही रहा है।

मनुष्य को उन्नति के मार्ग पर ले जाते हुए गुणों में वृद्धि

गुण के विषय में एक बात देखने और विचारने योग्य है। वह है उसके बढ़ते हुए ढङ्ग। जङ्गली मनुष्यों पर उसने जो अधिकार मांगे वह अति सरल थे उदाहरणार्थ न चोरी करना, न हत्या करना। परन्तु जब मनुष्य ने ठीक और गलत में भेद समझ लिया, फिर भी गुणों का मनुष्य पर अधिकार था। इस समय उसने कहा। 'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो"; और फिर अन्त में उसने कहा "अपने शत्रुओं से प्रेम करो।"

एक विचारज्ञ ने आनन्द की उस विचित्र महिमा को देखा जो एक गुणवान पुरुष को आती है "यदि गुण स्वयं कोई छोटा पारितोषिक नहीं है और अवगुण स्वयं दण्ड, तो हमारे मार्ग में कोई अड़चन नहीं है।" वास्तव में हम एक ठोस पृथ्वी पर खड़े हुए हैं। एक गुणवान पुरुष का सुख एक कपटी पुरुष के सुख से क्यों अच्छा है? यह इस लिये कि गुण मनुष्य के लिए प्राकृतिक है और अवगुण अप्राकृतिक। प्रकृति ने मनुष्य को गुणी होने के लिये बनाया है। जैसा हम ऊपर कह चुके हैं, डाण्टे (Dante) का कहना था कि परमात्मा ने

अन्य जीवों की अपेक्षा मनुष्य को अपने स्वभाव का अधिकाँश दे दिया है। ग्रोशियस (Grotius) ने कहा था कि मनुष्य परमात्मा का सबसे अधिक प्यारा जीव है। जब हम अच्छे से अच्छा होने का प्रयत्न करते हैं, तो हम सत्य पुरुष है। जब हमें भलाई और बुराई का ख़याल नही रहता, तो हम सत्य पुरुष के पद के योग्य नहीं रहे।

शुद्ध अन्तः करण के अतिरिक्त जीवन मे केवल एक अधिक सुख है; वह है उस आत्मा का सुख, जो कि आत्मिक पूर्णता की प्राप्ति के लिए भरपूर प्रयत्न कर रही है। दुख में आशीर्वाद उन चिन्ताओं और निराशाओं मे आशीर्वाद है, जो हमें सन्तुष्टि के लिये जगत को देखने के लिये औषधि है। बुरा जीवन व्यतीत करने वाला मनुष्य सुखी नही है, परन्तु जब वह दुःख में मारा जाता है और बुराई में विश्वास खो देता है, तो वह सुखी है। वह सुखी है क्यों कि अब आशा है कि उसके नेत्र सत्य सुख को देख सकें।

अपना कर्त्तव्य पालन करने वाले मनुष्य को तेजोमय पारितोषिक

ईसा ने पूछा था कि यदि मनुष्य अपनी आत्मा खो दे और सम्पूर्ण जगत का शासन पाले, तो उसको क्या लाभ होगा ?

परन्तु अब हमें ज्ञान होने लगा है कि गुण से सुख और आनन्द मिलता है और अवगुण से दुख मिलता है। जब हम

बुरे पुरुषों को ऐश आराम करते हुये देखते हैं और यह समझते हैं कि उनके पास सुख की सामग्री मौजूद है तो हमें धोखा नहीं होता। हमें उनसे ईर्षा नहीं होती। हमें उन पर दुख होता है। हम जानते हैं कि जीवन के प्रति दिन वे सुख खो रहे हैं कि उनका सुख असत्य है, कि वे जीवन की उन तमाम वस्तुओं को भूले जारहे हैं जो मनुष्य की आत्मा को अविनाशी सुख देती है।

गुण के इन परितोषिकों में यह निश्चय रूप से सबसे बडा है कि गुण का प्रेमी मनुष्य यह जानता है कि वह उन्नति कर रहा है और उसके सुख में दिन प्रति दिन वृद्धि हो रही है। वह न तो कभी थकता है और न उसे कभी भ्रम होता है। क्यों? क्योंकि वह प्रकृति के कानूनों की आज्ञा पालन कर रहा है। वह एक मनुष्य बन रहा है और इसलिये गुणवान बन रहा है।

इक्कीसवां अध्याय

वृद्धि

जब मनुष्य ने वस्तुओं को वर्णन करने के लिए शब्द बनाने आरम्भ किये, तो उसे यह भी ज्ञात हुआ कि उन शब्दों का वर्णन करने के लिए भी अन्य शब्दों की आवश्यकता होगी। प्रथम श्रेणी के शब्द संज्ञा थे; और दूसरी के विशेषण थे।

अब यह जानना भी लाभदायक था कि एक संज्ञा का भी

वर्णन हो सकता था और केवल यह कहने की अपेक्षा कि "मैंने एक मनुष्य देखा", हम उस मनुष्य का भी वर्णन कर सकते थे, इस प्रकार—"मैंने एक लम्बा मनुष्य देखा" अथवा 'मैंने एक बलवान मनुष्य देखा" अथवा "मैंने एक दयालु मनुष्य देखा।" परन्तु यह आगे आने वाले के सन्मुख कुछ भी न था। जैसे २ समय व्यतीत होता गया और मनुष्य जाति ने नये २ शब्द अविष्कार किये, तब यह ज्ञात हुआ कि उन शब्दों का वर्णन करने के लिए भी विशेषणों की आवश्यकता थी, जिनको उनके पूर्वजों ने अनेक शताब्दियों से बिना विशेषण के प्रयोग किया था।

मनुष्य के मस्तिष्क की विचित्रता स्पष्ट परिभाषा के लिये मनुष्य की आवश्यकता और अर्थ समझाने के लिये बढ़ती हुई अभिलाषा का कुछ अंश हम इस प्रकार देख सकते हैं यदि हम बुद्धि शब्द पर तनिक विचार करें।

जब हमारे पूर्वजों ने कहा था कि अमुक मनुष्य बुद्धिमान था तो उनका विचार था कि मनुष्य के चरित्र में इसके विषय में उन्हें जो कुछ कहना था, वे कह चुके। बुद्धिमान का अर्थ है कार्य करने से पूर्व सोचना, कार्य का परिणाम सोचना, अभ्यासिक ज्ञान का प्रयोग। एक मूर्ख पुरुष बिना देखे हुए आगे कूदता है; एक बुद्धिमान पुरुष देखने के पश्चात् कूदता है या देखने के पश्चात् कूदता ही नहीं है।

उस काल में बुद्धि शब्द के सम्बन्ध में किसी को कोई सन्देह न था। यह एक सद्गुण था। उसकी पूजा करने के लिये किसी विशेषण की आवश्यकता न थी। कहावतों के एक लेखक ने कहा है कि "बुद्धिमान पुरुष अपने मार्ग को भलि भांति देख लेता है।" प्रत्येक मनुष्य इसे समझ सकता है।

ईसा ने एक बुद्धिमान पुरुष के विषय में एक कहानी कही है जिसे सुनकर कहावत के उस लेखक को भी आश्चर्य होगा। उसने एक मनुष्य के विषय मे कहा, जो इतना बुद्धिमान था और इतनी दूर की सोचता था कि उसने कई वर्ष भूख, इच्छा और परिश्रम को अपने अधिकार मे रक्खा। बुद्धि इससे अधिक काम नहीं कर सकती। यह सबसे अधिक बुद्धिमान मनुष्य अपनी आत्मा से यह भी कह सकता था कि "आराम करो, अधिक परिश्रम न करो क्योंकि अब खलियान मे अन्न की कमी नहीं है और अकाल में भी उसे सहायता की आवश्यकता न पडेगी।" परन्तु ईसा ने उस बुद्धिमान पुरुष से कहा 'तू मूर्ख है'

उस दिन से इस शब्द बुद्धि का सदैव विशेषण के रूप मे प्रयोग किया है। यदि हम एक पुस्तक में पढ़े कि "वह एक बुद्धिमान पुरुष था।" तो हम निश्चय रूप से नहीं कह सकते कि लेखक अपने पात्र की प्रशंसा कर रहा है अथवा उसका मजाक उडा रहा है। साधारण बोलचाल में बुद्धि अब भी एक गुण है परन्तु एक विशेष प्रकार की बुद्धि ही। मानलो कि हम एक समाचार पत्र में पढे कि एक मनुष्य नदी के किनारे खड़ा

हुआ देखता रहा कि एक बच्चा डूब रहा था क्योंकि वह मनुष्य तैरना नहीं जानता था। क्या हम यह विचार कर सकते है कि इस अपमानित डरपोकपने से उसकी बुद्धि ने उसे बचा दिया क्या यह मनुष्य का स्वभाव नहीं है कि खतरे मे पड़े हुए किसी भी मनुष्य की वह रक्षा करे, चाहे हम जानते ही हो कि वह घृणित और अयोग्य है ?

मनुष्य में अलौकिकता अमरता सिद्ध करती है

हमारे स्वभाव मे आत्म बलिदान का अंश ही हमारी अलौकिकता का मुख्य चिह्न है। हमारे अन्दर अलौकिकता का कुछ अंश तो अवश्य ही है। हम पशुओं से बहुत मिलते जुलते हैं किन्तु पशु नहीं है। अनेक दुष्ट मनुष्यों का व्यवहार पशुओं से भी नीच होता है परन्तु अच्छे मनुष्यों का व्यवहार पशुओं से कहीं अच्छा होता है।

अब, मनुष्य के स्वभाव में यह अलौकिक अंश ही था, जिसको ईसा (Jesus christ) ने मानुषिक अमरता का प्रमाण बतलाया था। बुद्धि का कल्पित गुण विशेष कर उसे अति घृणित प्रतीत होता था। एक बुद्धिमान पुरुष ? मनुष्यों में सबसे अधिक मूर्ख को देखो। एक धनहीन पुरुष का विचार करो और एक धनवान का। धनवान का यही विचार है कि "आत्मा वर्षों के परिश्रम के पश्चात् अब बहुत धन सञ्चित होगया है; विश्राम करो, खावो, पीवो और प्रसन्न रहो।" ऐ मूर्ख ! इसी रात्रि को तेरी आत्मा तुझ से मांगली जावेगी।

एक ही क्षण में हमें ज्ञात होगया कि ज्ञानी बुद्धि और मूर्ख बुद्धि मे क्या भेद है। अपने आप को पशु विचार करो, और हमारी सम्पूर्ण बुद्धि मूर्खता में परिणित होजावेगी। परन्तु अपने आपको आत्मा के रूप में विचार करो और हमारी सम्पूर्ण बुद्धि ज्ञानता में परिणित होजावेगी।

महाव्ययकारी पुत्र की नाशक अज्ञानता

मान लो एक ऐसे मनुष्य ने जिसने कई वर्षों से भूख और इच्छा की इन्द्रियों को अपने वश में रक्खा हो, अपनी आत्मा से कहा होता कि "आत्मा अब तुझे भौमिक आवश्यकताओं की कोई आवश्यकता नहीं है; इस अवकाश को ज्ञान प्राप्ति मे काम लाओ, निर्धनों की सहायता करो, मूर्खों को बुद्धि दो, रोगियों को सान्त्वनादो, निर्दयता, दुख और बुराई का विरोध करो, तो उसकी बुद्धि कितनी भिन्न होती। परन्तु उसने अपने आपको केवल एक पशु ही समझा जिसका यह परिणाम हुआ कि परमात्मा ने उससे कहा "तू मूर्ख !"

उस महाव्ययकारी पुत्र की कथा इस विषय पर और भी प्रकाश डालती है। इस महाव्ययकारी मनुष्य ने वही कार्य किया, जो उस धनी मूर्ख ने नहीं किया। उसने अपना रुपया पानी मे बहा दिया; वह भविष्य के सोचने के विचार पर हँसता था, उसने यह कभी विचार नही किया कि उसकी अज्ञानता उसे कहां ले जावेगी। तो क्या वह एक ज्ञानी मनुष्य

था ? क्या उसकी अबुद्धि, धनी मूर्ख की बुद्धि से इतनी भिन्न थी ? नहीं, क्यों कि वह भी अपने आपको एक पशु की भांति समझता था। धनी मूर्ख में बुद्धि न थी, परन्तु यही दशा इस महान्ययकारी की थी, जिसने इसका विरोध किया। वह मुख्य-कर इस लिये मूर्ख था कि उसने आत्मा की कोई चिन्ता न की।

अनेक पुरुषों का विचार है कि बुद्धिमान होने का सबसे अच्छा साधन अपना सम्पूर्ण धन बाँट देना है, अपने गृहस्थ को उसके ऊपर ही छोड़ देना है और आनेवाले जगत का ध्यान करने में अपना समय व्यतीत करना है। परन्तु यह बुद्धि स्वार्थ से भरी हुई है। यह पशु की प्राकृतिक स्वार्थता नहीं है किन्तु आत्मा की अप्राकृतिक स्वार्थता। यह उस आत्मा की स्वार्थता है जिसको केवल अपना ही विचार है और जो केवल अपना ही विचार करती है। वह आत्मा ही नहीं है। आत्मिक जीवन का केन्द्र ही निःस्वार्थता है। ईसा का उपदेश था कि परमात्मा का प्रेम मनुष्य के प्रेम द्वारा अर्थात उसकी सेवा से ही प्रकट हो सकता है।

प्राचीन यूनान का एक अच्छा नागरिक बुद्धिमान था

यह कहा गया है कि यथार्थ और असत्य में भेद करने के लिये प्लेटो (Plato) का खयाल था कि एक मनुष्य को न्याय के हेतु सब प्रकार के दुःख सहन करने चाहिये चाहे उसका

अपमान हो और चाहे उसे मृत्यु का ही सामना क्यों न करना पड़े; परन्तु चाहे यह बुरा ही हो, उसका मत था कि अन्याय द्वारा जीवन में उन्नति करना भी बुरा है। इस मत का मूल्य जब पता लगता है जबकि प्लेटो (Plato) अमरता का विचार नहीं कर रहा था। उसने यह तो नहीं कहा कि "तुम्हारे अपमान, दुःख और मृत्यु के सहन करने से क्या होता है?—क्या तुम एक अमर आत्मा नहीं हो और जब तुम स्वर्ग की वायु का सेवन करते हो, तो क्या ये दुःख अति तुच्छ नहीं प्रतीत होते?" नहीं, उसने कहा था कि अपमान, क्लेश और मृत्यु बहुत बड़ी बुराइयां हैं। परन्तु उनसे भी बड़ी एक बुराई है—अपराधी अन्तः करण होते हुए फलते फूलते जीवन व्यतीत करना। इस पृथ्वी पर भी हमारे मस्तिष्क में अमरता का कोई विचार न होते हुये, अन्तः करण शान्ति की आत्मा को धोखा दे सकता है। प्लेटो का विचार था कि मनुष्य के अन्दर एक ऐसी वस्तु है, जो एक अपराधी अन्तः करण में निवास नहीं कर सकती।

यूनानी, और विशेषकर अरस्तू (Aristotle) बुद्धि को एक महान गुण समझते थे। बुद्धिमान मनुष्य अच्छा नगर निवासी समझा जाता था। मनुष्य के लिए अभ्यास करने वाली सबसे अच्छी वस्तु बुद्धि थी। ईसा (Jesus christ) के अतिरिक्त अरस्तू (aristotle) की अपेक्षा किसी ने भी अधिक स्पष्ट रूप में से यह ज्ञात नहीं किया कि सांसारिक ज्ञान एक घृणित वस्तु है। जब अरस्तू (aristotle) ने बुद्धिमान

मनुष्य के विषय में कहा तो उसका तात्पर्य एक ऐसे मनुष्य से था जो जिसे यथार्थता से प्रेम हो, जो जगत की बनावट और दिखावट से धोखा न खा जावे किन्तु "अपरिवर्तित नियमों के ऊपर निर्भर रहने वाले यथार्थता के उन अंशों से अपना सम्बन्ध रक्खे।

एक सरल शब्द का आक्रमण व रहस्य

दो सहस्र वर्ष व्यतीत हुये, जगत के महान पुरुषों का हठ था कि सांसारिक और अविनाशी वस्तुओं में भेद का ज्ञान ही यथार्थ ज्ञान था। अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए और इसी पृथ्वी पर उन्होंने यह उपदेश दिया कि मनुष्य को अविनाशी वस्तुओं के सम्बन्ध में भी विचार करना चाहिये। प्लेटो (Plato) ने मनुष्य को किसी मनोहर स्वर्ग की आशा न दिखलाई थी। अरस्तू (Aristotle) ने तो निश्चय पूर्वक कह भी दिया था कि मनुष्य की आत्मा के लिए कोई स्वर्ग नहीं है, फिर भी उसका और प्लेटो (Plato) का विचार था कि यदि मनुष्य अपना जीवन सद्गुण के महिमा शाली साम्राज्य के बाहर व्यतीत करे तो उसकी आत्मा के लिए कोई यथार्थ सुख न था। बुद्धि से दोनों का तात्पर्य था सत्य का प्रेम और यथार्थता के लिए अभिलाषा।

बुद्धि के अतिरिक्त हमारी मानुषिक भाषा में ऐसे बहुत थोड़े से शब्द हैं जो हमें इस सृष्टि के रहस्य को हल करने में सहायता

दे सके। चारों ओर से यह हमारे ऊपर आक्रमण करता है। बालू पर मकान बनाने वाला मनुष्य मूर्ख था, फिर भी वह मनुष्य बुद्धिमान नहीं था जिसने भविष्य के लिए अन्न का प्रबन्ध कर लिया था—परन्तु हां एक चट्टान के ऊपर मकान बनाने वाला मनुष्य बुद्धिमान था।

मानलो स्कूल में एक लड़के ने अपनी पाठ्य पुस्तकों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया क्योंकि उसका विश्वास था कि परमात्मा उसकी सहायता करेगा और खेलों में भाग लेना ज्ञान प्राप्ति की अपेक्षा अधिक प्राकृतिक था। हम यही कहेंगे कि उसने बुद्धि से काम नहीं लिया। परन्तु मानलो एक दूसरा लड़का खेल और व्यायाम में कोई भाग नहीं लेता था, स्नान मे अपना अमूल्य समय व्यय न करता था परन्तु प्रातःकाल दिन व रात्रि में सम्पूर्ण पारितोषिक और वजीफे के लिये वह काम करता था, हमें उसके विषय में क्या विचार करना चाहिये? हम यही कहेंगे कि उसने भी बुद्धि से काम नहीं लिया।

पशु की भांति जीवन व्यतीत करने वाला मनुष्य बुद्धिमान नहीं हो सकता

हमें एक ऐसे लड़के को देखना चाहिए जो पढने में भी परिश्रमी हो और खेलने में भी, जिसको छात्रवृत्ति मिलने की आशा हो और यद्यपि उसे एक दिन डाक्टर या वकील बनजाने की पूर्ण आशा हो, उसका मुख्य सुख इसी विचार मे हो कि

वह अपने ज्ञान में वृद्धि कर रहा है और जीवन के आनन्द का क्षेत्र बढा रहा है; हमें एक ऐसे लड़के को देखना चाहिये और उसी के विषय में हम कह सकते हैं कि उसने बुद्धि का अर्थ सही रूप में समझ लिया।

परन्तु इस शब्द का महान आक्रमण इस बात में है कि वह हममें से प्रत्येक को हमारे यथार्थ जीवन के विषय में बतला देता है। इसके लिये हमें धोखा देना भी यथेष्ट सुगम है। अनेक मनुष्यों को अपनी आत्माओं के विषय मे कभी सत्य ज्ञात ही नहीं होता। परन्तु बुद्धि को उनसे पूँछने दो कि "तुम मेरी परिभाषा किस प्रकार करोगे?" और उन्हें उसी क्षण ज्ञान होजावेगा कि वे लौकिक वस्तुओं के लिए जीवन व्यतीत कर रहे हैं या अविनाशी वस्तुओं के लिये। बुद्धि क्या है? इस प्रश्न का उत्तर देने पर तुम्हें ठीक ठीक ज्ञात होजावेगा कि तुम अपने आपको एक आत्मा के रूप में विश्वास करते हो अथवा केवल एक पशु की भांति।

और इस साधारण शब्द के महान आक्रमण से यह ज्ञात हो जावेगा कि पशु की भांति जीवन व्यतीत करने वाला मनुष्य बुद्धिमान नहीं हो सकता। यह क्यों? हम क्यों यह बार २ पुकारते हैं "तू मूर्ख", जब हम उन धनाढ्य और सफल मनुष्यों के विषय में सुनते हैं जिन्हें अन्तःकरण के सौन्दर्य, गुण और निर्मलता का कुछ ज्ञान ही नहीं है? हमारे स्वभाव में एक ऐसी वस्तु है जो प्लेटो और अरस्तु से सहमत है। यह क्योंकर

सम्भव है यदि हम इस सृष्टि को उल्लू, मक्खी, तोते जैसे पक्षियों से अधिक लाभ नहीं पहुँचा सकते ?

ईसाई धर्म-जीवन की एक महान यथार्थता

जगत में कुछ मनुष्यों का खयाल है कि प्लेटो (Plato) के विचार और ईसा (Jesus Christ) का धर्म केवल पवित्र भावों से भरे हुए हैं। ऐसे मनुष्य इतिहास और मनुष्य जीवन से अनभिज्ञ हैं। इतिहास से सिद्ध होता है कि वह राष्ट्र, जो पशुशक्ति और पशु आनन्द के लिए जीवन व्यतीत करता है, शीघ्र ही नष्ट होजाता है, और आत्म जीवनी से सिद्ध होता है कि प्रत्येक पुरुष और प्रत्येक स्त्री, जो एक पशु की भांति जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, अन्त में वृद्धावस्था में वहुत दुखीः रहता है।

यह सांसारिक अनुभव है। प्रत्येक देश का साहित्य इसका साक्षी है। धर्म एक स्वप्न नहीं है, आशा नहीं है, झूठा विश्वास नहीं है। यह एक वहुत प्राचीन काल के दुख भरे अनुभव का फल है। मनुष्य अपने अन्तकाल तक जब ही सुखी और शान्त रह सकता है जबकि वह एक पशु की भांति समय वृथा न करते हुए ज्ञान और प्रेम की वृद्धि में शुद्ध आत्मा से भरपूर प्रयत्न करें।

एक बात बुद्धि के विशय में हम निश्चय रूप से कह सकते हैं। हमारे अन्दर उसका मुख्य चिह्न है " अर्द्ध रात्रि का सङ्गीत—एक शुद्ध अन्तःकरण।

अध्याय बाईसवाँ

दूरदृष्टि (Provndenee)

प्रत्येक जीवित वस्तु अनेक भिन्न २ वस्तुओं से मिलकर बनी है और ये सब वस्तुएँ एक दूसरे से बहुत भिन्न हैं। फिर भी, जैसा कि एक वैज्ञानिक ने हमें बतलाया है, ये भिन्न २ अंश अपने ठीक स्थान पर स्थिर हैं और ठीक समय पर Cells के अन्दर बढ़ते रहते हैं।

ये दो शब्द "ठीक स्थान" और 'ठीक समय' हमारे विचार के करने के साधन है। ठीक स्थान क्या है? और ठीक समय क्या है?

एक क्षण के लिये बारहसिंगे के सींगों पर विचार करें एक प्रोफेसर ने हमें बताया है, जिन्होंने इन सुन्दर जीवों का विशेष अध्ययन किया है, कि एक मृग के सींगों की अपेक्षा इतनी शीघ्र और तीक्ष्ण वृद्धि किसी जीव में नहीं पाई जाती।

बसन्त ऋतु में जब वे बढ़ते होते हैं प्रोफेसर साहब का कहना है यदि हम उसके सींगों पर हाथ रखदे तो हमे ज्ञात होगा कि वह खून के बहने के कारण बहुत गरम है।

अब, जैसे मृग के सींग विचित्र हैं, जैसे Cells को यह ज्ञान होना कि कब शाखा निकलेगी विचित्र है वे एक पक्ष के पर अथवा तितली के पङ्ख के सामने एक बच्चे का खेल है। एक अंग्रेज महान पदार्थ शास्त्रज्ञ एल्फ्रैड रसल वैलेस (Alfred

Russel Wallace) इन आश्चर्य से भरे हुए जीवों में मे बातचीत करने या उनके विषय में लिखने से कभी थकता न था वह एक नील कण्ठ के पङ्ख हाथ पर ले लेता था या एक मोर के पर और उनके ऊपर रङ्गों की गहराई का मधुर स्वर में वर्णन करता था और अन्त में यह कहते हुए मुस्करा देता था कि "यह सब कुछ पृथक २ (Cells) द्वारा कार्य अथवा रक्त द्वारा किया हुआ कार्य है।"

किस प्रकार ये छोटी छोटी थैलियां ठीक स्थान और ठीक समय जानती है कि अब हरा रङ्ग या नारङ्गी रङ्ग या नीला रङ्ग पङ्खों पर लगना चाहिये ? एक चिड़िया के पर और एक तितली के पङ्ख एक ही प्रकार के रङ्गों से क्यों नहीं रङ्गे हुए हैं ? यह क्यों कर है कि उसमें एक बनावट है और एक रङ्ग दूसरे के ऊपर लगा हुआ है ? अथवा यह क्यों कर है कि प्राणियों के नेडा सदैव ठीक स्थान पर और ठीक समय पर दिखलाई देते हैं ? यह क्यों कर है कि प्रत्येक जीवित वस्तु इतनी दोष हीन है कि प्रकृति में कहीं भी इस नियम का विरोध नहीं पाया जाता ? क्या हमें नहीं कहना पड़ेगा कि एक अदृश मार्ग दर्शक है और वह परमात्मा की कृपा है ?

यह शब्द (Providence) हमें जीवन की प्रत्येक सीढ़ी पर मिलता है। इसका अर्थ है दूर दृष्टि अथवा सामयिक चिन्ता और उपयुक्ति। कुछ मनुष्य "प्रकृति की दूर दृष्टि" के विषय में कहते हैं और कुछ मनुष्य "परमेश्वर की दूर दृष्टि" के विषय

में। एक समय इन दोनों प्रकार के मनुष्यों में मुठभेड़ हो गई थी। उनमें से एक ने इस शब्द दूरदृष्टि का इस प्रकार प्रयोग किया मानो उसका अर्थ घटना या अवसर से अधिक न था; दूसरे ने मानों परमात्मा ने स्वयं ही तितली के पङ्ख रङ्गे थे और चिड़ियों के खाने के लिये स्वयं वस्तुएँ बनाई थीं। अब कोई भी मनुष्य इन दोनों में से एक भी मत का अनुसरण नहीं करते। इस सरल और सुन्दर शब्द के अधिक मानी और विचित्र अर्थ है।

एक वर्तमान महान वैज्ञानिक ने इस शब्द का अर्थ और भी स्पष्ट कर दिया है। उसका कहना है कि मानलो देहली और कलकत्ते के बीच में रेल की पटरी पड़ी हुई है। वहां पटरी पड़ी हुई हम सबको दिखाई देती है और यह भी स्पष्ट है कि वह कुछ कार्य नहीं कर रही है। वह बिल्कुल शान्त पड़ी हुई है। जैसे भोजन शाला में लगी हुई एक खूँटी खाना नहीं बना सकती, उस प्रकार यह पटरी किसी मनुष्य को देहली से कलकत्ते नहीं ले जाती। यह बलहीन है। उसमें प्राण नहीं हैं। परन्तु एक इञ्जिन अनेक डिब्बों को लिए हुए सुगमता से इन्हीं पटरियों के कारण चला जाता है। इस इञ्जिन को लाईन से बाहर होने दो और फिर देखो क्या होता है?

प्रकृति का अविनाशी कानून, जिससे कोयल गान करती है

हम देखते हैं कि इस विचार से दूरदृष्टि का अर्थ और भी

सरल हो जाता है। प्रत्येक प्राणी इस जगत में अपना कानून लेकर जन्म लेता है। एक कोयल का जन्म गाने के लिये, उड़ने के लिये, अपना घोंसला बनाने के लिये और एक विशेप प्रकार से अण्डे देने के लिए होता है। उसकी चोंच एक ब्लैक बर्ड (Black bird) की भांति पीली नहीं होती या उसका गाना रोबिन (Robin) की भांति नहीं होता या वह एक बाज के समान नहीं उड़ सकती; न वह एक किङ्ग फिशर (King fisher) की भांति घोंसला बना सकती है। इस प्रकार से कोई भी कार्य करना अपने कानून का विरोध करना है। अपने परमात्मा को अस्वीकार करना है।

इसके विषय में प्रत्येक पुरुष सहमत है। किसी भी मनुष्य को जो प्राकृतिक इतिहास की बातों से भली भांति परिचित है और तत्व शास्त्र के लेख प्रमाणों से भी भली भांति उतनी ही अच्छी तरह परिचित है, इसमें सन्देह न होगा कि प्रकृति में यह आयोजन है—प्राणी के जीवन को चलाने वाला कानून और हमारी सुन्दर पृथ्वी का चरित्र।

परन्तु अब भी इस शब्द के विषय मे मत भेद है। अभी अन्तिम निश्चय नहीं हुआ है। कुछ मनुष्यों का कहना है कि प्राकृतिक कानून सदैव वही रहता है और चाहे हम ईश्वर के विषय में कहे या प्राकृतिक के, उसमें कोई अन्तर नहीं, उनका विश्वास है कि मनुष्य का कहना और करना इस कानून में कोई परिवर्तन नहीं कर सकता।

अब दूसरे पुरुष स्वतन्त्रता पूर्वक यह नहीं कहते कि हम प्रकृति के कानूनों को तोड़ सकते हैं। उनका यह कहना नहीं है कि प्राकृतिक कानून सनक का परिणाम है या वे बे तरकीब काम करते हैं। वे दूसरे मनुष्यों के साथ इस बात में सहमत हैं कि परमात्मा की सृष्टि में सब वस्तुएँ एक विशेष कानून के अधिकार में हैं। परन्तु वे अपने विरोधियों से कहते हैं कि "तुम्हारा यह ख्याल है कि तुमने प्रकृति के सब कानून ज्ञात कर लिये हैं। तुम्हारा तात्पर्य है कि प्राकृतिक कानून के साम्राज्य में मनुष्य को और कुछ ज्ञात करना नहीं है। यहां पर हमारे और तुम्हारे बीच में अन्तर है, क्योंकि हमारा ख्याल है कि अभी इस कानून के साम्राज्य में अनेक रहस्य हल करने हैं, हम उन्हें निरुपण करने का प्रयत्न करते हैं।

प्रार्थना से ऐसे कार्य सम्भव है जिनका हमें स्वप्न में भी ध्यान नहीं हैं।

हम शीघ्र ही निश्चय कर सकते हैं कि इन दोनों मतों में से कौनसा सत्य है और कौनसा असत्य। एक मनुष्य जिसने शराब अधिक माप में पीकर अपने रक्त को विषैला बना दिया है, एक वैज्ञानिक के पास औषधि लेने जाता है। वैज्ञानिक कहते हैं कि वे अब कुछ नहीं कर सकते। शराबी के जीवन में एक ऐसा समय है जब कि डाक्टरी विज्ञान का सम्पूर्ण ज्ञान कुछ भी नहीं कर सकता। तो उस पागल पुरुष से यही कहा जाता

है कि प्राकृतिक कानून के अनुसार उसे एक शराबी की कब्र में अवश्य ही जाना पड़ेगा।

परन्तु डाक्टरों से मिलने के पश्चात् तुरन्त ही उसकी भेंट एक नम्र और सम्भव है अशिक्षित पुरुष से होती है, जिसे प्रार्थना की शक्ति में विश्वास है। यह मनुष्य उस शराबी से प्रेरणा करता है कि वह परमात्मा से प्रार्थना करे कि वह सर्व शक्तिमान उसे यथेष्ट शक्ति प्रदान करे जिससे उसकी शराब पीने की बान छूट जावे। निराश होकर यह विचारा शराबी घुटने टेक कर अपनी आत्मा परमात्मा के सामने रखते हुए दया और क्षमा के लिये प्रार्थना करता है। उठ कर उसे शराब से घृणा हो जाती है और इतनी घृणा हो जाती है कि उसकी गन्ध नाक में जाते ही उसे रोगी बना देती है।

एक महान व्यक्ति की प्रकाश और अधिक प्रकाश के लिये प्रार्थना

यह विचित्र परिवर्तन जगत भर में प्रत्येक राष्ट्र में और प्रत्येक जाति में हो रहा है। थोड़ा ही काल व्यतीत हुआ जब मनुष्य ऐसे परिवर्तनों को चमत्कार कह कर पुकारते थे। विज्ञान ने ऐसी बातों पर ध्यान देना छोड़ दिया था, परन्तु अब विज्ञान का ऐसी घटनाओं में विशेष ध्यान है। और उनको चमत्कार कह कर नहीं पुकारती परन्तु एक अज्ञान कानून के कार्य के उदाहरण के रूप में परीक्षा करती है।

जितना अधिक हम विश्वास करें कि यह सब कानून है, इसका यह तात्पर्य नहीं है कि हम इतने मूर्ख हैं कि हम यह मान लें कि हम परमात्मा के सब कानून समझते हैं ! यह परमात्मा के कानून के ही कारण है कि हम मनुष्य वायुयान में उड़ते हैं यदि वह उन कानूनों की आज्ञा का पालन नहीं करता, तो वह नहीं उड़ सकता था। परन्तु वह उड़ाका कहां है, जिसका यह विचार है कि वह उड़ने के कानून जानता है ? जैसे सहस्रों वर्ष से मनुष्य ने यह कभी विचार भी न किया था कि वे उड़ सकेंगे इसीलिये शायद सैकड़ों वर्षों तक हम भारी और भयंकर मशीनों में उड़ सकेंगे और फिर एक दिन एक मनुष्य इससे भी उच्च उड़ने के कानून निरूपण करेगा, मशीनें सरल बनादी जावेंगी और हम बिना भय के और बिना प्रयत्न के उड़ सकेंगे। परन्तु मनुष्य चाहे उड़ सके उनका उड़ना सदैव कानून के अधिकार में रहेगा । यदि हम कानूनों पर निर्भर नहीं रह सकते, तो सम्पूर्ण विज्ञान असम्भव हो जावे। यदि हाइड्रोजन (Hydrogen) और आक्सीजन (Oxygen) मिल कर कभी पानी बनादें और कभी प्रूसिक एसिड (Prussic Acid) तो कोई रसायन विद्या ही न रहेगी। यदि आकर्षण शक्ति के कानून असत्य हो जावें तो पदार्थ शास्त्र ही निराशा-जनक हो जावे, तो हम चाय का एक बण्डल भी ठीक तरह न तोल सकते।

परमात्मा की कृपा में विश्वास रखने वाले सुखी हैं और

कानून का अनुसरण करते हुए प्रकाश, अधिक प्रकाश के लिए हार्दिक विनती करने वाले के समान कोई भी मनुष्य सुखी नहीं है।

वह इस ज्ञान के कारण सुखी है कि उसका जीवन योग्य और उचित कानूनों के अधिकार में है क्योंकि वह ज्ञान उसे बतलाता है कि वे उन ज्ञानी और सहायक कानूनों का निर्माता भी अवश्य ज्ञानी व सहायक होगा।

मनुष्य का असभ्यता से कूच होने की महिमा व आश्चर्य

एक ऐसा पुरुष परमेश्वर की कृपा को अपने जीवन में एक अड़चन नहीं समझता। वह जानता है कि यदि वह कोई विषैली वस्तु पीले तो परमेश्वर की कृपा उसे मृत्यु के फन्दे में से न छुड़ा सकेगी। वह जानता है कि यदि वह अपना हाथ अग्नि में दे दे तो वह जल जावेगा। परन्तु उसका यह कहना नहीं है कि परमात्मा की कृपा कोई वस्तु है ही नहीं। वह यह भी नहीं कहता कि विषैली वस्तु पीने से मनुष्य सदैव ही मृत्यु की भेंट हो जायगा अथवा अग्नि मे देने से हाथ अवश्य सदैव ही जल जाया करेगा। इन परिणामों को रोकने में परमेश्वर की कृपा तनिक भी सहायता न देगी परन्तु सम्भव है किसी दिन मनुष्य परमेश्वर का ऐसा उच्च कानून निरूपण कर ले, जिससे विष और अग्नि का उस पर कोई प्रभाव न पड़े। ईथर

करोड़ों वर्ष से था किन्तु मनुष्य ने एक दिन उसकी सहायता से ऐसे ऐसे विचित्र कार्य कर डाले, जिनको जङ्गली मनुष्य असम्भव समझते थे।

परमात्मा में विश्वास के इस विचार का महान मूल्य दो दिशाओं में देखना चाहिये।

प्रथम, इस विचार से कृतज्ञता प्रगट होती है। इन विचारों के आधार पर एक मनुष्य इस प्रकार बात नहीं कर सकता मानो वह सृष्टि का निर्माता हो। यह हमको असभ्य व्यवहार से बचाने सहायता करता है। हम अपने आप को एक ऐसी अलौकिक शक्ति का ऋणी समझते जिसने हमें जीवन प्रदान किया है और उसको ऐसे कानूनों के अधिकार में रक्खा है जिन्हें हम भली प्रकार समझ सकते हैं। हमें इस विश्वास से प्रेम है। प्रकृति में उसके चमत्कारिक कार्यों का हम अध्ययन करते हैं। हम उसकी महिमा पर, उसकी निर्मलता पर, सौंदर्य पर उसके प्रेम पर विचार करते है, और हम उस पर उत्तर देते हैं और उसको परमपिता मानते हैं, उसको एक ऐसे प्रेम की भांति समझते हैं, जो सम्पूर्ण सृष्टि में उत्तेजक है।

इस विश्वास पर विश्वास रखते हुये भी, हम इसके समझने का प्रयत्न करते हैं। जितने अधिक हम चतुर हैं, उतना ही अधिक हम यह सोचते हैं कि जीवन का यही मुख्य ध्येय है। सृष्टि के निर्माता को समझने का और यहां तक कि उसके साथ सहयोग करने का भी, यह एक अपूर्व अवसर है।

अलौकिक श्वास-जगत में एक महान यथार्थता

परमात्मा में विश्वास की यह भावना हमें ऐसी भूलें करने से बचाती है, जो अठारवीं शताब्दि के कुछ विचारज्ञों ने की। उन मनुष्यों ने परमात्मा के होने को अस्वीकार नहीं किया, परन्तु उन्होंने परमात्मा को एक अपार दूरी पर फेंक दिया था जिसके फलस्वरूप मनुष्य के जीवन पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। इस तत्वशास्त्र ने जिसे वेदान्त कहते हैं, विश्व में बहुत हानि पहुँचाई। इसने मनुष्य को अहङ्कारी, अप्रेमी, वृथाभिमानी, सांसारिक और मूर्ख बना दिया। परन्तु 'आस्तिक मत' नामी तत्वशास्त्र ने इसका नाम ही मिटा दिया, जिसके अनुसार परमात्मा केवल सृष्टि का निर्माता ही नहीं है किन्तु जगत का शासनकर्त्ता भी है।

इस शब्द के सम्बन्ध में एक सत्य सम्मति से मस्तिष्क को इसका अर्थ और भी स्पष्ट हो जाता है। यह हमें अन्त तक जाने से रोकता है। सृष्टिकर्ता को उन तमाम कानूनों का मूल समझ कर ध्यान में लाओ जो तारे, सूर्य्य और प्रत्येक जीवित प्राणी पर अधिकार किये हुए हैं। उसको एक ऐसी शक्ति के प्रकाश में विचार करो, जिसने तुम्हारे शरीर की संरक्षता के हेतु क़ानून बना दिये हैं। उसको एक ऐसी विचित्र पद्धति के निर्माता के प्रकाश में विचार करो, जिसको हम आकाश में और वर्ष की ऋतुओं में देखते हैं। इन सब आकारों में उस महान शक्ति का

विचार करो यद्यपि हम इसको उन भयानक परिणामों का निर्माता भी समझेंगे, जो उस महान शक्ति के क़ानूनों को तोड़ने से होते हैं।

हमारे चारों ओर प्रेमी और धैर्यवान शक्ति

यह कदापि विचार नहीं करना चाहिये कि परमेश्वर दण्ड भेजता है। यह कभी विचार न करो कि (वह एक मनुष्य को दुख देता है और दूसरे को सुख)। परन्तु यही विचार करो कि वह मनुष्य के सुख के लिये बनाए हुए उन क़ानूनों का कर्त्ता है, जिनका अनुसरण न करने से अवश्य ही दुःख और शोक होगा। परमात्मा में विश्वास और परमात्मा की कृपा विकास की वह शक्ति है, जो मनुष्य को अविनाशी जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करने के योग्य बना रही है। यह एक प्रेमी और अति धैर्यवान शक्ति है; परन्तु यह एक क़ानून के अनुसार कार्य करती है और यह क़ानून के अनुसार कार्य इसलिये है क्योंकि केवल इसी मार्ग का अनुसरण करते हुये, मनुष्य अपने आप को शिक्षित बना सकता है और महिमा प्राप्त करने का प्रयत्न कर सकता है।

अध्याय तेईसवां

आशा

आशा का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है उम्मीद अथवा विश्वास। परन्तु यदि हमें किसी भूल के कारण दण्ड की

आशा ? होती है तो हम हृदय से नहीं चाहते कि हमें दण्ड दिया जावे। अथवा जब हम रोगग्रस्त हो जाते हैं और वैद्य बुलाया जाता है और हमें आशा ? होती है कि एक कड़वी औषधि पीनी पड़ेगी, हम हृदय से नहीं आशा करते कि ऐसी दवा पीली जावे। नही; आशा केवल अपनी इच्छा, अपनी अभिलाषा की वस्तु को प्राप्त करने के अर्थ मे प्रयोग होती है।

जब हम कुतुबमीनार को सैर करने की तैयारी करते हैं, तो हमें आशा होती है कि ऋतु अच्छी ही रहेगी। परीक्षा मे बैठते समय हमें सफलता की आशा होती है। एक क्रिकिट के मैच में खेलते समय हमें दौड़े (Runs) बनाने की, अथवा आऊट (Out) करने की अथवा गेंद पकड़ने (Catch) की आशा होती है। जब हम युवावस्था मे प्रवेश करते हैं और किसी कार्य में लग जाते हैं, तो हमें सफलता की आशा होती है।

इस शब्द का प्रयोग कई शताब्दियों तक वैज्ञानिकों के ध्यान में बिना आये हुए होता रहा। वह केवल एक साहित्यिक शब्द था, न कि वैज्ञानिक उसका सम्बन्ध केवल जीवन के खेल और मजाक से था न कि उसकी वृत्ति से। यदि हम न्यूटन या डारविन से आशा के विषय में कुछ पूछते, तो उन्हें बहुत आश्चर्य होता। न्यूटन ने कहा होता कि "मैं तुम्हे आकर्षण शक्ति या प्रकाश की शीघ्रता के विषय में बतला सकता हूँ।" और डारविन ने कहा होता कि "मैं तुम्हें कबूतरों या

चींटों के विषय में कुछ बतला सकता हूँ।" वे दोनों मनुष्य शब्द आशा के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करने के लिये कवियों या पुजारियों के पास भेज देते।

परन्तु पिछले थोड़े वर्षों में विज्ञान में एक महान परिवर्तन हो गया है, और यदि अब हम अपना प्रश्न किसी वैज्ञानिक से पूँछे तो वह हमें मानसिक वैज्ञानिक के पास भेज देगा, जो मनुष्य के मस्तिष्क का अध्ययन करने वाला वैज्ञानिक है। और वह वैज्ञानिक हमारे प्रश्न को सुन कर किंचित मात्र भी आश्चर्य चकित न होगा। सम्भव है, वह यह कहे कि यह प्रश्न बहुत आवश्यकीय है। चाहे कुछ भी हो, वह यह अवश्य समझेगा कि यह एक ऐसा विषय है जिसमें विज्ञान को चिन्ता है।

अब तुम्हें ज्ञात हो जावेगा कि विज्ञान ने निरूपण किया है कि मस्तिष्क के सम्पूर्ण विचार प्राकृतिक तत्व हैं। इन तत्वों की परीक्षा और अध्ययन आवश्यकीय है जिस प्रकार भूगर्भ विद्या, वृक्ष शास्त्र, ज्योतिर्विज्ञान के तत्वों का अध्ययन किया जाता है। और केवल यही नहीं। इसने यह भी निरूपण किया है कि मस्तिष्क की ये भावनाएँ हमारी आरोग्यता और सुख पर माननीय प्रभाव डालती हैं। और केवल यही नहीं। इसने यह भी निरूपण किया है कि प्राचीन मनुष्य, जिसे भाग्य कहते थे, उससे डरते थे और उसे अपनी इच्छानुसार कार्य कराने का प्रयत्न करते थे, वह मनुष्य की निजी भावनाओं से न कुछ कम है न कुछ अधिक।

इस निरूपण में शब्द आशा का एक मुख्य भाग है और यह निरूपण जीवन में थोड़े काल मे हलचल मचा देगा। क्योंकि वैज्ञानिक देखते हैं कि सफल मनुष्य आशा से भरे हुए होते हैं और असफल मनुष्य निराशाजनक होते हैं।

डाक्टर, जो प्रसन्न पुरूष, आनन्द दायक पुस्तकें और आशा देता है

आधुनिक डाक्टर न केवल औषधि का ही सेवन कराता है; उसका कहना है कि रोगी को अपने चारों ओर प्रसन्न चित्त पुरूष बिठलाने चाहिये, मन को बहलाने वाली पुस्तकें पढ़नी चाहिये और निरोग होने की आशा रखनी चाहिये। उसका कहना है कि उस चिन्तित रोगी के लिये औषधि कुछ भी नहीं अथवा बहुत कम लाभ पहुंचा सकती है, जो यथार्थ में रोगी ही रहना चाहता है। इसके विरूद्ध, यदि रोगी प्रसन्न चित्त रहता है, तो डाक्टर का काम बहुत कुछ रोगी ने ही कर लिया। उसकी औषधि का मुख्य प्रयोग मनुष्यों के शरीर की ऐसी दशा बना देना है, जिससे वह प्रसन्न चित्त रहने के योग्य हो जावें। एक बार मस्तिष्क को आरोग्य अवस्था में आजाने दो और शरीर के अन्य भाग भी स्वस्थ हो जावेंगे।

मस्तिष्क के विषय में हमें इस प्रभावशाली पद को कभी न भूलना चाहिये—"आरोग्य अवस्था"। मस्तिष्क की आरोग्य दशा अथवा अवस्था क्या है? क्या हम कह सकते हैं कि उस लड़के का मस्तिष्क आरोग्य अवस्था में था, जो सदैव हम से

यही कहता रहता था कि वह जानता था कि वह परीक्षा में उत्तीर्ण होगा अथवा वह यह जानता था कि वह किसी भी खेल में प्रवीण न हो सकेगा ? क्या हम उस लड़की के मस्तिष्क को आरोग्य अवस्था में कह सकते है, जो एक कोने में पड़ी हुई अप्रसन्न रहती है, अपने साथियों से लजाती है, प्रति घण्टे भयभीत रहती है, दिन में दो बार अपनी गरमी दशा (Temperature) का माप लेती है और सदैव ही शिकायत करती है कि वह बहुत दुखी है ?

इन मूर्ख प्रश्नों से यह स्पष्ट है कि स्वस्थ मस्तिष्क होके लिए आशाजनक होना आवश्यकीय है । तनिक विचार करो कि इसका क्या अर्थ है । इसका तात्पर्य है कि यह मनुष्य के रहस्य का भाग है कि वह सदैव अधिक अच्छे आनन्द की आशा रखें । प्रकृति के ऊपर विजय इस कारण है कि उसे अच्छे समय आने की आशा है । वह अन्य जीवों से बिल्कुल भिन्न हैं । क्योंकि उसे अच्छे समय और अधिक सुख की इच्छा है। अपने मस्तिष्क में इसी इच्छा के होने के कारण जो प्राकृतिक हैं और जो उसको स्वस्थ रखती है, मनुष्य बन्दर आदि जीवों के समान जीव व्यतीत नहीं कर रहा है।

अच्छी वस्तुओं के लिये मनुष्य की इच्छा और उसकी सफलता:—

अब हम देखते हैं कि यदि कोई मनुष्य हमसे मनुष्य की परिभाषा पूछें, तो हम पहिले यही कहेंगे कि मनुष्य एक ऐसा

जीव है जो आशा रखता है यदि वही मनुष्य हमसे पूछे कि इस वाक्य मे शब्द आशा से क्या तात्पर्य है, तो हमारा यह उत्तर होगा कि "मनुष्य एक ऐसा जीव है, जो अपने ज्ञान से अच्छी वस्तु की इच्छा रखते हुए अपनी अभिलाषा में सफल होता है"

इन साधारण शब्दों के अपार प्रकाश पर एक क्षण के लिए विचार करो। मनुष्य एक ऐसा जीव है जो आशा रखता है। अर्थात मनुष्य का एक ऐसी वस्तु मे विश्वास है, जिसको उसने देखा तक नहीं है। उसके स्वभाव मे गुप्त उसके हृदय के अदृश्य चमत्कार में लिपटी हुई, उत्तम प्रारब्ध मे श्रद्धा है।

उसने अपने आपको पशु विश्वास करना स्वीकार किया। जब मनुष्य एक असत्य जङ्गली की भांति रहता था तो उसने यह विश्वास करना स्वीकार कर दिया कि वह जीवन व्यतीत करने का सत्य मार्ग था। उसने कभी एक घर भी नहीं देखा था परन्तु उसे अपनी योग्यता में विश्वास था कि वह एक मन्दिर बना सकता है। वह कुत्ते से ज्यादा कभी नहीं दौड़ता था परन्तु उसे अपनी योग्यता मे विश्वास था कि वह घोडे से तेज चल सकेगा। उसने कभी एक पत्थर के टुकड़े को पानी मे तैरते हुऐ नहीं देखा था; परन्तु उसे विश्वास था कि वह एक नदी मे तैर सकता था और एक महासागर पार कर सकता था। उसने कभी वायु यान में उड़ते हुए न देखा था परन्तु उसे अपनी उड़ने की योग्यता में विश्वास था।

मनुष्य की आत्मा ने उसको प्रकृति का स्वामी बना दिया है

मान लो हम एक गायको गौशाला बनाते हुए देखें या एक कुत्ते को एक पुस्तक के पन्ने उलटते हुए या एक बिल्ली को ग्रामोफ़ोन में चाबी भरते हुए या एक घोड़े को एक मोटर का इञ्जिन अध्ययन करते हुए—तो हमें कितना आश्चर्य होगा! परन्तु यह भी उतना ही आश्चर्य होगा! परन्तु यह भी उतना ही आश्चर्य जनक है जितना कि एक मनुष्य ने एक पशु की भांति जीवन व्यतीत करना छोड़ दिया है। मनुष्य एक पशु है और एक समय वह पशु की भांति ही रहता था; परन्तु उसमें देवता के समान हो जाने की योग्यता थी; उसके अन्दर एक ऐसी आत्मा नहीं थी, जिसका स्वभाव पशु की भांति हो; और जब उस आत्मा ने उसे उत्तेजित किया उसने पशु जीवन छोड़ दिया और प्रकृति का स्वामी बन गया।

यदि हम किसी पुरुष को कुछ वस्तु बनाते हुये देखें और उससे पूँछे कि वह क्या बना रहा था और वह हमको उत्तर दे कि "यह एक ऐसा चश्मा है, जिससे हमें अपने पीछे की वस्तुओं को भी देख सकते हैं" तो हम यही कहेंगे कि वह पागल था। केवल पागल पुरुष ही असम्भव कार्यों को करने का प्रयत्न करते हैं। इससे हमें ज्ञात होता है कि प्रत्येक आविष्कार करने वाले का, जिसने मनुष्य के जीवन में हलचल मचा कर एक ऐसी वस्तु बनादी है जो पहिले थी ही नहीं, विश्वास है कि

उसका प्रयत्न सम्भव था। उसने असाधारण कार्य कर दिखाये हैं न कि असम्भव कार्य, यद्यपि अनेक बार मनुष्य को प्रत्यक्ष असम्भव कार्यों में सफलता प्राप्त हुई है। मनुष्य को सदैव यह ज्ञान रहा है कि उसने जिस कार्य के लिए प्रयत्न किया वह सम्भव था। यदि उसे इस चमत्कार में विजय प्राप्ति की कुछ आशा न होती, तो सम्भव था कि मनुष्य प्रकृति पर आक्रमण ही न करता अथवा पशु से उच्च बनने का प्रयत्न ही न करता।

आशा ने ही उसे उत्तेजना दी है। स्वर्ग से उतर कर किसी सुन्दर देवी ने मनुष्य के कान में कुछ कहा नहीं, या उसके हाथ को सही मार्ग नहीं बताया या उसके हृदय मे विचार उत्पन्न नहीं किये। किसी देवदूत ने उसे स्वप्न में दर्शन देकर यह नहीं कहा कि यदि वह ऐसा कार्य करेगा तो वह धनी हो जावेगा और यदि ऐसा कार्य करेगा तो शक्ति शाली हो जावेगा। परन्तु सृष्टि कर्ता द्वारा बोई हुई अपनी आत्मा का अनुसरण करते हुए मनुष्य ने ऐसी गति सञ्चार करदी है जिससे उसकी पशु बुद्धि का नाश हो गया, उसने विपद्‌जनक कार्य करने आरम्भ कर दिए, उसे और इच्छा होने लगा और अन्त में आशा का सहारा लिया इसका कारण केवल यही है कि उसने उत्तम प्रारब्ध में प्रसन्नता पूर्वक विश्वास किया है, उसके लिए उसने आशा की है कि मनुष्य अन्य सब पशुओं से इतना भिन्न है।

जगत में सुखी रहने के लिए हमें सदैव प्रयत्न क्यों करते रहना चाहिये

किसी वैज्ञानिक से पूछो कि क्या वह अब भी प्रकृति के कानूनों को समझने के लिए दिन रात परिश्रम करेगा यदि कोई उसे यह सिद्ध करदे कि प्रकृति एक भ्रम है, कि उसका सम्पूर्ण परिश्रम व्यर्थ है। वह यह उत्तर देगा कि 'यदि मैं इच्छुक न हूँ, तो मैं सुखी ही नहीं रह सकता।" और वह अपना परिश्रमिक अध्ययन बराबर जारी रक्खेगा।

मनुष्य कभी सुखी नहीं है और न कभी होना ही चाहिये, न वह कभी सन्तुष्ट ही होगा। उसका सुख और सन्तोष आशा में ही है, जिसके कारण वह काम करता है प्रयत्न करता है, इच्छा रखता है और प्रार्थना करता है।

कोई भी मनुष्य विजय से इतना आधा भी सन्तुष्ट नहीं हो सकता जितना कि पराजय से बचने के लिए जी तोड़ कर युद्ध। केवल आशा ही पर हृदय का सुख निर्भर है और आशा जब ही हो सकती है जब कि आकाश काला हो।

सम्पूर्ण मनुष्य जाति की अन्तिम और महान आशा

एक व्यापारी, जिसने अमरीका में बहुत सा धन एकत्र कर लिया था, इङ्गलिस्तान में गया और लन्दन के केन्द्र में एक विशाल व्यापार खोला। वह वृद्धावस्था में पदार्पण कर चुका

था। चिन्ता के कारण उसके बाल सफेद पड़ गए थे। उसे काम करने की आवश्यकता न थी। जितना वह चाहता था, उसके पास धन था और अधिक की उसे अभिलाषा भी न थी। फिर भी एक आशाहीन व्यापार में उसने अपना पैसा २ लगा दिया। जब उसका साहस सफल हो गया, तो हमसे मिलने पर उसने कहा कि "खेल समाप्त हो गया और उसका काम अब न चल सकेगा।" वह सुखी नहीं होना चाहता था; उसे एक ऐसी आशा की इच्छा थी जिससे वह सुखी हो सके।

मनुष्य के इतिहास मे एक महान विचारज्ञ ने कहा है कि "जैसे परमेश्वर ने मनुष्य को अपने लिये बनाया, मनुष्य बिना परमेश्वर की प्राप्ति के विश्राम नहीं कर सकता। मनुष्य जाति की यही अन्तिम महान आशा है। इसी आशा ने मनुष्य जाति को पशु से उच्च करने में सबसे अधिक सहायता की है। क्योंकि मनुष्य केवल एक चतुर पशु होता यदि उसके हृदय के अन्दर यह आशा न होती कि वह एक दिन परमात्मा के दर्शन करेगा और उसके मुँह से सृष्टि की महान कथा सुनेगा।

मनुष्य की इस आशा का क्या मूल है? यह क्यों कर है कि हमारे प्राचीन इतिहास में ऐसे महान कवि हुये हैं जिन्होंने परमात्मा की ही इच्छा की है। यह कहना उचित नहीं कि परमात्मा ने मनुष्य को यह आशा दी, कि परमेश्वर की यह इच्छा थी कि मनुष्य न केवल पशु से उच्च रहे किन्तु उसे आत्मा का भी ज्ञान हो। और कि यह केवल परमात्मा के साथ

रहने वाली आत्मा ही है, जहां उसे पूर्णतया सन्तुष्टि हो सकती है।

एक और अच्छे जगत में मनुष्य की प्राकृतिक श्रद्धा

तो इस छोटे से शब्द से हमें ये शिक्षाएँ मिलती हैं:—प्रथम यदि हम शारीरिक सुख चाहते हैं, तो हमको न शोक न चिन्ता करनी चाहिये; द्वितीय यह हमारे स्वभाव का एक अंश है कि हम एक और अच्छे जगत की इच्छा करें और उसमें विश्वास करें, तृतीय, हमारी आत्मा को न सन्तुष्टि और न शान्ति मिल सकती है जब तक कि वह सृष्टिकर्ता के हृदय में निवास स्थान न पाले।

आशा त्याग देने वाला मनुष्य शत्रु के समर्पित हो जाता है और अपने जीवन के साथ छल करता है। यदि वह निराशा से न भरा जाता तो सम्भव था कि वह अन्त में सुखी हो जाता हृदय में आशा रखने से ही हम प्रसन्न रह सकते है। आशा उन्नति के मार्ग का द्वार खोल देती है।

अध्याय चौबीसवां

प्रकृति अथवा स्वभाव

बहुत काल व्यतीत हुआ, जब अधिक पुस्तकें प्राप्त नहीं हो

सकती थी, गर्मी की दोपहरी में एक माता अपने चतुर छोटे से पुत्र के प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयत्न कर रही थी।

क्या प्रत्येक वस्तु परमात्मा ने बनाई है? हां, प्रत्येक वस्तु। क्या, चीते, शेर, बन्दर भी? हाँ, चीते, शेर, बन्दर; इसी ने प्रत्येक वस्तु बनाई हैं। तो, फिर क्या परमात्मा ने मक्खियां भी बनाई हैं? माता तनिक हिचकी, क्यों कि मक्खियों से उसे घृणा थी; जहां तक उससे बन पड़ता था वह इन छोटे २ भयानक जानवरों को नष्ट ही कर देती थी; परन्तु उसकी परमार्थ विद्या दाव पर थी, उसने उत्तर दिया" हां, परमात्मा मक्खियां बनाता है।"

यह लड़के की स्वीकार शक्ति से बाहर था। वह अपने लकड़ी के घोड़े के साथ खेलने के लिए दूसरी ओर चला गया परन्तु चलते समय वह कह ही गया कि "क्या चलता फिरता काम, मक्खियाँ बनाना।"

अब, एक मक्खी भी इतनी विचित्र वस्तु है जितनी कि एक तितली या हिरन। कोई सङ्गतराश एक मक्खी नहीं बना सकता। कोई बड़े से बड़ा वैज्ञानिक भी कभी एक ऐसी चमत्कारिक वस्तु नहीं बना सकता था। फिर भी, लड़के की टिप्पणी ठीक ही थी। सृष्टिकर्ता की महिमा के विचार ने उसे यह विश्वास न होने दिया कि परमात्मा अपने समय का कोई भी भाग मक्खियाँ बनाने में व्यय करता है। अब वह लड़का बढकर एक पुरुष हो गया है और उसे ज्ञात हुआ है

कि उसकी माता ने जो उत्तर दिये थे वे ठीक न थे। वह देखता है कि सृष्टि को देखने का एक नया मार्ग प्राचीन से कहीं अधिक उत्तेजना देने वाला है।

जब डारविन (Darwin) के कार्य के विषय में चार्ल्स किङ्गसले (Charles kingsley) से कहा गया, तो उसने कहा कि "मुझे इसमें कोई विशेष अन्तर नहीं दिखलाई पड़ता कि परमात्मा विश्व को अपने आप बनावे और परमात्मा विश्व को अपने आप बनने दे। उस दिन से हम जगत को पिछले आकार में समझने लगे हैं। हम कहते हैं कि परमात्मा ने पदार्थ में गति का सञ्चार किया, कि इस पदार्थ में परिवर्तन करने का, वृद्धि करने का, और उन्नति करने का पराक्रम थी कि यह पराक्रम अभिप्राय के लिये दूसरा शब्द है और कि पदार्थ के परिवर्तन में, उसके एक आकार से दूसरे में उन्नति में और कुछ अच्छा हो जाने के प्रयत्न में हम परमात्मा की इच्छा पर विचार कर सकते हैं।

तो, यह कहने के स्थान में कि परमात्मा मक्खियां बनाता है या परमात्मा आंधी, मेह या बिजली भेजता है या वह विकास की उन्नति में हमेश अड़चनें पेश करता है, हम इस प्रकार की प्रत्येक वस्तु को प्राकृतिक गुण बतलाते हैं।

बहुत समय व्यतीत हुआ जब मनुष्य प्रकृति को एक देवी समझते थे और उसके उपलक्ष में गीत गाया करते थे, उससे विनती करते थे और उसकी पूजा के लिये बनाई हुई मूर्ति पर

बलिदान करते थे. परन्तु अब हम प्रकृति को एक मनुष्य के आकार में नहीं मानते। इस रहस्यमयी शक्ति के सम्बन्ध में अपना विचार सरल भाषा में प्रगट करना सुगम नहीं है, परन्तु चूंकि यह शब्द प्रकृति विज्ञान और तत्वशास्त्र का एक महान शब्द हो गया है, तो यह उचित है कि हम भी इस शब्द का प्रयोग करते समय का तात्पर्य समझ लें।

परमात्मा का कार्य करने वाला शक्तिशाली यन्त्र

एक प्राचीन लेखक का कहना है किजब हम इस सुन्दर और नियमित जगत को एक घटना का फल समझ कर विश्वास नहीं कर सकते कि परमात्मा का सृष्टि के सँभालने में चमत्कार रूप से सम्बन्ध है। तो यही सही परिणाम निकलता है कि उसके नीचे एक यन्त्र है, जो पदार्थ को नियमित ढंग से गति में करता रहता है।

इस पर विचार करो, और तुम्हें इस यन्त्र का ज्ञान हो जावेगा, यह कानून है। प्रकृति कानून के लिये दूसरा शब्द है। उसका अर्थ है पक्षपाती जन्म। इसका यह तात्पर्य है कि पुरुष स्त्री से उत्पन्न हुआ बच्चा एक शानदार सितार नहीं हो सकता, कि भेड़िया से पैदा हुआ बच्चा ऊंट नहीं हो सकता, कि बड़ का बीज एक गिद्ध नहीं हो सकता।

जब हम प्रकृति के विषय में कुछ कहते हैं तो हमारा तात्पर्य परमात्मा के कानूनों से है। परमात्मा ने पदार्थ को परिवर्तन की योग्यता दे दी और उसको ऐसा ढंग भी बता दिया जिससे

वह अपने आपको परिवर्तन कर सके। एक अङ्गूर के वृक्ष की प्रकृति है अङ्गूर का फल देने की, एक कांटेदार वृक्ष की प्रकृति है कांटे उत्पन्न करने की। प्रत्येक वस्तु की प्रकृति परमात्मा के कार्य सम्पादन करने का एक यन्त्र है।

सम्पूर्ण वस्तुओं में अपना स्वभाव रोकने की शक्ति

परन्तु यहां हम ऐसे विषय पर आते हैं जिसने जगत के इतिहास को इतना तेजोमय बना दिया है। प्रत्येक वस्तु में वह पराक्रम है; जिसके द्वारा वे अपना स्वभाव अपनी प्रकृति को परिवर्तित नहीं होने देती।

यदि परमात्मा ने पक्षपात को जन्म दिया है, जो रुक ही नहीं सकता था, तो प्रत्येक वस्तु दोष हीन होगी। जगत एक मशीन के समान हो जावेगा। उदाहरणार्थ यदि सब लड़के बिल्कुल एक ही चाल से दौड़ें, तो उस दौड़ में कोई उत्तेजना ही नहीं होगी। परन्तु परमात्मा का पक्षपात केवल एक ओर को झुकाव है। जीवन में जन्म लेने वाली अनेक वस्तुएँ लगभग शीघ्र ही समाप्त हो जाती है चूंकि उनकी हार्दिक इच्छा बहुत निर्बल होती है, वे अधिक काल तक नहीं ठहर सकती। जीवों की जाति की जाति ही समाप्त हो गई क्योंकि उन्होंने एक गलत मार्ग का अनुसरण किया। परमात्मा का तात्पर्य ऐसे स्वतन्त्र जीव उत्पन्न करना है, जो सौजन्यता और प्रेम से सम्बन्ध रक्खें न कि दण्ड के भय अथवा पारितोषिक की आशा से किन्तु केवल इसीलिये कि सौजन्यता और प्रेम,

बुराई और घृणा से कहीं अच्छी हैं। प्रकृति मशीन की भांति काम नहीं करती। परमेश्वर का तात्पर्य आत्मिक स्वतन्त्रता है।

बच्चों से बहुधा कहा जाता है कि उन्हें प्राकृतिक अथवा स्वाभाविक होना चाहिये, कि उनमें बनावट की बू भी नहीं आनी चाहिए। परन्तु एक जङ्गली पुरुष दांत साफ करने के ब्रुश (Tooth Brush) को, बाल साफ करने के ब्रुश को प्राकृतिक नहीं कहेगा, वह तो यही कहेगा कि वे बनावटी हैं। फिर भी यदि एक बच्चा बैठक मे बिना कपड़े पहिने, रीछ की भांति बढे हुये बाल लेकर गन्दे दांतों से चला आवे, तो उसके माता-पिता उसकी प्राकृतिक इच्छा का बहाना स्वीकार कदापि न करेंगे।

इससे हमें ज्ञान होता है एक वस्तु जो एक युग के लिए प्राकृतिक है; दूसरे के लिए अप्राकृतिक हो सकती है। वास्तव में प्रकृति में इतने महान और निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं कि हम सृष्टि में किसी समय भी एक वस्तु को देख कर यह कहना सम्भव नहीं था कि "देखो यह प्रकृति है" एक अंग्रेज लेखक का कहना बिल्कुल ठीक है कि "सम्पूर्ण वस्तुएँ बनावटी हैं क्योंकि प्रकृति भी परमात्मा की बनावट है।'

मनुष्य में परमात्मा का कानून उन्नति का कानून है

जब एक मनुष्य शहर छोड़ कर गांव में रहने लगता है, तो वह कहता है "मैं प्रकृति में वापिस जा रहा हूँ।" परन्तु हरि-

याले स्थान, झाड़ियां, बाग और कुटी प्रकृति नहीं है। और यदि वह रेगिस्तान में जाकर रहने लगे, तो वह मूल प्रकृति से और भी दूर हो जावेगा। यदि हम दिन में सूर्य देखें और रात्रि में चन्द्रमा और तारे, तो हमें मूल प्रकृति के दर्शन नहीं होते। सम्पूर्ण वस्तुएँ, जो हम देखते हैं—सूर्य्य, चन्द्र, तारे, पर्वत, सागर, घाटी—करोड़ों वर्ष के परिवर्तन और उन्नति का फल है, जो प्राकृतिक कानूनों के द्वारा होते रहे हैं।

यदि एक लड़का प्राकृतिक होने की इच्छा से एक असभ्य पुरुष की भांति जीवन व्यतीत करे, तो वह मूल प्रकृति की प्राप्ति के लिये यात्रा में दो कदम पीछे हट रहा है; क्योंकि असभ्य मनुष्य स्वयं प्रकृति की एक महान विजय है। परन्तु वह भी अप्राकृतिक ही होगा क्योंकि मनुष्य की प्रकृति है, मनुष्य का स्वभाव है कि वह ज्ञान में, सौजन्यता में, बल में वृद्धि करे—उन्नति करे। मनुष्य में परमात्मा का कानून, अर्थात मनुष्य का स्वभाव उन्नति का, प्रयत्न का और विजय का कानून है। सुन्दर मकान, बाजे, पुस्तक, मूर्तियां और चित्र अप्राकृतिक नहीं है और न वह सूर्य्य या समुद्र से अधिक बनावटी हैं। वे मनुष्य के स्वभाव का संदेश है।

कोई भी मनुष्य यह कहने का विचार नही करता कि एक गुलाब का पुष्प बनावटी है या एक बैलगाड़ी अप्राकृतिक है। परन्तु कुछ सहस्र वर्ष व्यतीत हुए जब ऐसी वस्तुएँ पृथ्वी पर थी। कौन मनुष्य एक सड़क को अप्राकृतिक समझता है और

कौन एक बड़े शहर की सफाई को बनावटी कहता है ? एक मनुष्य के पैरों पर पड़ा हुआ कुत्ता, बच्चे की गोद में एक बिल्ली का बच्चा, गोशाला में बँधी हुई एक गाय, और पिंजड़े में बन्द मुर्गी, एक रेल, Microscope या सितार से अधिक प्राकृतिक नहीं है। ये तमाम वस्तुयें प्राकृतिक कानून का अनुसरण करने का फल है। वे ऐसी हो गई हैं। एक समय वे अज्ञात थी।

आधुनिक मनुष्यों की दृष्टि में प्रकृति की महिमा

आधुनिक मनुष्यों की दृष्टि में प्रकृति की यह महिमा है। वह उसे एक भयंकर क्रमगति के आकार में, एक बहुत विचित्र ढंग के आकार में देखता है। उसकी बुद्धि यह जानने के योग्य है कि एक ऐसा समय था जब वे वस्तुएँ, जो अब दिखलाई पड़ती हैं, थी ही नहीं। उसका ध्यान है कि विश्व अग्नि से भरा हुआ था, जिनसे घूमते २ अनन्त काल के पश्चात सूर्य और नक्षत्र बन गये, फिर उसने उन सूर्यों को सिकुड़ते हुए देखा और उन बड़े नक्षत्रों को ठंडा होते हुए देखा और सम्पूर्ण जगत सृष्टि में नियमपूर्वक घूमने लगा। फिर वह हमारी भयानक पृथ्वी को देखता है—पिघली हुई चट्टाने गुप्त हो रही हैं, हरी झाड़ियां सूर्य के प्रकाश मे चमक रही हैं, कांटेदार झाड़ियों में पुष्प दिखाई दे रहे हैं, वृक्ष की शाखाये शुद्ध वायु में निकल रही हैं, एक विचित्र आकार के जीव उसकी सतह पर घूम रहे हैं। और इसी प्रकार उसकी बुद्धि प्रकृति में अब तक यात्रा कर

रही है। यह सब प्राकृतिक है; प्रत्येक वस्तु का सम्बन्ध इसी क्रमगति से है।

शारीरिक जगत का आगे बढ़ना ही प्रकृति है

विकास के इस विचार से हमें ज्ञात होता है कि प्रकृति के सम्बन्ध में यह कहना गलत है कि वह हमसे बहुत पीछे रह चुकी है। यह कहना भी भ्रम है कि प्रकृति एक ऐसा स्थान है, जहां हमें पहुंचना पड़ेगा यदि हम बनावट से बचना चाहते हैं। ये बातें बुद्धि के विरुद्ध हैं।

प्रकृति के सम्बन्ध मे कहते समय हमें ध्यान रखना चाहिये कि वह निरन्तर क्रमगति है। और इस क्रमगति शब्द का प्रयोग करते समय हमें अपने हृदय से यही कहना चाहिये कि इसका अर्थ केवल "आगे बढ़ना" है। तो शारीरिक जगत का आगे बढ़ना ही प्रकृति है। प्राकृतिक कानून केवल उसके आगे बढ़ने के ढंग हैं। हम वस्तुओं का अध्ययन करते हैं और यह निरूपण करते हैं कि वे अपनी वर्तमान अवस्था को किस प्रकार पहुंची क्यों वे अपनी पूर्व दशा से विचलित हो गये—अर्थात सृष्टि के आगे बढ़ने में वे अपनी वर्तमान दशा को किस प्रकार प्राप्त हो गये और हम अपने हृदय से यही कहते हैं कि इसी प्रकार प्रकृति काम करती है, उसके कानूनों में से यही एक है, कि इसी प्रकार वह आगे जाने का प्रबन्ध करती है।

अन्त में यह ज्ञात करना एक कठिन कार्य नहीं है कि

प्रकृति के सम्बन्ध मे कहते समय इस शब्द से हमारा क्या अर्थ है। हम मे से छोटे से छोटा मनुष्य भी एक स्थान से दूसरे स्थान को चल: का अर्थ समझ सकता है। प्रकृति के विषय में विचार करते समय, हमें सृष्टि को एक यात्रा करते हुए समझना चाहिये, जो समय में होकर आगे बढ़ रही है और उसमें इस प्रकार परिवर्तन हो रहा है जैसे एक पुस्तक के भिन्न २ पृष्ठों में या प्रति वर्ष हमारे अन्दर क्योंकि परिवर्तन होने का हमारा स्वभाव है।

पदार्थ में उन्नति और परिवर्तन होने की शक्ति

एक बात पर हमें विशेष ध्यान देना चाहिये। जगत मे ऐसे मूर्ख पुरुष हैं जिन्होंने यह परिणाम निकाला है कि चूंकि परमात्मा मक्खियां नहीं बनाता, उसके विषय में तनिक भी विचार करना अनावश्यक और व्यर्थ है। उनका विचार है कि प्रकृति के साथ सम्बन्ध करते हुए वे जगत की प्रत्येक वस्तु को समझा सकते हैं। वे इस शब्द का इस प्रकार प्रयोग करते हैं। मानों वह एक मनुष्य हो। तब तो वह पुस्तक को भी कागज और स्याही की उत्पत्ति कह सकते हैं।

परमात्मा ने पदार्थ को परिवर्तन होने की, वृद्धि करने की, मस्तिष्क की उन्नति करने की और बुद्धि पूर्वक विचार करने की योग्यता दी। यह पदार्थ का जन्म था—उसका स्वभाव था। परमात्मा न तो इस क्रमगति में अड़चन डालता है— न उससे पृथक ही होता है। उसका अनुभव उस क्रम गति में उसकी

प्रकृति से किया जा सकता है। इस क्रमगति से उत्पन्न हुये उत्कृष्ट जीव यह बतलाते हैं कि मनुष्य का स्वभाव सौजन्यता से प्रेम करना, ज्ञान की खोज करना, शक्ति का उपयोग करना है।

कुछ मनुष्य इस क्रमगति का अनुसरण करने से अस्वीका कर देते हैं। वे दुष्ट हो जाते हैं, वे अज्ञान रहते हैं, वे बु आदतों के दास होकर मृत्यु की भेंट हो जाते हैं। परन्तु उस सत्य स्वभाव को अनुसरण करने वाले अपने आप में सौजन्यत ज्ञान और शक्ति की वृद्धि का अनुभव प्रतीत करते है। उन सुख ही प्रकट करता है कि वे प्रकृति के मार्ग का अनुसर कर रहे हैं। वे समझते हैं कि प्रकृति के निर्माता का क्य ध्येय है।